SPS
294.5 M 26 I
6590

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6590.
Price Rs. /4/
Title اندر سبھا امانت
Gl. No.
338 H
(…)ANBIR LIBRARY
No. 3129
JAMMOO

इन्द्रसभा अमानत

और

मदारी लालकी

Author مداری لال

अति फारसी अक्षर की शुद्धता और स्वच्छता पूर्व्वक से बनाई गई

यह कहानी संगीत समान हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध और सारे संसार के मनुष्यों को अति प्रिय है पारसी क़ौम के नाच घरों में इस कहानी को जिसने देखा अथवा सुना होगा वह कह सक्ता है कि कैसी मनोरञ्जन है परन्तु जो विचारांश ज्ञान में नहीं समा सके उन से भरी हुई है लेकिन समझदारों के लिये उपयोगी और उपकारक है

आज कल शहर जयपुर के नाटक घर में जो श्री १०८ श्री मन्महाराजाधिराज श्री रामसिंह वीरेश जयपुर मण्डलेश्वर की ध्यानदृष्टि से शिक्षाओं और सुलक्षणता सीखने के लिये उस्तादी का द्वारा भरत खण्डीय मण्डलेश्वरों व अमीरों के लिये नमूना शायस्तगी का पैदा किया है

आशा है कि

नाटक घरों के दिल बहलाने वालों के लिये हिन्दुस्तानी ख़यालातों के द्वारा से अधिकतर पसन्द हों

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापखाने में छापी गई
अप्रैल सन् १८८०ई०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri
NKP pub
No: 3

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८० ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैयार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआ है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर कीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष	जगद्विनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्तचन्द्रिका	औषधिसङ्ग्रह कल्पवल्ली	श्रीमद्भागवत सटीक
लघुकौमुदी	निघण्टु भाषा	जल झूलन
मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी	वैद्यदर्पण	हनुमान बाहुक
शीघ्रबोध	रामविनोद	सुखसागर
पाराशरी सटीक	**कोष और इतिहास।**	ब्रह्मसार
मुहूर्त्तगणपति	शिवसिंहसरोज	परमार्थसार
सङ्कट शिरोमणि	सामुद्रिक	प्रेमसागर
जातकचन्द्रिका	गणितकामधेनु	सूरसागर
लघुजातक भाषाटीका सहित	कमीशन बड़ोदा	राग प्रकाश
भाषा जातकालङ्कार	शब्दार्थकोष	भक्तमाल
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष प्रथम काण्ड	अवधयात्रा
जातकाभरण	अमरकोष तीनों काण्ड भा-	कथा गङ्गाजी
मुहूर्त्तदीपक	षाटीका सहित	रामायण टेपकी
होरामकरन्द	अनेकार्थकोष	रामायण जिल्द बन्धी
मुहूर्त्तचिन्तामणि	ब्रजविलास	रामायण तुलसीकृत प-छा-
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृत सटीक
वैद्यक	दुर्गापाठ मूल	सतसई रामायण
शार्ङ्गधर	अपराधभञ्जन स्तोत्र	कवितावली रामायण
वैद्यजीवन	महिम्नस्तोत्र	गीतावली रामायण
वैद्यमनोत्सव	श्रीगोपाल सहस्रनाम	रामायण दोहावली
अमृतसागर	शिवार्चन	सुन्दरी चरित्र
अमृतसागर बड़ा	गङ्गालहरी	रामायण नाना छन्दों सङ्ग-
[illegible] विनोद	[illegible]	हावली

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री गणेशायनमः

सभा में दोस्तो इन्दर की आमद आमद है। परी जमालों के अफ़सर की आमद २ है
ख़ुशी से चह चहे लाज़िम है सूरते बुलबुल। अब इस चमन् में गुले तर की आमद २ है
फ़रोगे हुस्न से आंखों को अब करो रौशन्। ज़मी पे मेहर मुनव्वर की आमद २ है॥
दुज़ानू बैठो क़रीने के साथ महिफ़िल में। परी के देव के लश्कर की आमद आमद है
ज़मीं पै आयेंगी राजा के साथ सब परियां। सितारों के मेह अनवर की आमद २ है॥
ग़ज़ब का गाना है और नाच है क़यामत का। बहारे फ़ितनए महशर की आमद २ है।
बयां में राजा की आमद का क्या करूं उस्ताद। जिगर की जान की दिलबर की आमद २ है

चौबोला अपने हस्ब हाल ज़बानी राजा इन्दर के

राजा हूं मैं क़ौम का और इन्दर मेरा नाम। बिन परियों की दीद के मुझे नहीं आराम।
सुनो रे मेरे देव रे दिल को नहीं क़रार। जल्दी मेरे वास्ते सभा करो तैयार॥ ५॥
तख़्त बिछाओ जगमगा जल्दी से इस आन। मुझ को सब् गर बैठना महिफ़िल के दरम्यान
मेरा सिंगल दीप में मुल्कों मुल्कों राज। ०। जो मेरा है चाहता जलसा देखूं आज। ।
लाओ परियों को अभी जल्दी जाकर हां। बारी बारी आनकर मुजरा करें यहां।

आमद पुखराज परी की बीच सभा के

महिफ़िले राजा में पुखराज परी आती है। सारे माशूक़ों की सिरताज परी आती है॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिस्का सय्या न कभी ख़ाब में देखा होगा । आदमीज़ादों में वह आज परी आती है ।
दौलते हुस्न से होजायगा आलम मामूर । करने इस बज़्म में अब राज परी आती है ।
रंग होज़र्द हसीनों का न क्यों कर उस्ताद । गुल है महिफ़िल में कि पुखराज परी आती है

ग़ैर ख़्वानी अपने हस्ब हाल ज़बानी पुखराज परी के

गाती हुं मैं और नाच सदा काम है मेरा । आफ़ाक में पुखराज परी नाम है मेरा ।
फंदे से मेरे कोई निकलने नहीं पाता । इस गुलशने आलम में बिछा दाम है मेरा
मैं लाख की हो लाख की परवा नहीं रखती । क़ारूं का ख़ज़ाना अजी इनआम है मेरा ।
कहिते हैं जहां में जिसे इनसान गुलो सम्बुल । वह रुख़ है वह गेसूए सियह फ़ाम है मेरा
बदमस्त मुझे देख के होती है खुदाई । मामूर मये हुस्न से क्या जाम है मेरा ।
करती हूं दिलो जान से रांजा की परस्तिश । कहिते हैं जिसे कुफ़्र वह इस्लाम है मेरा
अल्लाह ने दरजा है मुझे रुतबये आली । गरदूं जिसे सब कहिते हैं वह बाम है मेरा
इन्सां की पराराससे मेरा बस नहीं चलता । दिल लेके मुकर जाना सदा काम है मेरा ।
उस्ताद को देती हूं दुआयें दिलो जां से । ये काम जहां में सहर व शाम है मेरा ॥

छन्द ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के ॥

राजा इन्दर देस में रहें इलाही शाद । जो मुझ से ना चीज़ को किया अब सरफ़राज़
किया सभा में याद मुझे राजा ने आज । दौलत माल ख़ज़ाने की चकबहूं मैं ह ताज
हीरा अपना चाहिये तख़्त न मुझको ताज़ । जगत में बात उस्ताद की बनी रहे महराज

ठुमरी ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के ॥

आती हुं सभा में छोड़ के घर ॥ ॥ । काहू की न हीं मोहिं आज ख़बर ॥ ॥ ।
चेरी हूं तेरी राजा इन्दर ॥ ॥ ॥ । रखना दिन रैन दया की नज़र ॥ ॥ ।
सोने का बिराजे सीस मुकट ॥ ॥ । रूपे के तख़्त पर बैठे निडर ॥ ॥ ।
चारों कोनों पर लाल लुटें ॥ ॥ ॥ । दाता का करम रहे आठ पहर ॥ ॥ ।
साया रहे पीरव पयम्बर का ॥ ॥ ॥ । मौला की सदा रहे नेक नज़र ॥ ॥ ।
उस्ताद कहो हमसे हर दम ॥ ॥ ॥ । दुनिया में रहें हज़रत अख़्तर ॥ ॥ ।

बसन्त ज़बानी पुखराज परी के बीच धुन बहार के फस्ल बहार में

रुतु आई बसन्त अजब बहार ॥ । खिले ज़रद फूल बिरवन की डार ॥ ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चिट की कुसुम फूले लागी सरसों + । फवकत चलत गेहुन की बार + + ।
हर के दुआरे माली का छोहरा + + । गरवा डारत गेंदन के हार + + +
टेसू फूले अम्बा बौराने + + । चम्पा के खुबकलियन की बार +
गडुवा लिये उस्ताद के द्वार + + । चलो सब सखियाँ कर कर सिंगार ।

ग़ज़ल बसन्त ज़बानी पुखराज परी के फ़स्ल बहार में

है जलवये नग़्से दर्दीवार बसन्ती + । पोशाक जो पहिने है मेरा यार बसन्ती ।
क्या फ़स्ल बहारीने शिगूफ़े हैं खिलाये । माशूक़ हैं फिरते सरे बाज़ार बसन्ती ।
गेंदा खिला है बाग़ में मैदान में सरसों । सहरा वह बसन्ती है यह गुलज़ार बसन्ती ।
मस्त मल का नई ऋतु में दिला ज़र्द नहीं म्यान । पहिने है क़बा यार की तलवार बसन्ती ।
हूं ग़म से ये मैं ज़र्द जो तू क़त्ल करेगा + । खून निकलेगा अय क़ातिल खूंख्वार बसन्ती
उस रश्क मसीहा का जो हो जाय इशारा + । आँखों से बने नरगिसे बीमार बसन्ती ॥
ग़म खाके मुआ हूं मैं किसी ज़र्द क़बा पर । है क़बर की चादर मुझे दरकार बसन्ती ।
गेंदों के दरख़्तों में हुमायां नहीं गेंदे + । हर शाख़ के सर पर है दस्तार बसन्ती ।
मुंह ज़र्द दुपट्टे के न अंचल से छिपाओ । हो जाइये न रंग गुले रुख़्सार बसन्ती ।
ऋतु फिर गई आलम की चली बाद बहारी । मै ख़ाने को सज जाते हैं मैख़ार बसन्ती
रंजूर एक तो था मेरा क्या ज़र्द क़बा ने + । तुर्रह हुई उस पर तेरी दस्तार बसन्ती ।
खुलती है मेरे आंख पे हर रंग की पोशाक । ऊदी अगरई चम्पई सुर्ख़ मार बसन्ती ।
है शुक्र हसीनों की बद रंगी का अमानत । दो चार गुलाबी हों तो हो चार बसन्ती ।

होली ज़बानी पुखराज परी के

पां लागें कर जोरी ५ ५ ५ ५ । स्याम मोसे खेलो न होरी ५ ५ ।
गोवें चरावन मैं निकसी हूं ५ ५ । सास ननद की चोरी ५ ५ ५ ।
सगरी चुनरिया रंग में न भिजोओ । इतनी सुनो बात मोरी ५ ५ ५ ।
स्याम मोसे खेलो न होरी ॥
छीन झपट मोरे हाथ से गागर ५ । ज़ोर से बहियाँ मरोरी ५ ५ ५ ५ ५ ।
दिल धरकत है सांस चढ़त है ५ ५ । देह तपत गोरी गोरी ५ ५ ५
स्याम मोसे खेलो न होरी
अबिर गुलाल लपट गयो मुख मा ५ । सारी रंग में बोरी ५ ५ +

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सास हज़ारन गारी देगी ऽ ऽ ऽ। बालम जीता न छोरी ऽ ऽ ऽ।
स्याम मोसे खेलो न होरी
फाग खेल के तुम मेरे मोहन ऽ। का गत कीन्ही मोरी ऽ ऽ ऽ।
सखियन में उस्ताद के आगे ऽ ऽ। हुई हूं थोरी थोरी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।
स्याम मोसे खेलो न होरी

ग़ज़ल ज़बानी पुखराज परी के बीच सभा के

वेदाद मुझे याद है वल्लाह तुम्हारी। ऽ। यूसुफ़ की क़सम अलन करूं चाह तुम्हारी
लिल्लाह क़दम शर्म के कूचे से निकालो। बाज़ार में हम देखते हैं राह तुम्हारी।
आशक़ की मुराद आबेरफ़ी कोंको अलम है। जाये जो सवारी कभी दरगाह तुम्हारी।
वह बुत मेरे पास आयेगा किसतरह यक़ीन हो। झूठी है क़सम दोस्तो वल्लाह तुम्हारी।।
होता है ज़मी पर उसे ख़ुरशैद का धोखा। सूरत जो कभी देखता है माह तुम्हारी।
बुत बनगये महिफ़िल में रक़ीबों से न बोलो क्या बात है ख़ालक़ की क़सम वाह तुम्हारी
बोसे जो तलब मैंने किये हंस के वो बोले। सरकार से मौक़ूफ़ है तनख़ाह तुम्हारी।
लहराके कभी जाते हैं दरिया कभी तालाब। क्या हमको भकाती हैं कुएं में चाह तुम्हारी
है इश्क़ का दरिया व सरे जोश अमानत। आलम में रखे आबरू अल्लाह तुम्हारी

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी पुखराज परी के

टकराके सर को जान न दूं मैं तो क्या करूं। कबतक ग़मे फ़िराक़ के सदमें सहा करूं।
अन्धेर है लगाऊं जो उसशम्मः रूसे लौ। परवाने गैरपर वह रहे मैं जला करूं।
मैं चाहता हूं सुन अपत सीने पे हूं निसार। बुत को बिठाके सामने यादे ख़ुदा करूं।
हर चंद चाहता हूं कि बोलूं न यार से। क़ाबू में अपने दिलको न पाऊं तो क्या करूं
अय बुत तेरे सिवा नहीं कोई नेन की हसब। अल्लाह से करूं तो तेरी इल्तिजा करूं।
इन्साफ़ हो बुतों से न मेरा जो हाथों हाथ। आगे ख़ुदा के हशर में महशर बपा करूं
मैं मरगया तो रोके यह कहने लगा वह शोख़। किसको सुनाऊं गालियां किसपर जफ़ा करूं
ग़मज़े से आगई मुझे इक आन में क़ज़ा। ये शुक्र तेरे नाज़ का क्यों कर अदा करूं।
ऐसे मज़े उठाये हैं आज़ार इश्क़ में। ऽ। आये मसीह भी तो न अपनी दवा करूं।
कूंचे में उसके बैठ के दिल है यह चाहता। जौक़ात यां बसर सिफ़ते नक़्श पा करूं।
वह बुत अदा से सामने आकर जो बैठ जाय। काबे में भी नमाज़ को अपनी क़ज़ा करूं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लूं बोसा ज़ुल्फ़ का तो दिखाये गला अजल । फांसी मिले मुझे जो खतन में खता करूं ।
ले इश्क़ कुछ जहां में नहीं ज़ीस्त का मज़ा । दिल यार को न दूं मैं अमानत तो क्या करूं ।

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी पुखराज परी के

रफ़्तार के चलन से ग़ज़ब दिल लुभा लिये । छोटे से सिन में यार बड़े तुम हो चालिये ।
बोसा जो मांगा चश्म का क्या क़हर हो गया । मुरूवत न रैन बज़्म में आंखें निकालिये ॥
जाने न दूंगा आप को सुनने का मैं नहीं । बातें बना के वस्ल का दरम्यान टालिये ॥
इक बोसे पर ये गालियां अल्लाह की पनाह । कुछ मैं भी अब कहूंगा नहीं मुंह संभालिये ।
हम गुज़रा मैं मिलाप से हरिये कहां का प्यार । फैला के पांउ हाथ गले में न डालिये । * ।
नि क़ाबह रुख साफ़ का मंज़ूर है हमें । * । दिखला के ज़ुल्फ़ को न हिला सिर के टालिये
आशिक़ को ज़हर देने को मिस्सी की है डली । इस तरह की न बात ज़बां से निकालिये । * ।
नामहरमों की आंख न अंगिया पै जा पड़े । सीना खुला हुआ है दुपट्टा संभालिये । * ।
ख़ुश चश्म सब जहां के अमानत हैं बे वफ़ा । जी चाहता है आंख किसी पर न डालिये ।

दरख़ास्त नीलम परी की ज़बानी राजा इन्दर के

खूब दिखाया नाच के गाके * * * । पहलू में मेरे अब तो बैठ आके * ।
खुश हुई तुझ से महफ़िल सारी * । अब है नीलम परी की बारी * * ।

आमद नीलम परी की बीच सभा के

सभा में आमद नीलम परी है * * । सरासर वह नज़ाकत से भरी है * * ।
सितारों की झपक जाती हैं आंखें * । वह उसके बर में मलबूस ज़री है * * ।
ग़ज़ब गाना है और उसका चमकना * । कभी ज़ोहरह कभी वह मुश्तरी है * ।
मिज़ाज उस का सेन को नीली हो सोसन * । किना फ़लक से उसको हमसरी है * * ।

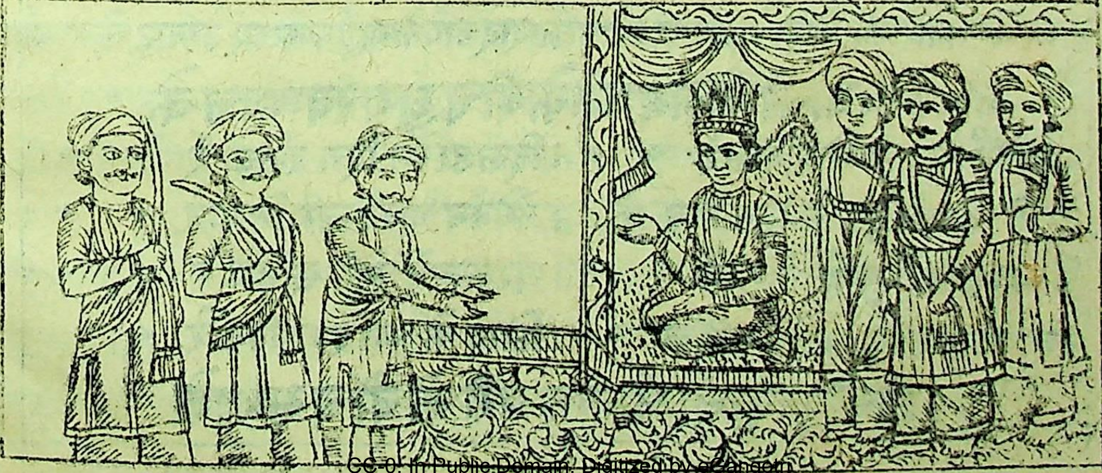

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न देखा होगा नाच ऐसा किसीने ❖ । चलाहै सेहर है जादू गरी है ❖ ❖ ।
तमाम उड़के हैं आला फ़ीलथे पर ❖ । शरारत कूट कर उसमें भरी है ❖ ❖ ।
ज़मीं पर वह परी आती है उस्ताद ❖ । जवाहिर से जो रंगल में खरी है ❖ ❖ ।

ग़ैर ज़ानी ग़ज़ल ज़ाहिर अपने ज़बानी नीलम परी के सभा में ।

हूरों के होश उड़ते हैं जोबन की शान पर । नीलम परी है नाम मेरा आसमान पर
अल्लाह के करम से ज़माने में है ज़हूर । झुकता है सर फ़लक के मेरी आस्तान पर
इन्साँ की क्या है अस्ल कि पुतली है ख़ाक का । जिन खेल जाते हैं मेरी उल्फ़त में जान पर ।
नीलम को चूम चाट के आँखों पै रखते हैं । मोहर रहे हैं मेरा जौहरियों की दूकान पर ।
उड़ते नहीं हैं मेरी नज़ाकत पै किसके होश । रखते हैं फूल हाथ गुलिस्ताँ में कान पर ।
करता नहीं है कौन मुहब्बत का हक़ अदा । देते हैं देव जान मेरी आन बान पर ❖ ।
मिस्सी कि तरह बाग़ में जलता है उसका रंग । सोसन जो ज़िक्र लाती है मेरा ज़बान पर ।
ज़ोहरा मेरे ख़याल में धुनती है सर सदा । मरते हैं तान सेन सताये की तान पर ।
उस्ताद ने ज़मी पै बुलाकर दिया है नाम । क्यों कर रहे न मेरा दिमाग़ आसमान पर ।

॥ छन्द ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

मैं चेरी सरकार की तुम राजों के राज । गाना शुरु मञ्ज़मूल का सुनो ग़ौर से आज
सुनो ग़ौर से आज मेरा राजा जी गाना । नाच छल बल देख के देखो बतलाना ।
हुआ है मेरा नबहूस महफ़िल में आना । जब से सारा देश बिदेश उस्ताद ने छाना ।

छन्द दूसरा ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

आई हूँ मैं दूर से करके तुम को याद । मुजरा मेरा देख कर करो मेरा दिल शाद ।
करो मेरा दिल शाद कि मैं दिल खोल के गाऊँ । गाके नाच के आज हुनर अपना दिखलाऊँ
हुनर दिखाकर महफ़िल में दाद अपनी पाऊँ । दाद अपनी यहाँ पाकर घर उस्ताद के जाऊँ

ठुमरी ज़बानी नीलम परी के बीच धुम खम्माच के

राजा जी करो मोसे बतियाँ रे ❖ ❖ । दिल डरपत दिन रतियाँ रे ❖ ❖
हमरी ओर से तुम से दिन दिन ❖ । सौतन जाकी लगनियाँ रे ❖ ❖ ।
जियरा डरत है तुम्हरे रोस से ❖ ❖ । धरकत हैं मेरी छतियाँ रे ❖ ❖
दरसन उस्ताद का चहिये मोहि का ❖ । लिख के पठा देउ पतियाँ रे ❖ ❖

होली ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कान्हा को समझावत न कोई + + । अंगिया रंग में भिजोई + + + ।
मेरी ब्रज में पत खोई
आज सखी हम घर मा जाके + + । पीन की जान को रोई + + + ।
अबीर गुलाल छुड़ावन खातिर + + । मुंह अंसुअन से धोई + + + ।
बदन माटी में मिलोई
गरवा लगाओ पिराय के मोहिका + + मुंह पकड़ा जब रोई + + + + ।
इज्जत लीनी गारी दीनी + + + + । हमहूं जान को खोई + + + ।
सखी विष खाई के सोई
बैठ बैठ ब्रज के लोगन में + + + । कबरे का विस बोई + + + ।
या जो खबर उल्लाद ने पाई + + + । घर हम हाथ से खोई + + + ।
निकस कर जोगन होई

ग़ज़ल ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

रश्क का खञ्जर लगा है दिलपे कारी इन दिनों। ज़ख्म की सूरत हैं यूं आंखें मेरी जारी इन दिनों
बाग़ में जाती है उस गुल की सवारी इन दिनों । इस जुस्तजू में फिरती है बादे बहारी इन दिनों ।
देके क़स्में कूचये क़ातिल में ले जाता है दिल। दुश्मन अपना कर रखा है दोस्तदारी इन दिनों ।
भोली सूरत पर दिल नड़फा जाता है सनम। क्या ही सूरत हो गई है प्यारी प्यारी इन दिनों ।
मुद्दतों हमने निकाला वस्ल में दिल का बुखार। फुरक़ते दिलदार में है तपकी बारी इन दिनों ।
इश्क के आज़ार ने लागर किया है इस क़दर। शक्ल भी पहिचानी नहीं जाती हमारी इन दिनों ।
क़त्ल करता है अरक़ आलूद हो अबरू खलक़ को। क्या तेरी तलवार पर है आबदारी इन दिनों
सर उठाया है जिन्हें इश्क़ जुल्फे यार में + । पांओं को दरकार है जञ्जीर भारी इन दिनों ।
राज़ जाकर गाओं में आशिक़ बयां करते हैं हाल। छेड़िये लिखा हुआ पर्दे में सितारे इन दिनों
पलकें झपकाने का क़ातिल को दुवा दे नाज़ शोक। चल रही है दिल पे आशिक़ की कटारी इन दिनों
ठंढी सांसें भरते हो हरदम अमानत किस लिये। जान जाती है कहो किस पर तुम्हारी इन दिनों

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी नीलम परी के बीच सभा के

दिल मेरा मेरे चमन से न हुआ शाद कभी। ले गया बाग़ में भूले से न सय्याद कभी ।
ज़िन्दह जब तक हैं हम ऐ जां जफ़ायें कर लो। फिर सहेगा न तुम्हारी कोई बेदाद कभी ।
तोड़ता बेड़ियां दोहरी न कभी वहशत में । मानता काहे को लोहा मेरा हद्दाद कभी ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सर झुका जाता है उठते नहीं महफ़िल से क़दम । हाथ सुरू पर भी कोई छोड़दे ज़ल्लाद कभी * ।
सिनम ईजाद तुझे हमने बनाया जानी * । इस तरह दिल से सिनम होते थे ईजाद कभी ।
तुम तरह खुशक़द हो रविश पर जो ज़रा तनके चलो । सर उठाइये न चमन में कोई शमशाद कभी * ।
न लगाया लबे गुलरंग से मैनाय शराब * । हमसे शीशे में न उतरा वह परीज़ाद कभी ।
दिलको था आलम तिफ़ली में ये शौके सहरा । न किया मैंने गुलिस्ताँ का सबक़ याद कभी ।
लैलिये ज़ुल्फ़ का सौदा लबे शीरीं की है चाह । कभी मजनूँ हूं मैं तेरे इश्क़ में फ़रहाद कभी ।
सूरते नक़्श क़दम हमने गुज़ारी औक़ात । मिट गये साफ़ कभी होगये बरबाद कभी ।
होगा तब जाल में बुलबुल का फ़साना मालूम । आयेगा मौत के फंदे में जो सैय्याद कभी
बुलबुलों किस्को दिखाती हो उरूजे परवाज़ । हम भी इस बाग़ में थे क़ैद से आज़ाद कभी ।
है क़यामत बुते बेशर्म बेहया की बातें । * कभी कहिता है अमानत मुझे जल्लाद कभी

ग़ज़ल तीसरी ज़बानी नीलम परी के

मज़ह विसाले सनम का उठायेगा फ़िर क्या । डरा जो हिज्र से वह दिल लगायेगा फ़िर क्या ।
किसी की ज़ुल्फ़ को जानिब जो खिंचरहा है दिल । बलाय नाज़ह मेरे दिल पे लायेगा फ़िर क्या ।
घुलाये गा मेरी यों हड्डियां मेरे सनम । * । पसे फ़नासे यार आके खायेगा फ़िर क्या
इलाही ख़ैर हो फिर जोश पर है दीदये तर । किसी के इश्क़ का तूफ़ां उठायेगा फ़िर क्या
इलाही ख़ैर फड़कती है आँख क्यों बाईं । ग़ज़ब से वह मुझे तेवर दिखायेगा फ़िर क्या ।
जफ़ा को जो ग़नीमत गिला सिनम का न कर । बिगड़के यार से अय दिल बनायेगा फ़िर क्या
छिपाया ज़ीस्त में जिसने न मुँह अमानत को । पसे विसाल वह तुरबत पर आयेगा फ़िर क्या

फ़िकरे लाल परी के दरख़ास्त में ज़बानी राजाइन्दर के

दिखा चुकी तू करतब सारी * * । पहलू में अब बैठ हमारी * * ।
लिया सभा में तूने नाम * * * । अब है लाल परी का काम * * ।

लाओ लाल परी को

आमद लाल परी की बीच सभा के

सभा में लाल परी की सवारी आती है । ज़माने रंग बदलने की बारी आती है ।
शफ़क़ में आयेगा झुरमुट नज़र सितारों का । पहन के सुर्ख़ वह पोशाक भारी आती है
हसीन बज़्म की शादी से खिलपड़ेंगे तमाम । गुलों के वास्ते बादे बहारी आती है * ।
निगाह उसकी छुरी से सिवा नुकीली है । लगाने सब के दिलों पर कटारी आती है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रिवैया लाल का तब्ज़ सभा में अय यारो ॥ निहाल हो कि मुराद अब तुम्हारी आती है ॥
दुपट्टे सब के बिजली गिरेगी बिजली पर ॥ किनारों पर वह लगाकर किनारी आती है ॥
मैं किस ज़बां से कहूं उसकी खूबियां उस्ताद ॥ बहारे नाज़ह की महफ़िल में वारी आती है ॥

गैरवहानी ज़बानी लाल परी के बीच सभा के

हुस्नों का काम हुस्न पे मेरे तमाम है ॥ जोड़ा है सुर्ख लाल परी मेरा नाम है ॥
याकूत लब खरीद है सरकार का मेरे । नौकर अक़ीक़ लाल बदख्शां गुलाम है
आशक़ को क़त्ल करती हूं अबरू की तेग़ से । दिन रात खू़न बहाने से काम है
पोशाक मेरी सुर्ख है मुखड़ा है चांद सा ॥ देखो शफ़क़ में उसको यह हे तमाम है ॥
मोती पे मेरे होते हैं सुर्ग़ी चमन फ़िदा है । हसनुल की ज़ीनत जहां में हरम है ।
निर्वाह सुख़ से होना है हरदम जो हूं बस् । कातना लहू लगा के शीशों में नाम है ।
उस्ताद अंजुमन में रहे सुर्ख रू सदा । अल्लाह से दुआये ये सुबह शाम है ।

कुन्द ज़बानी लाल परी के बीच सभा के

बैठी थी मैं क़ाफ़ में जोड़ा पहिने लाल । यहां बुलाकर आपने बड़ा दिया इक़बाल
बढ़ा दिया इक़बाल कियां सुर को बुलवाया । समा सभा का आज बहुत दिवाद दिखाया
हुआ सफल सुभाउ सब मेरे दिल की आया । रहे सदा उस्ताद पै यों करतार की छाया ।

ठुमरी ज़बानी लाल परी के बीच धुन देस के

मोरे जोबन में लाल जड़े ॥ बहुत सहो ओ महाराजा रे ॥
कोऊ मूंगा कोऊ चुन्नी कहत है ॥ परखन वालों पर गाज परे ॥
बहुत रहे ओ महाराजा रे
छतियां मोरी मख़मल की खुल रंग ॥ जैसे अंगिया में कोले घरे ॥
बहुत रखे ओ महाराजा रे
कोऊ मोरे लालों लाल जोबन की । उस्ताद से ख़बर करे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बहुत रवो ओमहाराजारे

सावन ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में

पिया बिन घटा नहीं भावे

रह रह दिल रूँधो आवे + + + । बिजली की चमक नड़ पावे डरावे + ।

पिया बिन घटा नहीं भावे

अन्तरह

ऋतु वर्षा की आई री गुँइयाँ + + । आज पिया को कल नहीं आवे + ।

मोरी ओर से या दिन सजनी + + । कोऊ उसको समझावे जावे + + + ।

पिया बिन घटा नहीं भावे

कासे कहूं इस मेह बूंद सों + + । लिख पतिया जो पठावे + + + +

पीतम को कोऊ मरी वर्षा में + + । इई मारे से मिलावे लावे + + + ।

बिन पिया घटा नहीं भावे

उमड़ घुमड़ के कारी बदरिया + + । मोहिं नाहक क्यु सतावे + + + ।

कोऊ पवन पुरवाई ऐसा कहे + + । और मुलक बरसावे + + + ।

बिन पिया घटा नहीं भावे

भीजन हूं अंसुवन के बूंदन + + । मेघा झर न लगावे + + + + ।

पीर उस्ताद के नाम के अपने + + । बिन परवल पर जावे जावे + + +

बिन पिया घटा नहीं भावे

ग़ज़ल सावन की ज़बानी लाल परी के सावन की फ़स्ल में।

दिल के रंजूर है ठंडी जो हवा सावन की। मांगता हूं मैं सदा हक़ दुआ सावन की

याद आती है वह सब्ज़ा वह घटा सावन की। शक्ल दिखलाये फिर अब जल्द खुदा सावन की

च[illegible]या जब कि फ़लक पर मेरे आहों का धुआं। गिर गई ख़ल्क़ की नज़रों से घटा सावन की

[illegible]ये आंखों से किस रश्क के बरसता है लहू। यार हाथों में लगाता है हिना सावन की।

ज़ुल्फ़ जानां के क़रीं यों है दुपट्टा ऊदा। शबे तारीक में जिस तरह घटा सावन की।

[illegible] कस्ल हिज़ा नहीं थमती है झड़ी अश्कों की। लग गई क्या मेरी आंखों को हवा सावन की

[illegible] भागा हुआ जाता है खुदा खैर करे। आज बदली नज़र आती है हवा सावन की

[illegible] दमे गिरिया तसव्वुर न सुके ज़ुल्फ़ का हो। राम होती है सिया ही में बला सावन की।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोती कानों में नहीं यार की जुल्फों के क़रीब । हाले भादों के वह हैं और ये घटा सावन की
अय अमानत ये निकाली है ज़मीं तूने नई । पहिले थी किस्की ग़ज़ल तेरे सिवा सावन की

होली ज़बानी लाल परी के बीच धुन सिन्ध काफ़ी के होली की फ़स्ल में

लाज रख ले श्याम हमारी * * । मैं चेरी हूं तिहारी * * * *

ज़रा दे समझ कर गारी

अन्तरह ॥

अबीर गुलाल न मुख पर डारो * * । ना भरो पिचकारी * * * ।
भाभी देहै सब देख पडेगी * * । सारी भिजो खोज सारी * * ।

कहेंगे लोग मतवारी

तुम चातुर हो गये खिलैया * * । हम डरपोंक अनारी * * * ।
नाक झाक लगा मत मोहन * * । जाऊं तोरी बलिहारी * * * ।

न कर मोहिं जान से भारी

लाख कही तुम एक न मानी * * । मिनती करके हारी * * * ।
याही घरी उस्ताद से जाकर * * । कहि हों हकीकत सारी * * ।

कहाँ जाओगे गिरधारी

ग़ज़ल ज़बानी लाल परी के बीच धुन देस के ॥

ख़याल आता है दिल्को शिकवये बेदार क्या कीजे । ख़ुदा से ऐ बुते काफ़िर मैं फ़रयाद क्या कीजे
बहार आई है गुलशन् में घुरा जाता है सब अपना । क़फ़स के दरको वां करता जो सैयाद क्या कीजे
अबस करता है तू हमसे ख़याले यार का शिकवा । जो भूले आपको ऐ दिल उसे फिर याद क्या कीजे
मुक़ाबिल सर्व को पाकर गुलिस्तां में वो गुल बोला । गुलाम अपना जो हो दिल से उसे आज़ाद क्या कीजे
किसी महबूब का बूटा सा क़द आंखों में फिरता है । चमन् में देखकर ऐ दिल सुये शमशाद क्या कीजे
जुनू का जोश खोता है रगों को छूके नश्तर से । न तुरू को गालियां दीजे तो अय फ़स्साद क्या कीजे
लहू बहता है गैरों का हमारा दम निकलता है । गले पर फेरता ख़ञ्जर नहीं जल्लाद क्या कीजे ।
हमारी क़ब्र को रोकर लगाकर यार कहता है । मिला हो ख़ाक में जो ख़ुद उसे बरबाद क्या कीजे ।
अमानत कोह पर पहुंचा तो यों फ़रहाद चिल्लाया । लबों पर जान शीरीं है अबस उस्ताद क्या कीजे

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी लाल परी के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरे फ़ुर्क़त में नालों ने जहां सर पर उठाया है । ज़मीं को ज़लज़ला है आसमां चक्कर में आया है
रुख़े रंगीं को हंस कर ज़ुल्फ़ में उसने छिपाया है । तड़पती है अब्र में बिजली चमन में अब्र छाया है
छिपाऊं मुंह न क्यों नदामत से लहद में कोने में । कफ़न में दाग़ उरयानी के जामे को लगाया है
छिपावे आबे दीवाना हश्र में होगा तो कह दूंगा । पिया है उम्र भर ख़ूं ने जिगर ग़म मैं ने खाया है
नई है रोशनी अभी लहद पर तेरे दस्तों में * । चराग़ों के एवज़ ज़हर आम अफ़रोज़ ने दिल जलाया है
हुये हो तेज़ हम पर संगदिल तुम गालियां देकर । ज़बां की तेग़ को ख़ूब आपने पत्थर चलाया है
शफ़क़ फूली है देखो शाम को शहरे बदख़्शां में । लबे रंगीं पे मिस्सी मल के उसने पान खाया है
हमें अब ज़िन्दगी है तल्ख़ उनको कहला जाने से । किसी दिन ज़हर खा लीजे यही जी में समाया है
मेरी लुब्बतें पै ताना चांदनी में क्यों है रसगीर । यह किसने चादरे महताब में धब्बा लगाया है
अयां सिंदूर का टीका नहीं मेहरा अबरू में । चराग़ उसका मस्र अफ़रोज़ ने रैन काबे में जलाया है
नहीं बेवजह पै हम हिचकियां आती हैं फ़ुर्क़त में । किसी महबूब को तो अपना समानन याद आया है

फ़िकरे सब्ज़ परी की दरख़्वास्त ज़बानी राजा इन्दर के ॥

काटी रात मज़े में सारी * * * । बैठ मेरे पहलू में प्यारी * * * ।
बहुत लड़ाई तूने जान * * * । अब है लाल परी का ध्यान * * ।

लाओ सब्ज़ परी को

आमद सब्ज़ परी की बीच सभा के

आती नये अन्दाज़ से अब सब्ज़ परी है * । लब सुर्ख़ हैं पर सब्ज़ है पोशाक हरी है * ।
फ़ीरोज़ह उसे देख के खा जाता है हीरा * । चेहरे में ज़मुर्रद से सिवा जलवागरी है * ।
जिन उससे हैं ख़जालत के सबब हैं बहिश्तों * । परियों को सदा शर्म से बेबालो परी है * ।
ज़ेवर की है क्या शान हरे रंग बदन पर * । इक शाख़ है नाज़ुक कि शिगूफ़ों से भरी है
हंसता है ज़मुर्रद पै सदा धानी दुपट्टा * । क्या हुस्न के इक बाल से सब्ज़े को परी है * ।
आमद की ख़बर सुन के हसीनों में नहीं दम । जो आया है महफ़िल में चराग़े सहरी है ।
उरूस अजब आशिक़ों महफ़ूज़ के हैं नाम । शहज़ादा गुलफ़ाम है यह सब्ज़ परी है * ।

ग़ैर धानी अपने हस्बे हाल ज़बानी सब्ज़ परी के

मस्त हूं पोशाक से शरारत से भरी हूं * * * । धानी मेरी पोशाक है मैं सब्ज़ परी हूं ।
क्या अब्र है सब्ज़े को मेरे हुस्न के आगे । फ़ीरोज़े से ख़ुशरंग ज़मुर्रद से खरी हूं ।
लेलेती हूं दिल आंख फ़रिश्ते से मिलाकर । इन्सां है क्या बस में नहीं जिन्न से डरी हूं * ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

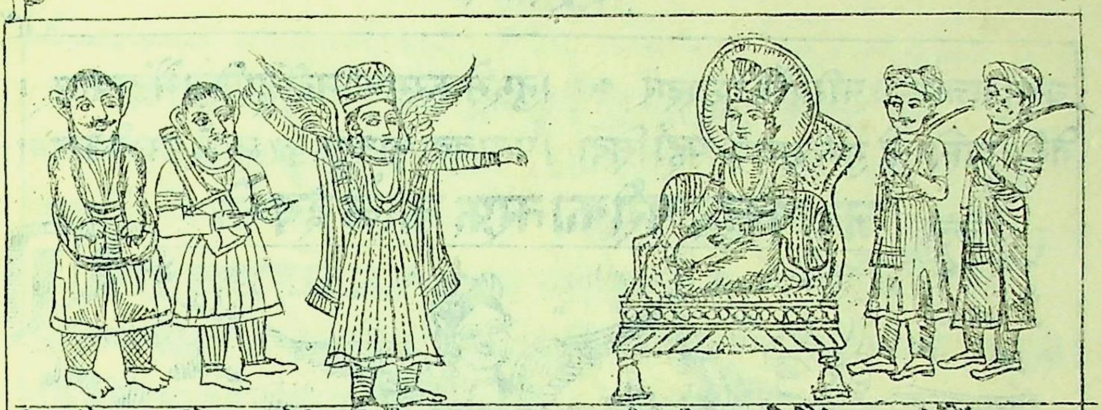

शोला है भभूका है ग़ज़ब है मेरा गुस्सा ॥ । जल जाये परीज़ाद जो मैं गर्म ज़री हूँ ॥ ।
ज़िन्दा न रखेगा मुझे सुनलेगा जो राजा । शहज़ादए गुल्फ़ाम की सूरत पै मरी हूँ ।
वह शमअ में परवाना हूँ वह सर्व मैं क़ुमरी । वह गुल है जहाँ में मैं नसीमे सहरी हूँ ॥ ।
उस्ताद के दम से चमने हुस्न है आबाद ॥ । मैं वास्ते ताऊस के दागे जिगरी हूँ ॥ ॥ ।

चौबोला ज़बानी सब्ज़ परी के ।

राजा जी तो सो गये दिया न कुछ इनआम । जाती हूँ मैं बाग़ में यहाँ मेरा क्या काम ।
सुन ऐ काले देव रे तू मेरी इक बात ॥ । आती थी मैं राजा के घर में आज की रात
शहज़ादा इक बाम पर सोता था नादान । जोबन उसका देख कर निकली मेरी जान ।
उनने अपने नख़ से तीर कलेजे खाय ॥ । सोता था वो बेख़बर हाथ पाऊँ फैलाय ।
सूरत उसकी देख कर दिल से गया क़रार । मुँह पर मुँह मैंने रखा किया खूब सा प्यार
दिल मेरा लगता नहीं महफ़िल के दरम्यान । क़ालिब मेरा है यहाँ वहाँ है मेरी जान
उसको गर तू लाउदा जाकर जल्दी यार । लौंडी मैं हो जाऊँगी तेरी बे तकरार ॥

जवाब काले देव का तरफ़ सब्ज़ परी के ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

घरमें राजा के तू परियों की सरदार * । तुझ से कर सक्ता नहीं हरगिज़ मैं इन्कार ।
तेरी ख़ातिर है मुझे सब से यहां सिवा । पता बता माशूक़ का लाऊं अभी उठा ।

जवाब सब्ज़ परी का तरफ़ काले देव के

जा तू सिंगल दीप में अख़्तर नगर में हां । सोता है एक माहरू लाल महल में वां ।
छल्ला मैं दे आई हूं अपना उसे निशाना सब्ज़ नगों की आब से तू उसको पहिचान

सवाल काले देव का सब्ज़ परी से ॥

लाया शहज़ादे को मैं जाकर हिन्दुस्तान । तू अपने माशूक़ को सब्ज़ परी पहिचान ।

जवाब सब्ज़ परी का ख़ुश होकर तरफ़ काले देव के

यही है शहज़ादा मेरा यही है मेरी जान । यही मेरा दिल्दार है मैं इसपर क़ुर्बान ।

जगाना सब्ज़ परी का शहज़ादे को शाना हिला कर

सोते हो क्या बेख़बर छोड़ के तुम घर बार । आंखें खोलो लाडले नींद से हो हुशियार ।

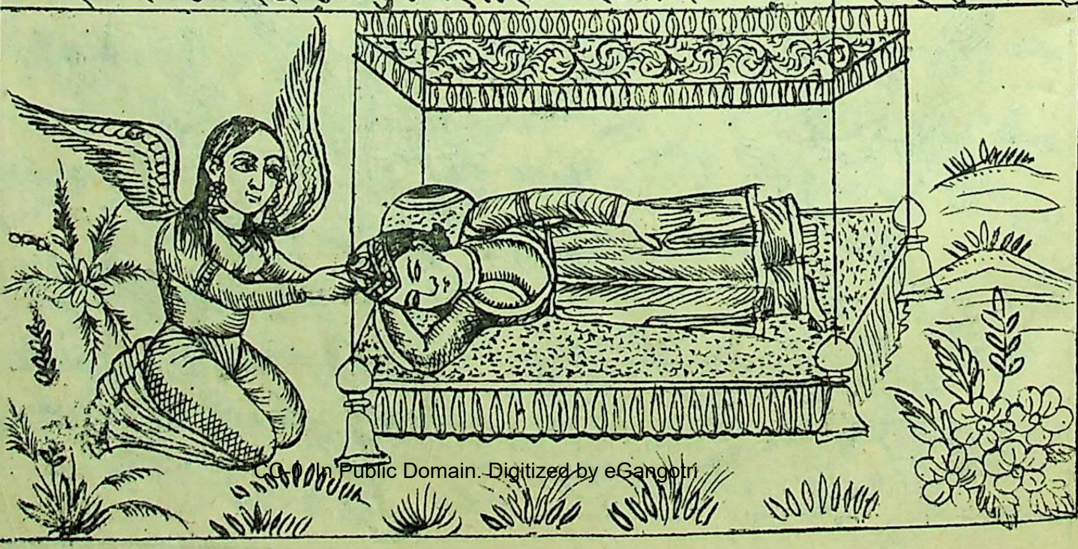

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जगाना शाहज़ादे का नींद से और कहना घबरा कर ॥

कोठा मेरा क्या हुवा छूटा किधर मकान । सोया था मैं किस जगह आया हाय कहां ।
ना वह मेरे लोग हैं ना वह मेरी जां ॰ ॰ ख़्वाब ये मैं हूं देखता जाग रहा हूं यां ॰ ।

गाना शाहज़ादे का ग़ज़ल आलम हैरत में बेताब होकर ।

घर से यां कौन ख़ुदा के लिये लाया मुझको । किस सितमगार ने सोने से जगाया मुझको
हक़ने किया ख़्वाब परेशान ये दिखाया मुझको । नज़र आता है न अपना न पराया मुझको
हैफ़ सद हैफ़ किसीने न ख़बर ली मेरी । क्या अज़ीज़ों ने मेरे दिल से भुलाया मुझको
नींद से आंख किसी कौन खुली कोठे पर । उठ के म्हज़ों के नसुगल से छुड़ाया मुझको ।
बस में ज़ालिम के मुझे छोड़ दिया हाय ग़ज़ब । ढूंढने कोई परिस्तां में न आया मुझको ।
ताक़ में सुर्ग़ अब उम्मेद रहाई की नहीं । किस बला में मेरे अल्लाह फंसाया मुझको
मुखलसी की कोई तदबीर बताओ उस्तादा है बहुत यार दिसे क़िस्मत ने सताया मुझको

फिर गाना शाहज़ादे का बिहाग की चीज़ हालत इज़्तराब में ॰ ॥

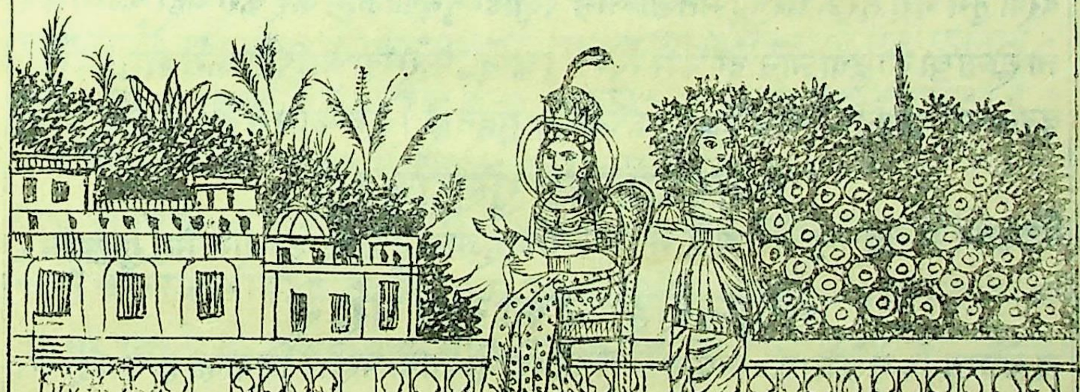

मुझे कौन घर से लाया यहां ॰ ॰ । बताओ ये किसका है मकां ॰ ॥
मुझे कौन घर से लाया यहां
सब बिछुड़े कोई संग न साथी ॰ । अज़ीज़ों को अपने पाऊं कहां ॰ ॥
मुझे कौन घर से लाया यहां
दिल का किस को हाल सुनाऊं ॰ । सिर पर बाप न मां ॰ ॰ ॰ ।
मुझे कौन घर से लाया यहां

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

घरजाने की आस नहीं है ✣ ✣ ✣ । पड़ी किस मुसीबत में मेरी जान ✣ ॥

मुझे कौन घर से लाया यहां

फंस गये हम ज़ालम के फंदे ✣ ✣ । कोई उस्ताद ले कहियो हां ✣ ✣ ।

मुझे कौन घर से लाया यहां

कहिना सब्ज़ परी का शहज़ादे का हाथ थाम के।

देखो तुम मेरी तरफ़ घर का मतलो नाम । लौंडी मुझको जान कर करो यहां आराम ॥
जो होनाथा सो हुवा जाने दो बस ख़ैर । चलो फिरो खाओ पियो करो बाग़ की सैर।
बतलाओ अब हस्बो नसब और तुम अपना नाम। रहिते हो किस काम में हैगा कहां मुक़ाम।

जवाब शहज़ादा गुल्फ़ाम का।

खिलवत में रहिता हूं मैं ऐश है मेरा काम। शहज़ादा हूं हिन्द का नाम मेरा गुल्फ़ाम।

सवाल शहज़ादे का सब्ज़ परी से

तू औरत किस क़ौम की अपना नाम बता। दोनों शानों पर तेरे निकला है ये क्या ✣ ।

जवाब सब्ज़ परी का

क़ौम की हूंगी मैं परी सुन ऐ नादान ✣ । ये दोनों पर हैं मेरे अय मूरख नादान ✣ ।
रहिती हूं मैं क़ाफ़ में सब्ज़ परी है नाम ✣ । राजा इन्दर के यहां नाच है मेरा काम ✣ ।

सवाल शहज़ादे का

जल्दी ये बतला मुझे दिल को है विसवास । मेरा आना किस तरह हुआ है तेरे पास ✣ ।

जवाब सब्ज़ परी का

ऊपर मैं आशिक़ हुई चलते चलते राह। उड़ा मंगाया यां मुझे भेज के देव सियाह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

१८

शेर ख़्वानी ग़ज़लख़्वानी सब्ज़ परी के मुख़ातिब हो कर शहज़ादे से ॥

सिर पै आंखों पै कलेजे पै बिठाऊं तुझ को । आ मेरे पास गले से मैं लगाऊं तुझ को + ।
दिलो जां से मुझे भाती हैं अदायें तेरी + । पास आ चांद सा मुंह लूं मैं बलायें तेरी + ।
लेट पहलू में मेरे घर को मैं आबाद करूं । तुझ को लिपटा के गले वस्ल से दिलशाद करूं

जवाब शहज़ादे का ॥

वस्ल की तेरी क़सम घर में है रवाना मुझ को । न ख़बरदार अभी हाथ लगाना मुझ को + ।
मुझ को नादान न समझ तू रहूं दाना हूं मैं + । क़ौम की तू जो परी है तो सियाना हूं मैं + ।
बेसवा तुझ सी ज़माने में न होगी ज़िनहार । आप बदनाम हुई मुझ से छुड़ाया घर बार ।

जवाब सब्ज़ परी का

ज़िन्दगी का है मज़ा ऐसी मुलाक़ातों में । चोंचले मुझ से बघारो न ज़रा बातों में + ।
शुक्र अल्लाह का कर लड़ गई क़िस्मत तेरी । यक बयक मुझ से परी को हुई उल्फ़त तेरी ।
तुझ को दीवाने नहीं ऐसी ज़री आती है । ख़्वाब में भी कहीं इन्सां के परी आती है ।
देख पछतायेगा मेरा जो बुरा दिल होगा । वस्ल तुझ को न परी का कभी हासिल होगा

जवाब शहज़ादे का

घर के छुटने का है ग़म आहो फ़ुग़ां करता हूं । वस्ल का वादह मैं इस शर्त से हां करता हूं ।
सुनी इन्दर की सभा मैंने कहानी में है + । उसका अरमान मुझे जोश जवानी में है + ।
और जलसों का तो हां हिन्द में भी चरचा है । नाच परियों का मगर मैंने नहीं देखा है ।
साथ अपने मुझे ले चल के वह जलसा दिखला । राजा इन्दर के अखाड़े का तमाशा दिखला ।
सैर मैं तेरे सबब बांकी जो इक बार करूं । जीते जी फिर न कभी वस्ल का इनकार करूं
उम्र भर पास से तेरे न कहीं जाऊं मैं + । जो कहे तू उसे आंखों से बजा लाऊं मैं + ।

जवाब सब्ज़ परी का

ऐसी बातों का ज़बां पर नहीं लाना अच्छा । जान आफ़त में नहीं मुफ़्त फंसाना अच्छा
देता इन्दर के अखाड़े पै अबस जान है तू । सख़्त बे अक़्ल है दीवाना है नादान है तू ।
ऐसी जा सैर को इन्सान नहीं चलते हैं + । वां मेरी जान परीज़ाद के पर जलते हैं + ।
आफ़त आ जायेगी तुझ पर अरे इक आन के बीच । आदमी ज़ात का क्या काम परिस्तान के बीच
कोई राजा को ख़बर जा के लगा देवेगा + । फूंक देगा वह तुझे मुझ को जला देवेगा + ।
न जलायेगा तो आफ़त में फंसायेगा तुझे । क़ैद करके वह कुंओं में रखवायेगा मुझे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जवाब शहज़ादे का।

मैं न मानूंगा न मानूं गा कभी बात तेरी ✣ । काम किस रोज़ के आवेगी मुलाक़ात तेरी ।
बात जो अस्ल थी मैं अक़्ल से पहिचान गया। वाइसे इन्कार का जानी मेरा दिल जान गया।
।। किसी देव के खिदमत में वहां आती है । इस लिये मुझ को सभा में नहीं ले जाती है ।

जवाब सब्ज़ परी का।

बात हरगिज़ ये ज़बां से न निकालो साहब । होश में आओ ज़रा मुंह को संभालो साहब ।
देव से मुझ को बुरा काम जो करना होता । आदमी ज़ाद पे किस वास्ते मरना होता ।
मैं परी होके और ऐसे पै फ़िदा जान करूं । एड़ी चोटी पे मुए देव को कुरबान करूं ✣ ।

जवाब शहज़ादे का ।

दिल हर इक शख्श का फंदे में फंसाती है तू। अय परी क्यों मुझे बातों में उड़ाती है तू ✣ ।
सुबह होती है मेरी जान कोई आन के बीच। मैं भी चल के सुना मुझ को परिस्तान के बीच
वां न लेजायगी तो जी से गुज़र जाऊंगा ✣ । आप मैं अपना गला काट के मर जाऊंगा

जवाब सब्ज़ परी का ।

मुफ़्त की यार खराब अपनी जवानी तूने । हाय अफ़सोस मेरी बात न मानी तूने ✣ ।
अब मिलेगा न अज़ीज़ों से न मां बाप से तू । शेर के मुंह मेरी जान चला आप से तू ✣ ।
थक गये होंट कहां तक और समझाऊं मैं । चल अखवाड़ा हुवे इन्दर का दिखा लाऊं मैं

जवाब शहज़ादे का ।

किस तरह चलने पे तैयार मेरी जान हूं मैं । तू परी ज़ाद है चालाक और इन्सान हूं मैं ।
उड़ के तू जायगी इक पल में परिस्तान के बीच। हाथ फैला के मैं रह जाऊंगा असमान के बीच।
कोई उड़ चलने की तदबीर बतादे उस्ताद । पर किसी देव के तू नोच के लादे मुझ को।

जवाब सब्ज़ परी का

बंद की बातें न करो होश में आओ जानी । न परी ज़ाद से बे पर की उड़ाओ जानी ✣ ॥
थाम लो पाया मेरे तख्त का अब हाथ से तुम। छूट जाना न कहीं राह में पर साथ से तुम ।
मुझ से वां जा के कोई बात न कहिना साहब । पीछे २ मेरे तुम नाचने रहिना साहब ।
गाके और नाच के बुत सब को बनाऊंगी मैं । तुझ को ले चल के दरख्तों में छिपाऊंगी मैं ।
किसी आफ़त में इक आध रूक अगर आना जानी। याद रखना कि मुझे भूल न जाना जानी ।

आना दुबारा सब्ज़ परी का सभा में और कहिना छन्द का।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

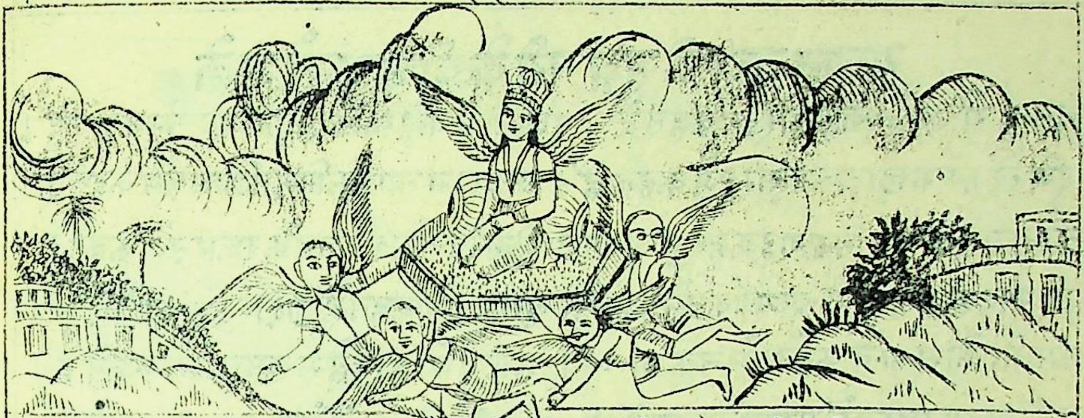

सभा में बुलवाकर मुझे आप किया आराम । आई हूं मैं फिर यहां करने अपना काम ।
करने अपना काम यहां फिर हूं मैं आई । ठुमरी छन्द ग़ज़ल की जीमें धुन है समाई ।
सभा बीच गाऊं आज जो मैं जी ख्याल के गाई । कहेंगे सब उस्ताद ने क्या २ चीज़ बनाई ॰ ।

ठुमरी ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पचरंगे

मोरी अँखियां फरकन लागी ॰ ॰ । कहां गयो यार किधर गई सखियां ॰ ॰ ।

अँखियां फरकन लागीं

देह फुकत है जिय तरफत है ॰ ॰ ॰ । पीत लगाके भजा हम चखियां ॰ ॰ ॰

अँखियां फरकन लागीं

नैनन में दिलदार बसत है ॰ ॰ ॰ । ये अँखियां अलमास परखियां ॰ ।

अँखियां फरकन लागीं

बल बल जाऊं मैं उस्ताद के ॰ ॰ ॰ । बीच सभा में मोरी पत रखियां ॰ ॰ ।

अँखियां फरकन लागीं

॥ ठुमरी दूसरी ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन पचरंगे

सुध लाग रही तोरी आठ पहर ॰ ॰ । तन मन की नहीं मोहिं रहाक ख़बर ॰ ॥

सुध लाग रहीं

निस बासर मोहिं कल न पड़त है ॰ । दिखला दे झलक कहूं एक नज़र ॰ ।

सुध लाग रहीं

अरज़ करत मोरा जियरा डरत है ॰ । दिल धरकत देह कम्पत थर थर ।

सुध लाग रहीं

हरदम भला उस्ताद मोसलामत ॰ ॰ । बौरीसी फिरत हूं जिधर तिधर ॰ ।

सुध लाग रहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग़ज़ल ज़बानी सब्ज़ परी के बीच धुन देश के

भूला हूं में आलम को सरशार इसे कहते हैं । मस्ती से नहीं ग़ाफ़िल हुशियार इसे कहते हैं ।
दम लेते मेरा छोड़ा आज़ार इसे कहते हैं । अच्छा न रहा इक दिन बीमार इसे कहते हैं ।
कल घर से जो वह निकला इक हश्र हुआ बरपा । दिल पिस के आलम के रफ़्तार इसे कहते हैं
उस माह का जल्वह है अफ़्शाक़ इसे कहते हैं । यूसफ़ इसे कहते हैं बाज़ार इसे कहते हैं ॥
तसवीर को सक्ता है कहते इसे नक़्शा ॥ आईने को हैरत है रुख़्सार इसे कहते हैं ।
इस रिश्ते उल्फ़त में गरदन है हज़ारों की । तसवीर इसे कहते हैं ज़िन्नार इसे कहते हैं ।
महशर का क्या वादा यां शक्ल न दिखाई ॥ इक़रार इसे कहते हैं इन्कार इसे कहते हैं ।
दिल ने शबे फ़ुरक़त में किया साथ दिया मेरा । मोन्सिस इसे कहते हैं ग़मख़्वार इसे कहते हैं
शब गुज़री सहर आई बक़ २ के थका आशिक़ । बोसा न दिया उसने न करार इसे कहते हैं
ख़ामोश अमानत है कुछ उफ़ भी नहीं करता । क्या २ नहीं ऐ ख़्वार अग़ियार इसे कहते हैं

॥ ग़ज़ल दूसरी ज़बानी सब्ज़ परी के

लबे जां बरक़ उल्फ़त में लब पर जान आई है । मरीज़े इश्क़ मरता है मसीहा की दुहाई है ।
नहीं माथे की अफ़शां उसके रुख़ पर छिड़के आई है । जबीं ने शरबते दीदार पर छिड़की हवाई है
शबे तारीके फ़ुरक़त में करें क्यों अपना दिल रौशन । चराग़ अन्धा है चरबी शमा की आंखों में छाई है
दफ़ेर रक़्त से है बदरंग जिल्द मसहफ़ हारिज़ । कलाम अल्लाह की काफ़िर ने क्या सूरत बनाई है ।
जगह क्या लेखुदा से इक बुते काफ़िर के है दिल में । फ़रिश्ता जा नहीं सक्ता जहां अपनी रसाई है ।
हिलाता हूं फ़लक को बाद मुरदन अपनी नालों से । लहद में पांव फैला कर ज़मी सर पर उठाई है ।
ख़ुदा के सामने गरदन झुकायेगा नदामत से । बुतों को करके सिजदा वरहमन ने मुंह की खाई है
न पहुंचा आपको साअद छुड़ाकर पास ग़ैरों के । कलाई हाथ में लेकर मेरे दिल को कल आई है
मेरी तुरबत के सब्ज़े पर गुमां होता है शब नम का । लहद पर मोतियों की चरख़ ने चादर चढ़ाई है
रखे अल्लाह इज़्ज़त इश्क़ में कुछ बन नहीं पड़ती । अकेला मैं हूं ग़म बुत की तरफ़ सारी ख़ुदाई है
लिया है अब रुख़ क़ातिल का बोसा ऐन ग़ुस्से में । जिगर देखो हमारा मुंह पे क्या तलवार खाई है
जिलाना आतिशे अफ़रोज़ का मुशकिल है दुनिया में । मेरे नालों ने अक्सर आग दोज़ख़ में लगाई है
मुक़र्रर बोसे लेने से मज़ा मिलता है दुनिया में । लबे शीरीं ने जाना क़ंद की गोया मिठाई है ।
रुख़े रंगीं के बोसे ग़ैर की ग़ीबत में लेता हूं । उड़ा है बाग़ से सैयाद बुल २ की बन आई है
फंसी है इश्क़ के फंदे में ये दब जां अमानत की । मदद को था अली पहुंचो दमे मुशकिल कुशाई है

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चुग़ली खाना लाल देव का राजा इन्द्र से मसनवी में

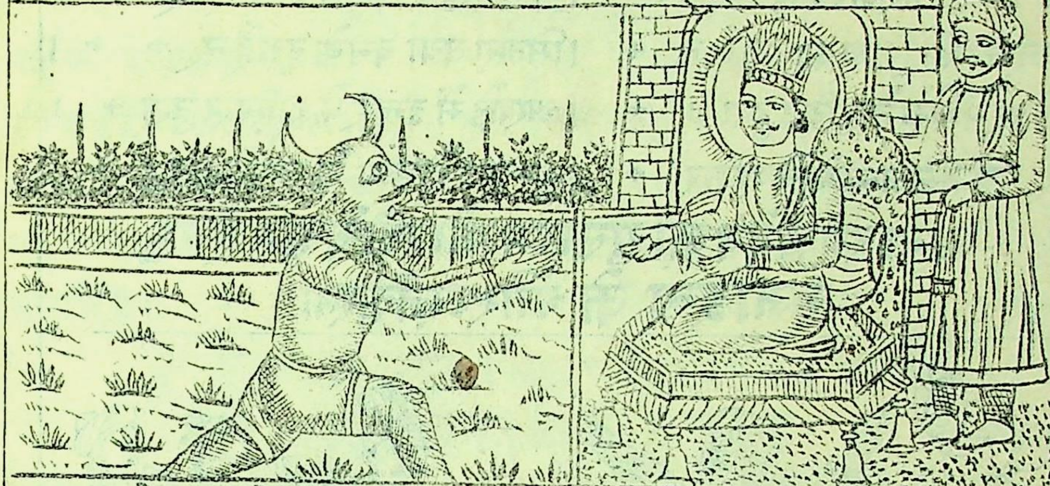

महाराज को हक़ रखे शाद काम + । नई आज है अर्ज़ करता गुलाम + ।
मैं खाता था इस दम चमन की हवा । + । इकी कन वह देखी कि होश उड़ गया ।
शजर है पुराना जो शमशाद का + । गुज़र है वहाँ आदमी ज़ाद का + + ।
नहीं करती इसला मेरी अक़्ल काम + । वह इन्सान है या कि माह तमाम + ।
उसे कौन लाया है याँ अपने साथ + । इसी फ़िक्र में कब से मलता हूँ हाथ + ।

॥ कहिना सब्ज़ परी का लाल देव से आलमे यास में ॥

न कर लाल देव इस तरह के कलाम + । अरे बे मुरव्वत जबाँ अपनी थाम + ।
ख़ुदा के ग़ज़ब से ज़रा दिल में काँप + । चुग़ल खोर के मुँह को डसते हैं साँप + ।
परी की तरफ़ देख अहमक़ न बन + । बुराई से बाज़ आ बक़ौले हसन + ।
किसी की बदी तू न कर ऐब है + । कि उसका ख़ुदा आलमुल ग़ैब है + ।
दिले आशिक़ इस बात से हिल गया + । तुझे हाय कम्बख़्त क्या मिल गया + ।

पूछना राजा इन्द्र का लाल देव से ग़ज़बनाक होकर

अरे देव तू है ये क्या बक रहा ॥ + ॥ । मेरे बाग़ में काम इन्साँ का क्या ॥ + ॥
हुआ किस तरह याँ बशर का गुज़र । । परिन्दों के दहशत से जलते हैं पर + ।
क़दम रख सके जिन की क्या जान है । फ़रिश्तों की याँ अक़्ल हैरान है + ।
किसी देव से आशनाई न हो + + । परी कोई साथ उसके लाई न हो + ।
उसे खींच ला पास मेरे शिताब ॥ + । कि ग़ुस्से से है हाल मेरा ख़राब + ।

जाना लाल देव का पास गुलफ़ाम के और पूछना तैश खा कर के

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बशर है कि जिन है कि साया है तू । । परिस्तान में क्यों कर आया है तू + ॥
उड़ा ओख कर जल्द मुझ से बयाँ + । बिठाया तुझे किसने लाकर यहाँ + ॥
चमन का कोई गुल का बूटा है तू + । सितारा बता बन के टूटा है तू + + ।
परी पर ये शैदा तेरा दिल हुवा ॥ + । अखाड़े में इन्दर के दाख़िल हुवा + ।
मेरे साथ चल जल्द ऐ बे शऊर + । बुलाया है राजा ने अपने हुज़ूर + ।

लाना लाल देव का गुल्फ़ाम को खींच कर रोबरू राजा इन्दर के और अर्ज़ करना

हुज़ूरी में हाज़िर है ये शोला रू + । महाराज साहब निगह रोबरू + ।
बजा आप का हुक्म लाया ग़ुलाम + । चमन में पहुंच कर किया अपना काम
शजर के तले से उठाया उसे । + । + । सभा की तरफ़ खींच लाया उसे + ।
डरा मैं न कुछ उसकी फ़रयाद से + । उड़ा लाया कुमरी को शमशाद से + ।
सितम कीजिये जो सज़ा वार है + । खड़ा दस्त बस्ता गुनहगार है + + ।

पूछना राजा इन्दर का गुल्फ़ाम से सबब दाख़िल होने का परिस्तान में

अरे कौन है तू तेरा क्या है नाम + + । सभा तूने की मेरी बरहम तमाम + ।
तुझे लाया यां कौन ऐ बद सफ़ात + । बयां मुझ से कर जल्द ये वारदात + ।
किया क़स्द तूने परिस्तान का + + । न ख़ौफ़ आया अपनी तुझे जान का + ।
मेरी सारी महफ़िल की ली आबरू । यहां घूरने आया परियों को तू + + ।
बता हाल अपना का अय दर्द नाक + । जलाकर अभी वरना कर दूंगा ख़ाक ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6590.

अर्ज़ करना गुलफ़ाम का राजा इंदर से आलमे हिरास में हाथ जोड़ कर

कहूं क्या फ़लक का सताया हूं मैं ✤ । यहां खेलकर जी पे आया हूं मैं ✤ ।

परी सब्ज़ है जो अखाड़े में यां ✤ ✤ । उसी का हूं दीवाना मैं नीम जां ✤ ✤ ।

सभा की सदा धूम सुनता था मैं ✤ । इसी फ़िक्र में सर को धुनता था मैं ✤ ।

वह आने लगी आज की सब जो यां ✤ । लटक कर हुवा तख़्त में मैं रवां ✤ ✤ ।

बला में हुवा यों गिरफ़्तार हूं ✤ ✤ । जो चाहो सज़ा दो गुनहगार हूं ✤ ✤ ।

बुलाना राजा इन्द्र का सब्ज़ परी को सामने अपने और लानत मलामत करना

अरी ओ परी सब्ज़ ओ बेहया ✤ ✤ । मेरे सामने जल्द आ बेसवा ✤ ✤

छुड़ी है तेरी ज़ात बुनयाद पर ✤ ✤ । कि आशिक़ हुई आदमी ज़ाद पर ✤

बनाया अरी तूने इन्सां को यार ✤ ✤ । वकीले हसन सुन तु ऐ नाबकार ✤

तेरा रंग गोरन से उड़ता नहीं ✤ ✤ । तुझे क्या परी ज़ाद जुड़ता नहीं ✤

सभा में लगा लाई इन्सां को साथ ✤ । तेरा अब गिरेबां है और मेरा हाथ ✤

अर्ज़ करना सब्ज़ परी का राजा इन्द्र से और नादिम करना गुलफ़ाम को और रोना गले लिपट कर

जफ़ा ओ सितम की सज़ावार हूं ✤ । हक़ीक़त में तेरी गुनहगार हूं ✤ ।

अरे क्यों मैं वां तुझ से कहती थी क्या । न माना मेरा हाय तूने कहा ✤ ✤ ✤

बला में पड़ा आप भी बे ख़ता ✤ ✤ । मुझे भी अखाड़े में रुसवा किया ✤ ।

कहां फेंके अब देखूं राजा तुझे ✤ । ख़ुदा को मेरी जान सौंपा तुझे ✤ ✤

जो जीते हैं तो फिर भी मिल जायेंगे ✤ । नहीं तो किए की सज़ा पायेंगे ✤

कहना राजा इन्द्र का लाल देव से वास्ते क़ैद गुलफ़ाम के और निकलवाना सब्ज़ परी का अखाड़े से पर नोच के

अरे देव कर क़स्द बेदाद का ✤ ✤ । पकड़ हाथ इस आदमी ज़ाद का ✤ ।

कुआं वह जो है क़ाफ़ में पुर ख़तर ✤ । अभी उसमें जाकर इसे क़ैद कर ✤ ।

परी सब्ज़ ये है जो आगे खड़ी ✤ । ख़ता की है इस बेसवा ने बड़ी ✤ ।

सो तू नोच कर इसके पर और बाल ✤ । अखाड़े से मेरे अभी दे निकाल ✤ ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उड़ाती फिरे खाक ये कू बकू ॥ न आये हमारे कभी रूबरू ॥

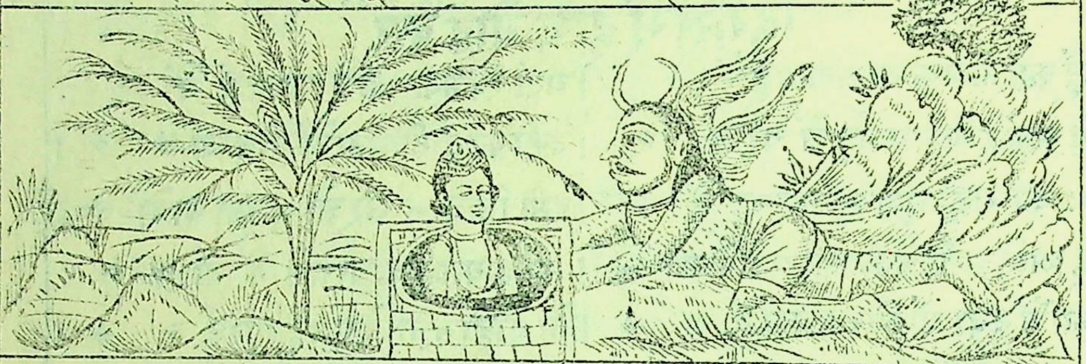

आना सब्ज़ परी का जोगन बनके परिस्तान में और आमद। गाना लोगों का

जोगन आती है परी बन के परिस्तान के बीच। सुमरनी हाथों में मुन्द्रे पड़े हैं कान के बीच

सर पे इंडवा है रखे मुंह पे लगाई है भभूत। सेलियां डाले हैं गरदन में गरेबान के बीच

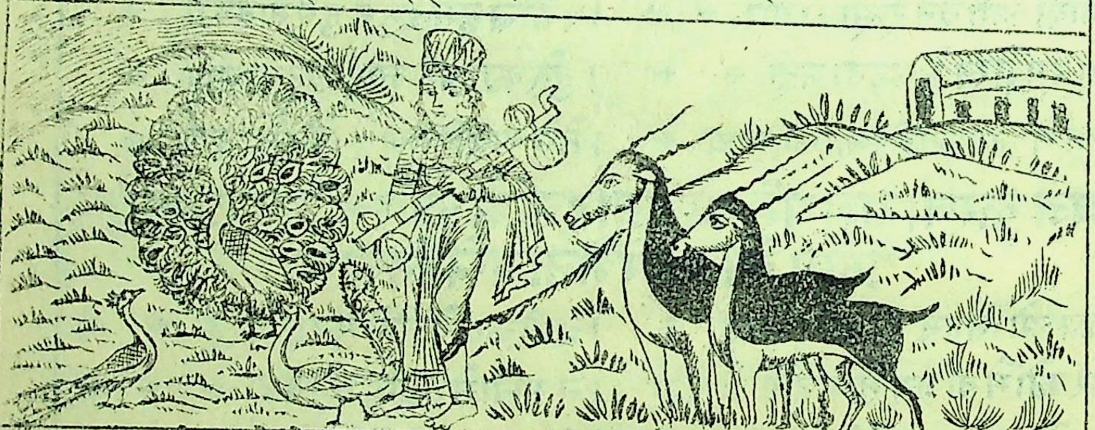

चाल मतवाली है आंखें हैं मयइश्क़ से लाल। मस्त शहज़ादये गुल्फ़ाम के है ध्यान के बीच

सर को धुन्ते हैं सदा सुनके चरिंद और परिंद। भैरवी का अजब अंदाज़ है हर तान के बीच

नाल्ये बेसाहैं लबदीद की मुश्ताक़ आंखें। दिल है सीने में तपां वस्ल के अरमान के बीच।

कहीं गुल्फ़ाम का कोसों नहीं मिलता है पता। खाक उड़ाती हुई फिरती है बियाबान के बीच

गमज़ा आफ़त है क़यामत है अदायें उसकी। हश्र आलम में बपा करती है इक आन के बीच

सब्ज़ जोड़े में है क्या चेहरए रोशन की ज़िया। सुबह को चांदनी ने खेत किया धान के बीच।

देव मदहोश हैं परियों में नहीं दम उस्ताद। जिन तड़पते हैं पड़े जान नहीं जान के बीच।

ठुमरी गाना जोगन का परिस्तान में बीच धुन भैरवीं के

मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां ॥ अंग भभूत जोगन बन मलियां ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छान फिरी सब गलियां + + + । मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियां + ।
जो जानत है डगर नहीं आवत + । हम महिलों की परियाँ रे + + ।
लट छिटका के भेस बना के + + । देस बिदेस निकलियां रे + + ।
अंग भभूत जोगन बन मलियाँ + । मैं तो शहज़ादे को ढूंढन चलियाँ + ।
सीस बकस गयो पाँउ झुलस गयो + । धूप में बन बन जलियाँ रे + + ।
तन कुम्हलागयो मुख मुरझा गयो + । जैसे गुलाब की कलियां रे + + ।
अंग भभूत जोगन बन मलियाँ + । छान फिरी सब गलियाँ + + ।
मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियाँ
जग दुशमन है राह कठिन है + । बलायें कौं कर टलियाँ रे + + ।
जाय कहो उस्ताद से गुइंयाँ + + । छान फिरी सब गलियाँ + + ।
मैंतो शहज़ादे को ढूंढन चलियाँ

ठुमरी दूसरी ज़बानी जोगन के बीच धुन भैरवी के

कहां पाऊं कहां पाऊं यार रे मैं

अंतरह

यार की छाँह नज़र नहीं आवत + । ढूंढत हूँ संसार रे मैं + + ।
कहां पाऊं
कारे करूं कित ढूंढन जाऊं + । सोचत हूं बार बार रे मैं + ।
कहां पाऊं
सपने में दिलदार को पाके + + । चौंक पड़ी झिझकार रे मैं + + ।
कहां पाऊं
पिया कारन उस्ताद के आगे + । होउं गले का हार रे मैं + + ।
कहां पाऊं कहां पाऊं यार रे मैं

ग़ज़ल ज़बानी जोगन के फ़िराक गुलफ़ाम में

मरता हूं तेरे हिज्र में ऐ यार ख़बर ले । । अब जान से जाता है ये बीमार ख़बर ले ।
फिरता हूं तसव्वुर में तेरे सुबह से ता शाम । बेताब है ये तालिब दीदार ख़बर ले । + ।
बाज़ार वफ़ा गर्म है ऐ यूसफ़ सानी । । दिल बेचता है तेरा ख़रीदार ख़बर ले ।
ढूंढे से भी अब तेरा ठिकाना नहीं मिलता । हूं छान रहा कूचा व बाज़ार ख़बर ले । + ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुनियां में कोई आन कोई दम का हूं मेहमान। अब सांस है लेना मुझे दुश्वार ख़बर ले ।
आंख उस्की हो क्यूं हाल दिले ज़ार से आगाह। किस तरह से बीमार को बीमार ख़बर ले ।
आंखे हैं लगीं दस्ते हिनाबस्तह तुम्हारा । सर फोड़ रहा हूं पसे दीवार ख़बर ले । ।
इतना भी नहीं चाहिये आशिक़ से न ग़ाफ़िल। सौ बार अगर डालो तो इक बार ख़बर ले ।
आग़ाज़ मुहब्बत में नहीं ज़ीस्त की उम्मेद । मरता है तेरा लाज़िह गिरफ़्तार ख़बर ले ।
लिल्लाह दिखा शक्ल अब ऐ निक़ बिरहमन। ऐ बेख़बर ऐ वक़्ले ज़ुन्नार ख़बर ले ।
सुन्ते हैं कि फ़ुरक़त में तड़पना है अमानत। जल्द ऐ बुत बेदीन पए मुस्लमा ख़बर ले ।

ग़ज़ल दूसरी ज़बानी जोगन के आलम बे क़रारी में बीच धुन भैरवीं के

रूह बदन में है न पां जी को है कल से बेकली । जल्द ख़बर लो हम दमो जां फ़िराक़ में चली ।
यार सबा जो सुबह दम बाग़ में नाज़ से चली। नख़ल निहाल हो गये फूल गई कली कली
साये की तरह रख़्त पढ़ा ये हवा साफ़ उतर गया। आया जो बाल यार पर हुस्न की दुपहर ढली
तुमसा न सफ़री दहर में होगा हसीनों को हकन। सर ख़न बान हो रहे हैं बातन बात की डली
तार करो दुपट्टा तू ओढ़े किरन जो सैंक कर। हो शब माहिताब में क्या है सनम रूला रली
चलता है बाग़ में वह गुल जब कि उठा के पां पीछे। ख़ार हर एक फूल को देती है काफ़ली २
क़स्द किया जो सैर में उस गुल ना ने सैर का। सब्ज़े ने दूर तक बिछा दश्त में फ़र्श मख़मली
यारमाना ज़नीन कोई कब है रियाज़े दहर में। बोझ से दर्द सर हुआ पहिना जो जोड़ा सन्दली
मैने पर्वे फ़िराक़ में की जो एक आह आतशीं। जिससे शम्अ का फुका कहिने लगी जली २
आई शराब साक़िया जामे शराब दे पिला । फूल खिले फले सज़र अब्र उठा हवा चली
जुल्फ़ें दराज़ फ़ित्ना की मुख से उलझ के यार ने। जान छुटी अज़ाब से रोग गया बला टली ।
तेरी भौंहें में बल पड़ा क़त्ल हुआ मैं तेग़ से। तेरी उधर पलक हली मुझ पे इधर छुरी चली
सह के अमीने मोअस्सर में पांउं अमानत आया किया। जब हुई लग ज़िशायक ज़रा ज़बां से कलाम

तारीफ़ करना काले देव का जोगन की राजा इंदर से

ख़ुदा राजा जी को रखै शाद मान + । जो हो जानबख़्शी तो खोलूं ज़बान + ।
परिस्तान में जोगिन इक आई है + । ग़ुलाइक़ सब उस्की तमाशाई है + ।
वह है नाचती गाती इस आन से + । कि जिन मद के होते हैं सो जान से + ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग़ज़ब मैरवों की हर इक तान है ॥ ✤ ॥ ख़ुदाई का दिल उसपै क़ुर्बान है ॥ ✤ ॥
मज़े हैं अमृत और अप्सरा सुनी ॥ ✤ ॥ न देखी है जोगिन न ऐसी सुनी ॥ ✤ ॥

मुश्ताक़ होना राजा इंदर का और बुलवाना जोगिन को काले देव से

न कर देर ऐ देव बहरे ख़ुदा ॥ ✤ ॥ अखाड़े में मेरे उसे जल्द ला ॥ ✤ ॥
मैं देखूँ वह जोगिन है किस शान की । परी है क्या क़िस्म इन्सान की ॥ ✤ ॥
किसी देव जिन की सताई न हो ॥ ✤ । मेरे पास फ़रयाद लाई न हो ॥ ✤ ॥
मज़ा राग का तान का शौक़ है ॥ ✤ । फ़क़ीरों से मुझको बहुत शौक़ है ✤ ।
न लाये वह कुछ और दिल में ख़याल । दिखाये मुझे आके अपना जमाल ✤ ।

सवाल काले देव का जोगन से और ज़ाहिर करना कमाल इश्तियाक़ राजा इंदर का

अरी जोगन अब दिल में हो अपने शाद । किया है तुझे राजा इन्दर ने याद ✤ ।
किसी से तेरा सुन लिया है जो हाल ✤ । सुना कान को शौक़ उसे है कमाल ।
मेरा देर करना उसे शाक है ॥ ✤ ॥ तेरे नाच गाने का मुश्ताक़ है ॥ ✤ ।
मुराद अब तेरे दिल की बर आयेगी । जो माँगेगी वह चीज़ मिल जायेगी ।
न फिर उम्र भर तू करेगी सवाल ✤ । वह इक दम में कर देगा तुझ को निहाल

जवाब जोगन का तरफ़ काले देव के तान आमेज़ और लगावट करना बाद उसके

ये बातें न लाना ज़बाँ पर कभी ॥ ✤ । फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी ✤ ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बड़ा वह मेरा देने वाला हुआ ॥ + ॥ खुशामद से मुह तेरा काला हुआ + ॥
फ़क़ीरों की दौलत की परवा नहीं + । यहा हर के अफ़ज़ाल से क्या नहीं ॥
जो गाने का राजा तलबगार है ॥ + । मेरा किस्को चलने में इन्कार है + ।
तबीअत मुखातिब अगर पाउंगी + । जो आना है मुझको सुना जाउंगी ।

महाराज कीजिये इधर अब निगाह । । ये जोगन है हाज़िर बहाल तबाह + ।
मिला किस ख़राबी से उसका निशान । । हूं थामें परीज़ाँ में हर हर मकान + ।
बहुत जल्द ख़िदमत में आया हूं मैं । । अखाड़े में जोगिन को लाया हूं मैं + ।
अजब ख़ुश गुलू है ये ज़ोहरा जबीं + । । उड़ाती है जङ्गल में क्या भैरवीं ॥ + ।
हर इक तान पर लोट जाता है जी ॥ + ॥ सुना होगा गाना न ऐसा कभी ॥ + ।

देखना राजा इन्द्र का तरफ़ जोगिन के और दरयाफ़्त करना हाल जोगिन का

परी जोगिन ऐ दर्द की मुबतिला + । फ़क़ीरों का क्या भेष तूने किया + ।
फ़िदा किसपे है किसपै शैदा है तू + । कोई आदमी है परी या है तू + ।
कहां से यहां तेरा आना हुआ + ॥ कि मुश्ताक़ सारा ज़माना हुआ + ॥
किसे ढूंढती फिरती है कूबकू + ॥ उड़ाती है क्यों ख़ाक जङ्गल की तू + ।
सुना अपना गाना मुझे भी ज़रा + ॥ हुआ भैरवीं छेड़ या जोगिया + ।

जवाब जोगिन का दर्द आमेज़ तरफ़ राजा इन्द्र के और इलतजा करना

महाराज पूछो न जोगन का हाल + ॥ फ़क़ीरों का दिल दर्द से है निढाल + ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरा मुझसे माशूक़ है छुट गया * * । मेरा राज इस देस में लुट गया * ॥
यहाँ ढूँढने इसको आई हूँ मैं * * । बैरागन हूँ ग़म की सताई हूँ मैं * ॥
सुनाती हूँ गाना जो मुझ को है याद * । अजब क्या जो मिल जाये दिल की मुराद ।
अगर राजा से गैर हो दिल का हाल * । न जोगिन का रद कीजियेगा सवाल *

दूसरी गाना जोगिन का सामने राजा इन्दर के बीच धुन भैरवी के।

कहाँ गयो गुइयाँ शहज़ादा जानी प्यारा * । दिल तड़पे रे हमारा ॥ * ॥ * ॥
कहाँ गयो गुइयाँ शहज़ादा जानी प्यारा
वाका पता कहूँ लागत नाहीं * । ढूँढ फिरी बन सारा ॥ * ॥ * ॥
कहाँ गयो
बिन जानी के इन नयनन में ॥ * ॥ रैन दिना अँधियारा ॥ * ॥ * ॥
कहाँ गयो
गुइयाँ मैं जैसे सुरख मछरिया * । तरपत होगा बिचारा ॥ * ॥ * ॥
कहाँ गयो
कोउ कहे अस्ताद के जाके * । तुम्हरे दम का सहारा ॥ * ॥ * ।
कहाँ गयो

गिलोरी देना राजा इन्दर का जोगिन को महज़ूज़ होकर और जवाब देना जोगिन का नशर में

पान लेके क्या करूँ किसी सब्ज़ रंग का ध्यान है । हड्डियाँ चूना हैं बदन धान पान है ॥
इश्क़ लोहू पी पी के रंग लाया है * । फ़िराक़ ने क़त्ल का बीड़ा उठाया है ॥
गिलोरी लिये मुझे क्या तकना है * । फ़क़ीरों का मुँह कौन कील सकता है ॥

होली गाना जोगिन का सामने राजा इन्दर के बीच धुन सिन्ध भैरवी के

जर जाये गुइयाँ ऐसी होरी ॥ * ॥ बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी ॥ * ॥
भाग सुभाग पिया संग भागो ॥ * ॥ सब चुरियाँ हम तोरी ॥ * ॥ * ॥
सुरख चुनरिया उढ़ाउ न सजनी * । तन मन आग लगोरी * * ।
बिन सइयाँ देह सुलगत मोरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अबीर गुलाल मिलाओ खाक में * । कैसा फाग कैसी होरी ॥ * ॥

आंगन के बीच रंग भरी गागर + । देखो भरक भर जोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

बिन पिया मुखपर मार के थापर + । खूब गुलाल मलोरी + + +

नैनन की पिचकारी बनाके + + । असुअन रंग में बोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

ठग मारी यों ठाढ़ी हूं उन बिन + । जैसे कीन्ही है चोरी + + ।

का मुख ले उस्ताद के जाऊं + । जियाने आफ़त तोरी + + ।

बिन सइंयाँ देहँ सुलगत मोरी

हार देना राजा इन्दर का जोगिन को फ़िर जबाब देना जो-गिन का और हार न लेना

हार जिन्हार न लोंगी दिल को ख़ार है + । अपना गुल अज़ार गले का हार हो तो बहार है

फिर ग़ज़ल गाना जोगिन का बीच धुन भैरवी के

दिल को चैन इकदम नहे चर्ख़ कहीं मिलता नहीं । वह मेरा गुलफ़ाम वह गुल पैरहन मिलता नहीं

किस तरफ़ सर रमेरे दिल को उड़ा कर ले गई । गुलशने आलम में वह रश्के चमन मिलता नहीं

बाउली हूँ बहर उल्फ़त में जले ख़ार की तरह । यूसफ़े गम गश्ता का चाहे ज़क़न मिलता नहीं

ज़िन्दगी से तङ्ग हूं वैयार बाग़े देहर में । बेकली है दिल को वह गुञ्चे दहन मिलता नहीं

जीते जी जिस पर मरे हम ख़ाक रे तर के लिबास । बाद मुर्दन उसके हाथों से कफ़न मिलता नहीं ।

शक्ल ताऊस गुलि लां हूं सरापा दाग़ दार + । गुल बदन पर ख़ाये हैं वह गुल बदन मिलता नहीं

जिसकी ख़ातिर रोंकती हूं बहर आलम में कुये । वह ग़री के कुलज़ में रंजो महन मिलता नहीं

करती हूं कूकू सदा सहरा में कुमरी की तरह । पर कहीं वह ग़ैरते सर्वे चमन मिलता नहीं +

ठोकरें खाती हूं जङ्गल की ख़फ़ा रहिना है जी । जान पर बन जाये ऐसा कोई बन मिलता नहीं

कांटे तलवों में चुभे है जाके अब ढूंढ़ू कहां । बेरियों में भी मेरा नाज़ुक बदन मिलता नहीं

सूरते फ़रहाद मैंने छान मारे सब पहाड़ । पर कोई उस्ताद सा शीरीं सख़ुन मिलता नहीं

शाली रूमाल देना राजा इन्दर का जोगिन को ख़ुश होकर ॥ फ़िर जबाब देना जोगिन का ज़ुबानी में

रूमाल उन्हें दीजिये जो तङ्ग दस्त हैं + । फ़क़ीर अपनी कमली में मस्त हैं + ।

इश्क़ की गरमी ने मारा है + । पसीने से किनारा है + + ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राजा के दर में पहले से आई हूं * । जो मांगो सो पाऊं * * * ।

इक़रार करना राजा इन्दर का जोगिन से और ग़ज़ल गाना जोगिन का बतलब गुल्फ़ाम के

होता है कोई आन में अब काम हमारा । इन आम से दीजिये हमें गुल्फ़ाम हमारा ।
अब चाहसे यूसफ़ को निकलवावो हमारे । घुटता है अंधेरे में दिला राम हमारा * ।
आशिक़ने तेरे मांग लिया राजा से तुझ को । दे आये कोई उस्को ये पैगाम हमारा ।
आजाब अगर यार तो छातीसे लगालें । सीने में तपां है दिले ना काम हमारा * ।
अब वस्ल के लूटेंगे मज़े खल्क में बेखोफ़ । आगाज से बेहतर हुआ अञ्जाम हमारा ।
मंगवाइये शहज़ादे को अब देर न कीजे । नाम आपका हो खल्क में और काम हमारा
अल्लाह मदद गार है हर हाल में उस्ताद । कर सक्ती है क्या गर्दिशे ऐयाम हमारा ।

पहिचानना राजा इन्दर का सब्ज़ परी को और तलब करना। लाल देव का वास्ते ख़लासी गुल्फ़ाम के ॥ * ॥

अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ * । बड़ा मुझको जोगन ने धोखा दिया * ।
बनावट की थी सारी जादू गरी * * । नहीं आदमी सब्ज़ है ये परी * * ।
इसे ज़र की ख्वाहिश न यां लाई थी * । छुड़ाने गिरफ़्तार को आई थी * ।
कभी इसको मिलता न वह गुल इज़ार * । मगर कौल हाराहूं मैं तीन बार * ।
निकाल अब कुएं से तु गुल्फ़ाम को । हवाले कर इस नेक अंजाम को * ।

मिलना गुल्फ़ाम का सब्ज़ परी को और बाहम सुनीं दहाल ऐयाम फ़िराक़ के मा बैन आशिक़ व माशूक़ के सवाल।

सब्ज़ परी का

क़हर था हिज्र क़यामत थि जुदाई तेरी । मेरे खालिक़ ने मुझे शक्ल दिखाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

खाक है मुंह पे मली बाल है सिर के बिखरे । हाय इस इश्क़ ने क्या शक्ल दिखाई तेरी

जवाब सब्ज़ परी का

मुझ पे होना था जो कुछ होगया इस्का नहीं ग़म । होगई क़ैद मुसीबत से रिहाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

तू मेरे आगे निकाली गई थी नोक के पार । राजा तक फिर हुई किस तरह से रसाई तेरी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जवाब सब्ज़ परी का

बन के जोगिन हुई इन्दर की सभा में दाखिल । फिर मुझे चाह यहाँ खींच के लाई तेरी ॥

जवाब शहज़ादे का

कह के राजा से मुझे किसने कुँए दिखलाया । दुश्मने जाँ थी मेरी जान जुदाई तेरी ॥

जवाब सब्ज़ परी का

गाके और नाच के राजा को रिझाया मैंने । नक़्द मुल्का कान सम्बन्धर हुई आई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

जर की तालिब न हुई तुझ को लिया राजा से । जाफ़ ले गई शाही पै गदाई तेरी ॥

जवाब सब्ज़ परी का

देव कमबख़्त ने इस ज़ोर से पहुंचा पकड़ा । हो गई लाल नज़ाकत से कलाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

मेरी इश्क़ ने सारा तेरा जोबन लूटा ॥ आधी सूरत व खुदा मैंने न पाई तेरी ।

जवाब सब्ज़ परी का

क़ैद ने कर दिया बीमार से बदतर तुझ को । घर में ले चलके करूंगी मैं दवाई तेरी ।

जवाब शहज़ादे का

पिंडलियां सूजी हैं तलवों में चुभे हैं कांटे । ख़ार देती है मुझे बरहना पाई तेरी

जवाब सब्ज़ परी का

मुझ को ईज़ा हुई पापोश के सदके से हुई । जांन अल्लाह ने गुलफ़ाम बचाई तेरी ॥

जवाब शहज़ादे का

मैं तेरे हाथ लगा तू मेरे फन्दे में फंसी ॥ मेरा मतलब हुआ उम्मेद बर आई तेरी ।

जवाब सब्ज़ परी का

है हुआर मेरे दिल में कि अनहप्सलक । फ़ज़्ले उस्ताद से देखें न जुदाई तेरी ॥

मुबारक बाद गाना सब्ज़ परी का गुलफ़ाम से हम बग़ल होकर साथ सब परियों के

शादिये जलवए गुलफ़ाम मुबारिक होवे । ऐशव इसतन का सरंजाम मुबारक होवे

बाद मुद्दत के हसीनों का नसीबा जागा ॥ फ़र्शे राहत पै इन्द आराम मुबारक होवे ॥

सर्वे कुमरी को सज़ावार हो बुलबुल को गुल । हमको एक सरवे गुल अन्दाम मुबारक होवे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पीचुके खूनजिगर हिज्र में जी भर भर के । शर्बते वस्ल का अब जाम मुबारक होवे ॥
तख़्त पर हमको मुबारक हो जहां में फिरना । गैर को गरदिशे ऐयाम मुबारक होवे ॥
हो चुके इश्क में बदनाम बड़ी मुद्दत तक । अब ज़माने में हमें नाम मुबारक होवे ।
जाल साज़ों के न फंदे में फंसे तायर दिल । गेसुओं का हमें अब दाम मुबारक होवे ।
हूरे जन्नत को मुबारक हो फ़लक के तारे । बाग़ के गुल हमें गुल्फ़ाम मुबारक होवे ।
छीने शहज़ादे को अब राजा ने हम से उतार । ये अमानत सहर व शाम मुबारक होवे ।

अमानत की इन्दर सभा समाप्तम्

तारीख़ इन्दर सभा तबाज़ाद मुसन्निफ़

हुई इन्दर सभा जिस दम मुरत्तिब ॥ जहां ने सुन के तौसीफ़ें सना की ॥
बुतों ने दी सदा अल्लाह अल्ला ॥ हर इक मिसरा है या कुदरत खुदा की ।
हुआ जो याद जिस्को ले उड़ा वह ॥ जबां किस २ ने गाने पर न वा की ॥
किसी ने याद की लिक्खी किसी ने ॥ किसी ने जुस्तजू लाइन्तिहा की ॥
उड़ी शुहरत जब इसका लखनऊ में ॥ अमानत सबने ख़्वाहिश जा बजा की ।
ज़िरूये वजद बोल उठे परीज़ाद ॥ ख़लायक में है धूम इन्दर सभा की ।

इति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ इन्दरसभा मदारीलाल

सुलतान शाह बज़्म में तशरीफ़ लाते हैं। सारे जहां को अपना तजम्मुल दिखाते हैं
खिलअत से सब अमीरों को करते हैं सर्फ़राज़। रुतबा किसी का शान किसी की बढ़ाते हैं
अजब एक जमा है सदौलत पै खासव आम। मुजराई गुज़ारे का भी नहीं बार पाते हैं ॥

दोहरा वज़ीरज़ादह

शहज़ादे मुल्लत नहीं क्यों हो आज मलूल। ऐसे हो कुछ सोच में जैसे गये कुछ भूल।

छन्द

अहिवाल अपने दिल का ज़रा तो बतलाइये। क्यों कर हूं ख़ैर ख़्वाह मुझे भी सुनाइये ✤ ।
होवे जो बारवान मुझे भी सिलाइये ✤ । अपने से हो सके तो वजा उसको लाइये ।

दोहरा शाहज़ादह

कहूं मैं तुम से बात वह कौल अगर दे दो। रखिये अपने तक इसे ज़ाहिर कहीं न हो।

छन्द

इस कहिने से मेरे न कभी होना बदगुमां। तुमसे नहीं है राज़ मेरी दिल का कुछ निहां
क्यों कर हो ख़ैर ख़्वाह मेरे तुमतो जानजां। लेकिन शरीक हाल जो हो तो करूं बयां।

इरादा करना शाहज़ादे का वास्ते सैर मुल्क दीगर के सवाल वज़ीरज़ादह

सुनाइये मुझे लिल्लाह हालज़ार अपना। और जानियेगा इस आसी को दोस्तदार अपना

शाहज़ादह

न गै़र पर हो मख़फ़ी गिरिय आश्कार अपना। तो मैं बनाऊं तुम्हें दिल से राज़दार अपना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वज़ीरज़ादह
वो नहक़ से न हूजियेगा बदगुमान हरगिज़ गवाह है ये है नहीं शिकार अपना ॥

शाहज़ादह
वज़ीर सुने इसे दिल से मैं जो कहिता हूं । कि दम उलझता है कई दिन से बार अपना ।

वज़ीरज़ादह
चमन की सैर करो जो इधर उधर बहिलाओ । और बुलबुल से फ़रो कीजिये गुब्बार अपना ।

शाहज़ादह
समाई है दिल वहिशी को सैर मुल्कों की । नहीं खुस आता है अब शाहिरो दियार अपना ।

वज़ीरज़ादह
है ए ग़ुलाम भी मौजूद साथ चलने को । अगर्चे तबा मुबारक पै होन बार अपना ।

शाहज़ादह
निकालो कोई क़वी हीला दिल से पैदा कर । न होवे ता कि सफ़र को नागवार अपना ।

वज़ीरज़ादह
शिकार से कोई बेहतर नज़र नहीं आता । ए हीला ऐसा ही होवेगा पायेदार अपना ।

शाहज़ादह
ए तुमने खूब कहा हमको भी हुआ मंजूर । हो इस फ़रेब से शायद कि कुछ इक़रार अपना ।

वज़ीरज़ादह
अब इसमें कीजिये वज़्ना कोई हम नाखैर । करेगा चाहेगा जो कुछ किर्दगार अपना ।

शाहज़ादह
सलाह वक़्त यही है कि इक क़रीने से । करे न ज़्यादह शिताबी ए कारो बार अपना ।

वज़ीरज़ादह
सफ़र का सामान है तैयार सब मदारीलाल । फ़क़त है शाह की रुख़सत का इन्तज़ार अपना ।

शाहज़ादह
बस अब टली है यही दिल में ऐ मदारी लाल । कुदाइये किसी जङ्गल में राह वार अपना ।

रुख़सत लेना शाहज़ादे का वास्ते शिकार के पदर अपने से दोहा ।

शाहज़ादे का कहिना बापसे
रखता हूं मैं कुछ अरज़ गर अब मरज़ी पाऊं । हाल मैं अपने दर्द का सारा कहिके सुनाऊं ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जवाब देना बाप का शाहज़ादे से

बेटा तुझ पर से मैं अभी सदके हो जाऊं । प्यारे जो कुछ खुशी हो मेरे लिये मंगाऊं

कुन्द शाहज़ादह

वहिशत ने अब दिखाये ये सामां नये २ । होते हैं रोज चाक गिरे बान नये २ ।

दिल में है जाके देखूं बियाबां नये २ । अब कीजिये शिकार गिज़ाला नये २

जवाब पदर शाहज़ादह

निकलोगे तुम जो घर से मेरी जां नये २ । होंगे नहीं ये होसले इम कां नये नये ।

क्या क्या न होंगे रंज मेरी जां नये नये । दिल में जो हैं मेरे मेरे अरमां नये नये ।

शाहज़ादह

जो हुक्म हो तो करूं रोज़ आश कार कहीं । निकालूं इस दिल वहिशी का अब गुबार कहीं

पदर शाह ज़ादह

कहो खुदा के लिये अपना हाल ज़ार कहीं । कि दफ़ा होवे मेरे दिल का इन्तशार कहीं ।

शाहज़ादह

पड़ा तड़पता हूं बेबस में ग़म वहिशत में । रिहाई हो तो करूं जाके अब शिकार कहीं

पदर शाहज़ादह

छुटा जो तू मेरे आंखों से ऐ मये दिन आ । कता कि तरह ज़िगर हो न तार २ कहीं

शाहज़ादह

लिखा है लोह ज़बीं पर मेरे बसद हसरत । फिरेगा होके ये आवारह रोज़गार कहीं

पदर शाहज़ादह

जियोगा बिन तेरे मैं किस तरह से शाह अज़ीज़ । ये जिन्दगी में होवे मुझे नागवार कहीं

शाहज़ादह

ये हीला साफ़ फ़लक कैसा हीला करता है । न शब को चैन है दिन को न है क़रार कहीं

पदर शाहज़ादह

जुदा हो इकबयक आंखें से जिसका लख्ते ज़िगर । पदर को उसके हो क्योंकर भला क़रार कहीं

शाहज़ादह

न मना कीजिये लिल्लाह मुझको जाने दो । ये डर है होन इसी रंज में अपना कार कहीं

पदर शाहज़ादह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुफ़ारक़त हो जिस्म की फ़स्ल की पीरी में । है रहे औरों से लिन भू का भला मुख़ार कहीं ।

शाहज़ादह

जुफ़्तो आप के क़दमों से करती है तामादीर । फिरयेगी तुझे ले जाके कोह सार कहीं ।

परीशाहज़ादह

भुला दूंगा मैं तुझे दिल से किस तरह प्यारे । ये याद तेरी खोजां कि हो न ख़ार कहीं ॥

शाहज़ादह

शिकार के लिये आता हूं ऐ मदारी लाल । मैं ख़ुद न हूं किसी सैयाद का शिकार कहीं ।

परीशाहज़ादह

तुम अपने दिल के तो मुख़्तार हो मदारी लाल । हुआ है ग़ैर के दिल पर भी इख़्तियार कहीं

गाना शाहज़ादे का वक़्त आमद

शाहज़ादे आज निकले हैं घर से सिकार को । देखें शिकार करते हैं किस सह सवार को ।

अबरू कमान तेग़ निगाह और बने हैं तीर । नोंके सिनान शाये कुचों के उभार को । ।

शाहज़ादी

करता है इस दश्त में जो तू आज शिकार । सामने तेरी बरछ़ की तुझ पर हुई सवार ।

छन्द

आया न तुझ को ख़ौफ़ हमारे जलाल का । तूने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का

छूटा हुआ ये सैद तो है मेरे जाल का । बेज़ा है क़स्द तेरा अब इस दम हलाल का

शाहज़ादह

कहती है क्या ये रहे करेगी क्या इज़हार । ज़रा ज़बान को थाम के कर तू होश गुफ़्तार

छन्द

मैंने जो कर लिया है शिकार एक ग़िज़ाल का । बस अब हुआ है तेरे वास्ते मलाल का

परदा उठा के देख लो दस्ते ख़्याल का । होगा असीर और कोई तेरे जाल का ।

शाहज़ादी

सैद को मेरे जो सैद अपना बनाया तूने । ख़ौफ़ कुछ अपनी तबियत में न लाया तूने

जोरियां करना और उस पर है ये सीनेज़ोरी । कहीं कमज़ोर है शायद मुझे पाया तूने ।

बे महाबा मेरे जङ्गल में तू करता है शिकार । अपना नख़चीर है सैयाद बनाया तूने । ।

पीछे इस सैद के थे देर से सहरा में ख़राब । हाथ से मेरे शिकार अब ये छुटाया तूने

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ये मज़ा तू नहीं सैयाद है सैयादी का। । सैदजो अबहै किया अपना पराया तूने
रहम आजाता है हर बार तेरी सूरत पर। वरना इस वक़्त मुझे ख़ूब जिलाया तूने
बेहर तरफ़ीह यहाँ आई थी करने को शिकार। अब शिकार अपना मुझे है फ़ बनाया तूने

शाहज़ादह

कौन है तू जो यहाँ शोर मचाया तूने । मुझ़ बक २ के मेरा मग्ज़ उड़ाया तूने। ।
होसके जाके ख़बर ले कहीं अय एक क़मर। गर है शहज़ोर तो क्या मेरा बनाया तूने
इन तेरी बातों से होता है ए साबित मुझको। है मगर दरनये जागीर में पाया तूने ।
सैद को तेरे भला काहि को करता मैं शिकार। होता शाबित कि जो ये तीर लगाया तूने
आप शरमिन्दा हूं मैं अपनी ख़ता पर वल्लाह। कि मेरे हाथ से ए सदमा उठाया तूने।
जो सज़ा चाहो मुझे दो कि सज़ावार हूं मैं। दाम उल्फ़त में है अब मुझको फंसाया तूने
दस्त सैयाद से मुद्दत में रिहाई पाई। * । फिर उसी कुंज क़फ़स में है फंसाया तूने

वज़ीरज़ादी

प्यारे सच बतला मुझे क्यों है चेहरा ज़र्द। आह लबों पर से हरदम है आह सर्द

शाहज़ादी

किससे जाकर मैं कहूं अपना दुखदर्द। गया है मुझको मारके एक बेदर्द

छन्द वज़ीर ज़ादी

रुख तेरा ज़र्द फूल सा कुम्हला रहा है आज। और अब ग़म का दिल पै तेरे छा रहा है आज
दुख दर्द तेरा जी जो ये अब पा रहा है आज। ये देख २ होश मेरा जा रहा है आज ।

छन्द शाह ज़ादी

कुछ पेचो ताब सा मेरा दिल खा रहा है आज। और रोने के सिवा नहीं कुछ भा रहा है आज
मैं क्या कहूं जो दिल में मेरे आ रहा है आज। आफ़त हज़ार जान पै बहला रहा है आज

वज़ीरज़ादी

वारीतुम अपना दा लबता औ तो क्या हुआ। दिल पर तुम्हारे कौन सा अन्दसा नेहा हुआ
सहिरा में जो गये थे अभी खेलने शिकार। शायद किसी परी का तुझे दग़ दगा हुआ
इन बातों से न तू अपने तईं मत फ़ंसाइयो । इस इश्क़ में बता तो किसी का भला हुआ
है २ ए कैसा २ समाया तुझे ख़याल। * । ये इश्क़ तेरे जान का दुश्मन बना हुआ।
क्यों कर बुझाऊं आह में ये आतिशे ख़याल। दिल में जो अब है मेरे ये शोला लगा हुआ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जंगल में जाके उसकी में करलाती हूं तलाश । दिल्में मेरे है अबाइस दम गना हुआ ।
जाती हूं में तलाश में औरों के मदारीलाल । है जिसकी सारी ज़ात का ये गुल खिला हुआ

शाहज़ादी

इस फ़िक्र में में खुद हूं इलाही ये क्या हुआ । मुरझानतवों को अबतो ये क्या आरज़ा हुआ
सहिरा में एक सेद हुई तुरफ़ बार दान । इक महजबीं का आज मेरा सामना हुआ
रहिता है हर घड़ी मुझे उस माहि रू का ध्यान । दिल मेरा लाख जीसे है उस्पर फ़िदा हुआ
नासेह न कर खुदा के लिये ऐसी गुफ़्तगू । छुटता नहीं छुटाये से ये दिल फंसा हुआ
रह जायेगी हमें ये शिकायत तमाम उम्र । तुम कोन मेरे रञ्ज का सदमा ज़रा हुआ ।
बहिरे खुदा न दिल्को तू कर अब्बे बेक़रार । होगा वही नसीब में जो है लिखा हुआ ।
तदबीर कोई ऐसी बता तू मदारीलाल । निकले गुबार दिल्में है जो कुछ भरा हुआ ।

गाना शाहज़ादी का

याद मोहिं उनकी आवेरी * । तड़फ तड़फ जिया रहि जात * ।
याद मोहि उनकी आवेरी
इत उत फिरत रहत औरन संग * । मोको देत नेक दरसन * * ।
याही सोच में आन पड़ी * * । कोइ उन को जाइ सुनावेरी * ।
याद मोहिं उन की आवेरी
इतना जाइ कहे कोइ उन से * । हम तुमरे दरसन को तरसें * * ।
बिरहा आगिन बजावेरी * * । देत कोउ कैसे बुझावैरी * * ।
याद मोहि उन की आवे री
लाख तोह से कोउ समझावे * । बिन पिया चैन जिया नहिं पावे * ।
दास मदारी बिन शाहज़ादे का * । बयस अकारथ जावेरी * * ।
याद मोहिं उन की आवेरी

तरजीह बंद वज़ीर ज़ादी

सेर गुलशन का कुछ ध्यान हो आली २ । हुक्म भिजवाऊं कि तय्यार हो डाली २
तेरे ही जान का जल्सा है ए बाली २ । हाय ये वक़्त न जाये कहीं खाली २
मेह बरसता है, घटा छाई है काली २ । बुल्बुलें बाग़ में खुश फिरती हैं डाली २
आज की सैर बे अज़ सैर है फ़रदोसबरीं । जिसने देखा उसे फ़ौरन हुई दिल्को तसकीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और तिलस्मात का आलम हुआ आंखों में हज़ों। फिर ख़ुदा जाने कि ए लुत्फ़ मिले या कि नहीं

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली २
फूल फूला है कहीं और हवा ख़ुर्रम। । ताज़गी दिल्को हो दीदार से जिस्के हरदम
अब इकदम के लिये कीजिये गर सुर्पे करम। ये समा नूर के आलम का न होगा कुछ कम

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुस फिरती हैं डाली २
किसी जानिब को ये सब्ज़ा पड़ा लहिराता है। गुले सोसन भी उदा हद्द कहीं दिखलाता है
दीदये अब्र से अश्क़ जो टपकाता है । कब ये सामान पसन्द उसके तईं आता है

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली २
कैसा २ है जमा इश्क का सामान वहां । आप के चलने से हो रौनक़ गुलस्तान वहां।
झूलने गाने का क्या लुत्फ़ है इस आन वहां। दिल्में जो कुछ है वह सब निकलेंगे अरमान वहां

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली २
सहन गुलशन में जो तू चलके ख़रामां हो जाय। अर्के ख़िजलत का हर एक गुले गुमायों हो जाय
नर्गिस आंखों को छिपाकर कहीं पिनहां हो जाय। रंग ये छायेके सब ज़र्द रियाबां हो जाय

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ मे ख़ुश फिरती हैं डाली २
लालगूं बादये गुल रंग का पैमाना हो । सेहन गुलज़ार भी सब सूरत मे ख़ाना हो
पेंग झूलें पै हर एक सिम्त को मस्ताना हो। सूरतों देश के रागों का वहां गाना हो ।

मेह बरस्ता है घटा छाई है काली २ । बुलबुलें बाग़ में ख़ुश फिरती हैं डाली २

गज़ल सब्ज़ परी शाहज़ादी

सैर गुलशन न ख़ुश आई न फ़िज़ा सावन की। फ़स्ल रहती है इन आंखों में सदा सावन की
कैफ़ियत क्या मैं उठाऊंगी भला सावन की। बरी दिलबर होता तो हो सैर कुजा सावन की

यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की
गुलशने दहर मेरी आंखों में है ख़्वार तमाम । और दुनिया के मज़े मुझ को हुये दिल से हराम
मिले हूरों के अगर बाग़ जिनां मुझको मुदाम। ब ख़ुदा बिस्तरे गुल हो मुझे गिल ख़न का मुक़ाम

यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की।
गुलये हंस २ के मुझे और रुलावेंगे वहां । सूरते बादसबा हूं मैं बहुत आह कुनां ।
जिस्म तर है तेरे हो जायगा तूफ़ान अयां। मेरे जाने से न होगा तुझे हासिल ऐज़ां ।

यार बिन किस्को ख़ुश आती है घटा सावन की। जी उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देख उस सफ़ए रुखस को मैं ज़माना भूली । सोसनी लब से मैं मिस्सी का ज़माना भूली ।
पंजए सुर्ख़ से मेहदी का लगाना भूली । ऐसी बेहोश हुई अपना बिगाना भूली ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावनकी । जो उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।
महवे नेज़ारए ख़ुद हूं मैं बुलाऊं मैं असीर । सूरते आइना हूं या कि बरंगे नसवीर
ऐसा सैयादने दिल पर मेरे मारा है तीर । बिस्तरे ख़ाक पे तड़पूं हूं पड़ी मैं दिलगीर ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जो उड़ाये लिये जाती है घटा सावन की ।
क्या दिखाये गी तो अब ऐश का सामान मुझे । गुलके दागों से क्या सर्व चरागान मुझे ।
अब ख़ुदा के लिये मत छोड़ तो इस आन मुझे । जाने जान जान से कर अब नहीं हल्कान मुझे ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जो उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की । ।
नशे इश्क़ से इस तरह छकाया तूने । । अपने बिगानों में मस्ताना बनाया तूने ।
ऐसा झूला मुझे जान झुलाया तूने । । देस सुनवाके मेरा देस छुड़ाया तूने । ।
यार बिन किसको ख़ुश आती है घटा सावन की । जो उड़ाये लिये जाती है हवा सावन की ।

देस गाना शाहज़ादीका

कोई जाय कहो ये मोरी ॥ ॥ ॥ तुम प्रीत लगाय काहे तोरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

मोरे नयनन नींद न आवे ॥ ॥ ॥ दिन रैन तलफ़ते जावे ॥ ॥ ॥
कोई जाके पिया को सुनावे ॥ ॥ ॥ हम तुम बिन व्याकुल गोरी ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

जो हो बिरहा धूम मचावे ॥ ॥ ॥ मोरे हिरदे आग लगावे ॥ ॥ ॥
सब भूल गई चतुराई ॥ ॥ ॥ मैं जरत हूं जैसे होरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

तुम दास मदारी जाओ ॥ ॥ ॥ शाहज़ादे को नेक ले आओ
अब जिन मोह न तरसाओ ॥ ॥ हम प्रीति करी क्या चोरी ॥ ॥ ॥

कोई जाय कहो ये मोरी

तरजीयबन्द मुतज़म्मिन सवाला तअज़ शाहज़ादे

फ़िराक़ यार से क्या २ अज़ाब है दिल्को । ख़याल ज़ुल्फ़में क्या पेचो ताब है दिल्को
कहूं मैं किससे जा कुछ इज़्तराब है दिल्को । ग़र्ज़ कि रंजो अलम बे हिसाब है दिल्को ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।
ग़मे जुदाई के हरचन्द ग़म उठाती हूं । जहां पै शिकवह नहीं पर कभी मैं लाती हूं
बजाय अश्क के आंखों से खूं बहाती हूं । जो दस्त हाल में अपने ये मुज़्तर पाती हूं ।
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
जुदाई उस्की हमें अब तलक सताती है । उम्मेद वस्ल में क्या रूह तन मला तीहै
तपे फिराक़ अब आंखों से खूं बहाती है । न चैन आता है दिल्को न जान जाती है ।
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को । अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
ग़मे फ़िराक़ के सदमें उठाऊं मैं कब तक। ग़मे जुदाई से दिल्को जलाऊं मैं कब तक
शमअ़ कि तरह ये आंसू बहाऊं मैं कब तक। भला ये सोज़ जिगर ... मैं कब तक
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इला ही अज़ाब है दिल्को।
बस अब ये जाने दे बातें तुझे हमारी क़सम। खुदा के वास्ते ये ज़िक्र तूल कर हमदम ।
तेरे कलाम से होता है और रंजो अलम । हमारे दिन नहीं ऐसे कि फिर मिले वह सनम
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को
विसाल यार की तदबीर क्या भला कीजिये। कहां तलक ग़मे हिजरां के ग़म सहा कीजे
कहां से लाइये उस गुल्को और क्या कीजे। सिवाय इश्क़ के ये ... बस पढ़ा कीजे
न उस्का वस्ल है मुमकिन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।
हमें फ़िराक़ है ग़ैरों से उनको सोहबत है। इलाही कैसी मुहब्बत ये कैसी उल्फ़त है।
मैं यां तड़फ़ती हूं वां उन्को ग़ैर अशरत है। ... कहूं का किस तरह आफ़त है
न उस्का वस्ल है मुम किन न ताब है दिल्को। अजब तरह का इलाही अज़ाब है दिल्को।

नसीहत वन्द सुख़न मिल जवाबात अज़ वज़ीर ज़ादी।

जो ऐसे रंज में तू मुबतिला नज़र आये । जिगर न टुकड़े हो क्यों फिर न चश्म भर आये
दुआ क़बूल ये अल्लाह मेरी फ़रमाये । कि तेरा रंजो मुसीबत न मुझको दिखलाये
जो आरज़ू हो तेरे दिल्की जल्द बर आये। खुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
चमन कि सैर करो चलके दिल्को बहिलाओ। विसाल होवेगा उस गुलका तुम न घबराओ
मैं सदके जाऊं ज़रा दिल्को अपने समझाओ। कलाम पर अभी ज़बां पर न दम व दम लाओ।
जो आरज़ू हो तेरे दिल्की जल्द बर आवे । खुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
ज़माना रहता है ... दिगा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कभी फ़िराक़ रहेगा है विसाल गुंचे दहां । फ़लक के हाथों से सच है कि जी को ताब कहां
जो आरज़ू हो तेरे दिलकी जल्द बर आये । ख़ुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
ख़ुदा वह रोज़ कहीं जल्द अब दिखाये तुझे । मये व साल सनम जाने जां पिलाये तुझे
रुलाये ग़ैरों को अल्लाह और हंसाये तुझे । न फिर कभी शबे हिजरां के ग़म दिखाये तुझे
जो आरज़ू हो तेरे दिलकी जल्द बर आये । ख़ुदा करे कि सनम तेरा तुझको मिल जाये
तेरे अलम से मुझे भी अलम हुआ जानी । तेरे ही रंज से मुझको हुआ है ग़म जानी ।
हो बेक़रारी दिल किसतरह रक़म जानी । ग़र्ज़ हुआ है यही अबतो हमव दम जानी
जो आरज़ू हो तेरे दिलकी जल्द बर आये । ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये
तुझे जो देखती हूं फ़र्ते ग़म से तबाह हाल । बताऊं क्या कि जो आता है मेरे जी को ख़याल
बयान ऐसे ख़यालात का बहुत है महाल । मगर ख़ुलासे ये एक अम्र है मुवाफ़िक़ हाल
जो आरज़ू है तेरे दिलकी जल्द बर आये । ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये
तुझे मलूल जो यों देखती हूं मैं हरदम * । बहुत उठाती हूं मैं अपने दिलसे सदमे ग़म
मरारी लाल हमारी हुआ है ये हमदम । रहे न बाक़ी तेरे दिलमें कोई रंजो अलम ।
जो आरज़ू हो तेरे दिलकी जल्द बर आये । ख़ुदा करे कि तेरा यार तुझको मिल जाये

ठुमरी गाना शहज़ादी का रागिनी खटोमें

जबसे सैंयां मेरी सुधि बिसराई * । तड़प तड़प जिय जाये हो * * ।
किन सौतन रोना कर दीना * * । प्यारे को मिल जाये हो * * ।
ऐसे कठिन से प्रीत लगाई * * । मन मेरो पछिताये हो * * ।
अंखियन पाछे प्रीत लगाई ॥ ॥ ॥ मन मेरो पछिताये हो * * ।
नेक मरारी लाल ले आओ ॥ ॥ । शहज़ादे को आई हो * * * ।

तरजीअ बन्द मुतज़म्मिन सवालात अज़ शहज़ादी

शोरीदह हाल हूं मैं बरंगे जरस २ । दौड़ा रहा है सरपे तू मेरे फ़रस २ ।
बेताब हूं मैं अपने पिया बिन दरस २ । एक पल जो गुज़रा समझी मैं गुज़रा बरस २
ऐ अब्र नौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २
हर सिम्त झूम २ के आती है जो घटा । हसरत से देख २ के सीने में जी घटा ।
साक़ी हर एक चीज़ से जी मेरा है हटा । आगे से मेरे जाम बिलौरी को दे उठा ।
ऐ अब्र नौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २ ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैहै नज़र पड़ा मुझे जब से व महजमाल । घुट २ के होगई हूं मैं अब सूरते मलाल ।
गुलशन न जी को भाता है अञ्जन कोई निहाल । उस सर्वक़द का आठ पहर रहिता है ख़याल
ऐ अब्र तौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २ ।
जबसे दिखा गया रुख़ रोशन की वह झलक । नरगिस कि तरह आंखी खुली रहिती हैं पलक
पहुंचाया मेरा हाल जो तूने यहां तलक । ये कबका बदला आज लिया तूने ऐ फ़लक
ऐ अब्र तौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २
खाने कि कुछ हवस है न सोने की कुछ हवस । बाकी अगर है दिल में तो रोने की कुछ हवस
है उसके गम में जान के खोने की कुछ हवस । दरयाव में है अपने डुबोने की कुछ हवस
ऐ अब्र तौ बहार न दे दुख बरस २ । मैं आप मर रही हूं पिया बिन तरस २ ।

तरजीअ बन्द मुतज़म्मिन जवाबात अज़ वज़ीर ज़ादी

ये मौसमे बहार ये अल्लाह का करम । नहरें भरी हैं सूरते उश्शाक़ चश्म नम ।
याक़ूत का है हाथ में लाले के जाम जम । किस वक़्त में ये सर पे तेरे टूटा कोह गम
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम । किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम
बिजली तड़पती है कहीं बादल का जोश है । और चार सू से बाद सबा का ख़रोश है ।
हर एक यार से हम आग़ोश नोश है ॥ और सब्ज़ए चमन कहीं नजहत फ़रोश है
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम । किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम
कोइल चहक रही है पपीहों का शोर है । आवे ख़ुशी को और किसी जानिब को ज़ोर है
दिल को जला रही कहीं आवाज़ मोर है । ज़ेवर से हर शजर भी जड़ा पोर पोर है ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम । किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम
और हिज्र में भला कोई पावेगा लुत्फ़ क्या । आंखों में हो तिलस्म का गुलशन अगर खिला
दिल है कबाब हिज्र में उस यार के तेरा । जल्दी तेरे सनम से खुदा दे तुझे मिला ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम । किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम
इस चर्ख़ कज अदा से ये हासिल हुआ तुझे । माशूक़ से जुदा किया ये कुछ दिया तुझे ।
चाहे अलम में क़ैद है अब तो किया तुझे । दुनिया के लुत्फ़ों ऐशो मज़े से रखा तुझे ।
अफ़सोस इस फ़लक ने किया तुझ पे क्या सितम । किन रोज़ों में जुदा किया तुझ से तेरा सनम

कलाम वज़ीर ज़ादी

मुश्किल तो कभी इन बातों में जिन्हार न हो । नक़द जां देके तु सौदे की ख़रीदार न हो ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिल्कि बेताबी से ये खौफ मुझे आता है । अब कोई दिखे तो रुसवा सरे बज़ार न हो ।
सैर गुलज़ार करो दिल्को ज़रा बहलाओ । इस मुसीबत के तो वल्लाह सज़ावार न हो ।
सब्र कर वह है खुदा दिल्को ज़रा दे तस्कीं । फिर कभी जोश में ये दीदए खूंबार न हो ।
सदमे पर सदमा उठाती हो भला क्यों दिलबर । जानेजां मुझ से किसी तौर से बेज़ार न हो ।
मैं तो हाज़िर हूं तेरे वास्ते ऐ राहत जान । जान तक आवे अगर काम तो इन्कार न हो ।

कलाम शहज़ादी

इस बलामें तो किया तूने गिरफ़्तार मुझे । अब दिखा उसको खुदा के लिये दीदार मुझे ।
हाल अपना नहीं कुछ खुलता है मुझ को जानी । या इलाही ये हुआ कौनसा आज़ार मुझे ।
सैर गुलज़ार करूं देखूं मैं गुलशन कि बहार । एक दम भी अगर ग़म से मिले बार मुझे ।
दिल के बहिलाने कि तदबीर भला क्या कीजे । फ़र्ते ग़म ने तो किया बस कि है लाचार मुझे ।
मन्नतें करती हूं सर अपना क़दम पर धर के । सदके मैं तेरे मिलादे मेरा दिल्दार मुझे ।
क़िते उम्मेद हुई अपने यगानों से अज़ीज़ । दोस्त दुश्मन हुये सब करके खता वार मुझे ।
चश्म उम्मेद थी यारी मुझे जिन लोगों से । कर के बरबाद वही करते हैं हुशियार मुझे ।

छन्द कहिना वज़ीरज़ादी का शहज़ादे से

मुझ पर साबित होगया तेरा मक्र व फरेब । आंख तेरी जिसपर पड़ी उसे हुआ आसेब ।
एक बात तुम से कहती हूं गर हो खफ़ा नहीं । प्यारे तुम्हारे दिल्में मुरौव्वत ज़रा नहीं ।
दिल लीजे जिस का कीजे फिर उससे वफ़ा नहीं । वल्लाह खुद ग़रज़ की मैं हूं आशना नहीं ।
किसने तालीम किया ऐ सितम ईजाद तुझे । खूब हैं मकर ज़माने के अरे याद तुझे ।
शाहदी का जो जंगल में तू करता है शिकार । घेर के लाई क़ज़ा क्या है परीज़ाद तुझे ।
दिल जो हर एक का काबू में तू कर लेता है । कौनसा शहर है ऐसा ये बता यार तुझे ।
खींच देता है शबी अपनि पराई दिल्पर । गर कहूं तू है बजा मानी व बहज़ाद तुझे ।
आ मेरे साथ अगर जुल्फ का सौदाई है । चलके दिखलाऊं अभी खाने बहार तुझे ।
किस लिये अपनी तबिअत में तु होता है उदास । क़फ़स से हिज्र से कर दूंगी मैं आज़ाद तुझे ।
मान कहने को मेरे वर्ना तू पछितायेगा । ये सनम तेरी करेगी अरे बरबाद तुझे ।

जवाब शहज़ादे का वज़ीरज़ादी से

भाता है मुझ को नहीं तेरा नया ऐब । बातें तुझको महल का देती हैं नहीं ज़ेब ।
होता हूं इन बुतों पे मैं हरगिज़ फ़िदा नहीं । इन बे मेहरों बुतों को मुरौव्वत ज़रा नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हासिल है इससे जुल कभी और जफ़ा नहीं । फरजंद इन्द्र का होय कोई या खुदा नहीं ।

बे रहना तूने किया ऐसा जो बरबाद मुझे । सच बता कौन है तू और तेरा नाम बताद मुझे ।

सम किया किसको बताती है ए रश्क परी । छोड़ कर इन बातों से कब आता है कब्याद मुझे ।

रात को नाग़र दिलको मैं फंसा लेता हूं । खूब कहते हैं इस बात से सैयाद मुझे ।

शक्ल तसबीरत सब्बर में रहा करता हूं । किसी सूरत का जो है इश्क खुदादाद मुझे ।

आपके साये में चलता हूं मगर खोफ़ ये है । फिर उठाना न पड़े और कोई उफ़ताद मुझे ।

आरज़ू है यही मुद्दत से दिले वहिशी को । अपने हाथों से करे ज़बह वह जल्लाद मुझे ।

देखिये चलके दिला कूचे जानां के बहार । भूले इस लुत्फ़ से ना गुलशने शेदाद मुझे ।

दोहरा कहना वज़ीर ज़ादी का

ले पियारी मोजूद है तेरा दिल्दार । * । किया था जिसके वास्ते आप को तुमने ख़्वार ।

जवाब देना शाहज़ादी का

तेरे बाइस से हुआ अच्छा सरा कार । तुझ से जियादह कौन है अब मेरा ग़मख़्वार ।

दोहरा कहना शाहज़ादी का शाहज़ादे से

प्यारे तेरे फ़िराक़ में अपना हुआ ये हाल । तुम को भी कुछ रहा भला जानी मेरा ख़याल ।

छन्द

इतने दिनों जो तुमसे सनम मैं जुदा रही । किस दर्दो ग़म में आह में अपना [illegible] ।

बुल २ कि तरह यार में तेरे सदा रही । ओ गुल तेरी तलाश में मैंने जा बजा नहीं ।

जवाब देना शाहज़ादे का शाहज़ादी से ॥

गई जो तू मुंह फेर के दिखला अपने बाल । हुआ ये तेरा देखना जी का बस जंजाल ।

छन्द

तेरे ग़मे फ़िराक़ में ऐसा निढा रहा । हर लहज़ा हर घड़ी में असीरे बला रहा ।

दिन रात मौत ही का मेरा सामना रहा । जाने असीर यार खुदा है बचा रहा ।

शाहज़ादी

हाथ किस रोज़ से झाक अपनी दिखाई तुमने । एक आतस मेरे सीने में लगाई तुमने ।

मैं इसी फ़िक्र में दिन रात रहा करती यकीं । ऐसे बेरहम से क्यों आंख लड़ाई तुमने ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शमा सी अब तो तसव्वर में जला करती हूं । रफ़्ता रफ़्ता मेरी हालत ये बनाई तुमने । ।
रोज़ो शब ज़िक्र तुम्हारा हि रहा करता है । इस क़दर की मेरे दिल्में समाई तुमने । ।
मैं तो वाक़िफ़ न थी वल्लाह अब इन बातों से । मेरे नाहक़ ये बला पीछे लगाई तुमने । ।
अपने दिन अच्छे कुछ इन रोज़ों नज़र आते हैं । की जो ख़ुद हमसे ये आकर के ये सफ़ाई तुमने

शाहज़ादह

चाल उल्फ़त कि न समझे थी सिखाई तुमने । प्यार करने कि सज़ा ख़ूब बनाई तुमने । ।
जिसने देखा वह हुआ दिल्से तुम्हारा आशिक़ । किस्से ये आनो अदा जान उड़ाई तुमने । ।
आरज़ू दिल्की रही दिल हि मेरे वाय नसीब । आतिशे शौक़ ने एक रोज़ बुझाई तुमने । ।
कैसे हम आप की सफ़्क़त का ये किस्से शिकवह । ख़ाक में मेरी जवानी जो मिलाई तुमने
देखकर नरम से सर को सुलाया दिल्से । थी मिसी अपने लबों पर जो जमाई तुमने । ।
दूर हो जावेगी सब बस्ल में से रुक पड़े । हाथ से मेरे जो मुझ से हैं उठाई तुमने । ।

फाग गाना शहज़ादी का

खेल शहज़ादे से आज मैं फाग । + । यह है रे हमारे भाग । + । + ।
अबीर और गुलाल मलो तुम गाओ रंगीन राग । देऊं ये सुहाग । + ।
खेलूं शहज़ादे से आज मैं फ़ाग । + । सिगरी रैन खेल कर खोई गिन गया मेरा राग
बीती रैन भोर तक जाग । + । + । कैसा सोई उठ जाग । + । + ।
खेलूं शहज़ादे से आज मैं फ़ाग । + । अबकी फ़ाग सुन ऐरी सखीरी । + ।
हरसे लागी है लाग । + । + । कहो मदारी लाल से जाकर । + ।
भला भयो है येह फ़ाग । + । + । खेलूं शहज़ादे से आज मैं फ़ाग । + ।

दोहा कहना शहज़ादी का शहज़ादे से

दिखलाया अल्लाह ने रोज़ सईद । + । तेरे आने से मुझे आज हुई ईद । + ।

छन्द

शादी का रोज़ आज ख़ुदा ने दिखा दिया । मेरे तुम्हारे हिज्र का पर्दह उठा दिया ।
रख के खिज़ां ये परदए एहसां बना दिया । गुल्की तरह से ये दिल मुझ्को खिला दिया ।

जवाब देना शहज़ादी को शहज़ादे से दोहरा

जानी फिर मिलना तेरा था एक अमर बईद । अगर हुई अल्लाह की कुछ ऐसी ताईद ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छन्द

सदके ख़ुदा के फ़िर हमें तुमसे मिला दिया। जिस्की न थी उम्मेद वह आंखों दिखा दिया
दिल रात की हँसी वही क़हि कह दिखादिया। और मार बने विशाल को वाहभ पिला दिया

शहज़ादी

आज की रात चलो ऐश मेरी जान करें । अपने इस कलवय अखिजां को परिस्तान करें
दिल में आता है शबे माह में पी के शराब । हम और तुम आज की शब सैर गुलिस्तां में करें
बाद मुद्दत के ख़ुदा ने ये किया रोज़ नसीब। गुहर आरज़ू से पुर कहीं दामान करें।
बारह हिज्र में तेरे यह रहा दिल्को ख़याल। हम किसी तोर से अपने नई हल्कान करें
मिन्नतें मानी हैं दरगाहों में चिल्ले बांधे । कि कहीं आप मेरे घर को दरख्शान करे
ख़्वाब में जब न नज़र आते थे तुम ऐ गुलफ़ाम। कब हम इस झूठी मुहब्बत का भला ध्यान करें
नाम आलम में हो ऐज़ां कि परस्तार यही । गर क़सम अपनी कहीं शाहे ख़ुरासान करें

शाहज़ादह

दिल के पूरे मेरे सब आप जो अरमान करें । तो रहें आप मेरे साथ तो अहिसान करें
दिल्में आता है कि बिछ्वाइये कोठे पे पलंग। चांदनी रात में वहां चल के शबिस्तान करें
हर घड़ी फ़र्त ख़ुशी से यही आता है ख़याल। नक़्द जां अपना तेरे सिर पे से क़ुर्बान करें
अपनी आंखों से मुझे कुछ दिनों ये खौफ़ रहा। फिर दुबारह कहीं बरपा न ये तूफ़ान करें
शमा सैयाद कि मज़ारों पे इसी मिन्नत पर। कभी भूले से मेरी याद मेरी जान करें।
झूठे वादों ने तुम्हारे ये किया हाल अपना । क्यों न इस ग़म में वह अपने नई हल्कान करें
नाम पर जिन्के फ़िदा जान कि परस्तार हैं हम। क्यों न वह आके मदद मेरी हर एक आन करें

बसन्त गाना शाहज़ादी का

मिली रितु बसन्त शाहज़ादह आय । करो मन आनंद सब गाय गाय ✣ ।
कोऊ आन सुनावत मीठी तान ✣ । कोई बांध रही है सुर समान । ✣ ।
कोऊ मस्त भये दफ़ को बजाय ✣ । कोऊ रंग उड़ावन धाय धाय ✣ ।
मिली ऋतु बसन्त शहज़ादह आय
मैं फाग खेलूं शहज़ादे साथ । ✣ । फिर मोहि मिले ना ऐसी घात। ✣ ।
तुम कहो पड़ाबी लाल कुछ और । ✣ । और बसन्त ऋतु रही है छाय। ✣ ।

ग़ज़ल गाना शाहज़ादी का सिन्ध भैरवीं में

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महफ़िल में जमुर्रद परी किस नाज़ से आके। ले जाती है शहज़ादे को घर अपने उठा के।
सोनाथा लबे बाम जो शहज़ादये महरू। अलमास परी को वह इशारे से जताके।
बोसा कभी लेती कभी लगजाती गले से। बेखुद न थे हिन्द में तनहा उसे पाके।
हर बार तअश्शुक से वह लेके बलायें। कहिती थी फ़िदा हूँ मैं तेरे नाज़ो अदा के।
हरचन्द हवस ने तो किया और इरादह। पर रहगई कुछ सोच के वह मारे हया के।

सोना शाहज़ादी और शाहज़ादे का बाम पर और आना जमुर्रद परी का और ले जाना शाहज़ादे का बालाय बाम से बज़रिये सफ़ेद देव के वा छन्द कहना देव को परी से

इहसान है कि ख़्वाल से ये सीमबर जगे। और शक्ल मेरी देख के दिल में ज़रा डरे।
फिरता न मेरे हाल पे जौरो जफ़ा करे। आफ़तन कोई आके मेरी जान पर परे।

दोहरा कहना ज़ुमुर्रद परी का सीमबर देव से

ओ सीमबर देव अब यहां से इसे उठा। पलक कि पलक में इसे घर मेरे पहुंचा

जवाब देना देव का परी से

जाता हूं लेकर इसे मैं तो सोये हुवा। इस घड़ी हमराह मेरे चल ऐ माह लक़ा।

दोहरा कहिना परी का शाहज़ादे से

ख़्वाब से आंखे खोल दो करो इधर को निगाह। तकती हूँ मैं देर से खड़ी तुम्हारी राह।

जवाब देना शाहज़ादी का परी से

नाहक मेरी नींद को खोती है तू आह। उठता हूँ कुछ देर में सोलूं खातिर ख़्वाह

छन्द कहिना परी का शाहज़ादे से

आता है कुछ बहुत तुम्हें आलम जो ख़्वाब को। क्या है नशा पिया मेरे प्यारे शराब का।
पर्दा उठाव रुख़ से तुम अपने नुक़ाब का। जलवह दिखाओ मेरे नंई माहिताब का।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

ग़फ़लत कमाल है मुझे इस वक़्त ख़्वाब का। है शाक मुझको देना अब इस दम जवाब का।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ये चक्र ज़ाये रिन्द है व बादए शबाब का । तेरा सबब ये क्या है बता इज़्तराब का ।

कहना ज़मुर्रद परी का
शाहज़ादे से

क्या सो रहे हो नींद में उट्ठो तो ख़्वाब से । दिखलाओ अपना ये रुखे रोशन नक़ाब से
अंगड़ाई ले रहे हो जो इस पेचो ताब से । + । दिल में अभी उमंग है प्यारे शबाब से ।
हैं चूर आज सारे मेरे दिल के वलवले । लग जाउ तुम गले मेरे प्यारे शिताब से ।
उल्फ़त ने तेरी ऐसा किया दिल में मेरे घर । नक़्शा ये हुई इसी खाने ख़राब से । + ।
ये भी तो घर तुम्हारा है प्यारे नहीं मलूल । महिला में आओ जी यहीं चंगो रुबाब से
फ़ुर्क़त हुई तुझे तेरे माशूक़ से बले । पर अब लगाओ दिल इसी हसरत कबाब से
मर के से पन जतन करै हैं तुम मदारीलाल । ये हुआ जनाब रिसालत मआब से ।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

क्यों बार २ छेड़ती है मुझ को ख़्वाब से । बाज़ आया इस तरह में सवालो जवाब से
शोख़ी भी बात तेरी नहीं कम इताब से । ले जा के मार डाल जो छूटों अज़ाब से
तू कौन है ये किसका है घर लाया मुझको कौन । बतलादे इसको मेरे तईं तू शिताब से
बेदख़ हुआ हूं आके तेरे दाम में असीर । ख़ालिक़ बचादे अब तू मुझे इस इताब से
क्यों कर बुझाऊं आतिशे दिल को मैं नासिहा । प्यासे को भी हुई कहीं तस्कीं शराब से
इस बेकसी में है न कोई यारो आशना । कर सकता नाम भी तो नहीं मैं हिजाब से ।
दुनियां में दोस्त यार रहें ऐ मदारी लाल । तालिब हूं रोज़ो शब में यही बू तराब से ।

दोहरा कहिना परी का शाहज़ादे से

तेरी सूरत शक्ल पर मैं सदक़े कुर्बान । दुनियां में ऐसे भी पैदा हुये जवान ।

जवाब देना शाहज़ादी का परी से

मो कोई जीवे कोई खोवे कोई जान । इस से हम को क्या ग़रज़ बतला ऐ नादान

छन्द कहिना ज़मुर्रद परी का
शाहज़ादे से

जाती है जान तुम पे इधर रुख़ ज़रा करो । मेरी तरफ़ से दिल में सनम अपने जा करो
हाज़िर हूं सब तरह चाहे जफ़ा करो । लेकिन न अपने पास से प्यारे जुदा करो ।

जवाब छन्द में देना शाहज़ादे का परी को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहिलाई कुछ मैं तुम से नहीं औ दिया करे । मरते हो तुम जो हम पै तो प्यारे मरा करे ।
बरबाद अपनी उम्र को योंही किया करो । और घर में बैठ दस्त तअस्सुफ़ मला करे ।

तर्जीह बन्द कहना परी का शाहज़ादे से

तुम से रग़बत हमें और तुम को ये नफ़रत दी है । वाह अल्लाह ने क्या तुम को तबियत दी है । + ।
हमने माना कि तुम्हें हुस्न की दौलत दी है + । पर हमें भी तो तेरी इश्क़ की सरवत दी है ।
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हमको भी मुहब्बत दी है ।
हमतो यों जान दें तुमपर तुम्हें है कुछ न ख़याल । तुम हो उसके मलब्बत में हमेशा खुश हाल ।
क्योंकि इस बात का हम को न भला होवे मलाल । कर दी शम्अ में जौं मैं हो गई हूं मिस्ले हलाल
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है ।
रोज़ परखा तेरा मक़सूम ओ सुलूके दिलदार । सैंकड़ों तरह के हर रोज़ उठाये आज़ार ।
रोज़ ये मेरी ख़ुशामद करो और अज्ञा शुमार । इस मुहब्बत का नतीजा है यही आख़िरकार
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
मैंने अब पीछे तेरे अपनी जवानी खोई । पर गले से तेरे लग कर न किसी दिन सोई
अपनी तक़दीर के हाथों से सदा मैं रोई । हम क्या इसको तेरी जान पे आफ़त बोई ।
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है ।
आज ख़ातिर से तो ऐ यूसुफ़ मानी मेरी । बैठ आगोश में आकर कहीं जानी मेरी
तुमने इस वक़्त जो ये बात न मानी मेरी । इस सुख़न पर है बस अब ख़तम कहानी मेरी
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है
तुझ पे अपनी ये तबियत जो न आई होती । फिर हवा काहे को हम को ये समाई होती
नाज़ बरदारी न यों तेरी उठाई होती । + । फिर कभी आपने क्यों आँख दिखाई होती
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है ।
जाने जां तुझ को भला क्या रे समाई ऐसी । आपने बदली जो इस वक़्त रुखाई ऐसी ।
कौन सी बात तुम्हें अपनी न भाई ऐसी । इत्तफ़ाक़न वो गई दिल में बुराई ऐसी । + ।
ऐ सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है । उसी अल्लाह ने हम को भी मुहब्बत दी है ।

जवाब देना शाहज़ादे का परी से

गो मेरी शक्ल ने तुझ को चाहत दी है । + । पर मेरे दिल ने मुझे तुझ से अदावत दी है ।
किससे जा कहिये फ़लक ने जो ये आफ़त दी है । मर्ज़ ग़म के तड़ाने की अलामत दी है ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नहीं अल्ला ने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
बारहा तुझ से कहा मैंने मगर न हुए ख़याल । साथ मेरे तेरे हरगिज़ नहीं होने का विसाल ।
बन गई तुझसे जो मेरी ग़रज़ ह फ़िल हाल । जियादह चाहने तेरी है गी हुई मेरी जंजाल ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
मुझसे नाहक़ किया करती है हरदम तकरार । जानती है कि है इस बात से मुझको इनकार
मैं हूं हूर को तो मुक़ाबिल हो मुझे है इक़रार । पर मेरी आँखों में जो गुल तो नज़र आती है
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
चैन आराम मेरा भी तो है तूने खोया । अपने दिलबर किन छाती से लपट कर सोया
हर घड़ी क़ैद में तेरे मैं हमेशा रोया । घर तेरा ख़ाने ज़ंजीर मुझे है गोया ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
रूठी लाज़िम नहीं क़स्में तुझे खानी मेरी । अरी मुश्किल है हर इक बात आनी मेरी
तू जो है बन के लगी पीछे दीवानी मेरी । बस तेरे हाथ से है जान ऐ जानी मेरी ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है ।
दिल में उस गुल कि मुहब्बत न समाई होती । तो मेरे तेरे बिला वजह सफ़ाई होती ।
रोज़ काहे को भला ऐसी लड़ाई होती । ये बला सर पे न फिर मैंने उठाई होती
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है
थी न जो ज़ोर उठाने की समाई ऐसी । तुमने फिर क्यों थी न बिस्फ़ल ये लगाई ऐसी
अपने करने की सज़ा आप ये पाई ऐसी । न करोगे किसी दिलबर से बुराई ऐसी ।
नहीं अल्लाने तुझ को मेरी उल्फ़त दी है । मेरी तक़दीर ने मुझ को ये मुसीबत दी है

दोहरा कहिना परी का शहज़ादे से

जाती है हरदम यहाँ अपनी तुझ पर जान । तुझ को मुतलक़ है नहीं जानी मेरा ध्यान ।

छन्द

देख तो आँख उठा के कि क्या ख़ुश अदा हूं मैं । मुझसा नहीं जहाँ में वह महलक़ा हूं मैं
तेरे सनम से तूही बता बदनुमा हूं मैं । कम कुछ अदा ओ नाज़ो करशमा में क्या हूं मैं

जवाब देना शहज़ादे का ज़मुर्रद परी को दोहरा

मैंने कितने घर किये दुनियाँ में वैरान । अरी मैं आफ़त क़हर हूं नादां मुझे न जान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छन्द

उस दिलरुबा का आशिक़ शैदा हुआ हूं मैं । सदक़े हूं तुझसे उसपै कि जिस्से फसा हूं मैं
ऐसे को छोड़ कर के तेरा आशना हूं मैं । नादान अपने हाथ से आपी बना हूं मैं ॥

ग़ज़ल

रोबरू उसके तू करता है मेरा प्यार नहीं । तेरे माशूक़ से क्या हूं मैं तरहदार नहीं ।
गुलशने देहर में वह ग़ैरते शमशाद हूं मैं । कौन क़ुमरी कि तरह मेरा गिरफ़्तार नहीं ।
आरज़ू रखते हैं परियों की सदा जिन्न वशर । आशिक़े ज़ार तू मेरा मगर ऐ यार नहीं ।
कहां खुरशैद दरख़्शां कहां शमा फ़ानूस । रोबरू मेहर के मशाल कभी दरकार नहीं ।
दीं हैं अल्लाह ने जो आंखें सदा परियों को । हरगिज़ इन बातों से इन्सां को सरोकार नहीं ।
है फ़ क़ीजा है कि तुझसा तुझे दिलदार मिला । पर मेरी क़दर तुझे ऐ बुत ऐयार नहीं ॥
खाके कहती हूं इस वक़्त सुलेमां की क़सम । जुज़ तेरे ग़ैर की उल्फ़त मुझे ज़िन्हार नहीं ।

ग़ज़ल शाहज़ादह

खूबिये हुस्न का तेरे मैं तलबगार नहीं । ये तेरा हुस्न तो मुबारक मुझे दरकार नहीं ।
तू भला क्या है जो उस गुल के मुक़ाबिल होवे । चांद भी उसके रुख़े पाक सज़ावार नहीं ।
लौंडियां बांदियां उसकी तो हैं तुझसे बिहतर । तू ग़लत कहती है तुझसा कोई ज़िन्हार नहीं ।
सामने चांद के होता नहीं हीरे को फ़रोग़ । लाल से ज़्यादा गरां कुछ दुरे शहवार नहीं ।
सैकड़ों परियां तसद्दुक़ हैं मेरी गुलरू पर । इस तरह का कोई दुनियां में तो दिलदार नहीं ।
मैंने माना कि तू है हुस्न में यकताए जहां । खोटे दामों से तेरा हूं मैं ख़रीदार नहीं ।
इससे क्या काम तू का लाख से उल्फ़त पैदा । एक इन बातों का प्यारे मुझे ज़िन्हार नहीं

शहज़ादी का महफ़िल में आकर गाना

सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती । बैरी है हमार रहत दिन राती ॥
बिन शहज़ादी नहीं नींद बिसाती । मोहि गिनत नखत अब रैन जात है सारी
अजी तलफ़ तलफ रहूं सेज में दै मारी । घड़ी उठत पलङ्ग पर घड़ी हूं जमीं पै जाती
अजी अब भला कैसे धीर धरे मन मोरा । नहीं मिले चंद से कोप जियाउ चकोरा
अजी मदारी लाल दोस दे मोरा
नहीं मिटती मिटाये सुख से करम की पाती । सखी यही सोच मोरी आह जरावत छाती

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोहरा कहिना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी से

देखो लोगो ले गया कोई मुझ को लूट । आह मेरी तक़दीर गई अब सारी फूट

छन्द

इस चोर का पता कहीं जाकर लगाऊं मैं । क्या २ करूं न हाल अगर उसको पाऊं मैं ।
इस चोरी का मज़ा अभी उसको दिखाऊं मैं । शहज़ादा अपना छीन के उससे ले आऊं मैं ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को

प्यारा तेरा हाल सुन गये होश सब छूट । आता है दिल में यहीं लीजे छानी कूट ।

छन्द

आता नहीं है अक़्ल में किस तरफ़ जाऊं मैं । उस बेख़बर का जाके ठिकाना लगाऊं मैं
क्या क्या न उसके पीछे बलायें लगाऊं मैं । जैसा रुलाया उसने भी उसको रुलाऊं मैं ।

ग़ज़ल शहज़ादी

क्या क्या दिखाये चर्ख़ सितमगार देखिये । जो आगे आये बस उसे लाचार देखिये ।
गुलचीं को चाहिये नहीं बुलबुल पै ये सितम । बरबाद सारा कर दिया गुलज़ार देखिये
कैसा था चोर ले गया शहज़ादे को उठा । हरगिज़ छुआ न ये ज़र वो दीनार देखिये
आई न रास मुझको कभी ये शबे विसाल । खोया न आख़िर शब को मेरा यार देखिये
मिटती नहीं कभी अरी ये होने वाली बात । नाहक़ जो मुझसे करती है तकरार देखिये
उम्भर मिला हमें न मज़ा इस जवानी का । योंहीं चलाये हुस्न तरहदार देखिये ।
दिल में ये आरज़ू है कि उस गुल बदन के साथ । कुछ लुत्फ़ पीके बादए गुलनार देखिये

ग़ज़ल वज़ीरज़ादी

तेरी बग़ल में जब न तेरा यार देखिये । क्योंकर न दिल में सैकड़ों आज़ार देखिये
तक़दीर से मिला मुझे फ़स्ले बहार में । गुल के यवज़ न सी वह आखार देखिये ।
बारी ये चोर है नहीं ये सीनेज़ोर है । तेरी बग़ल से गुम हो तेरा यार देखिये ।
मैंने कहा था वस्ल में कोठे पै तू न सो । आख़िर न पाया सदमा दिलदार देखिये
इस सानिहे पै आता है क्या २ नहीं ख़याल । बजा है जानेजां मेरी गुफ़्तार देखिये ।
हैं हैं न वस्ल भी तुझे जानी हुआ नसीब । और हो गई तू हिज्र में बीमार देखिये ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिल्में ये थी हवस कि मिलाकर गये विसाल। शहज़ादे शहिज़ादी को सा सार देखिये।

शहज़ादी का गाना

विन पिया रात लगें मोहि भारी + । सखी वर्षा रुतु अधिकारी + ।

विन पिया रात लगें मोहि भारी

दामिन दमक दमक दमकारी + । कोयल कूकत कारी + + + ।

पापी पपीहा मेरो प्रान लेत है + । मैं बिरहा की मारी + + + ।

विन पिया रात लगें मोहि भारी

मेघवा गरज गरज घहराई + । बूंद परत अधिकारी + + ।

नैन नींद गई है उन बिन + + । तलफत में रई भारी + + ।

निस दिन जरत बरत बिरहा में + । उठत नहीं दुख भारी + + ।

कहो मदारी लाल पिया से + । अब तो लेवो सुध हमारी + + ।

दोहरा शहज़ादी

हे २ दिल्को मेरे ले गया वह तो मेरे निकाल। तड़पा करो मैं यां पड़ी रोती रही न ढाल।

जवाब वज़ीर ज़ादी

आया ये अफ़सोस है इस दम मुझे कमाल। दिल्वर का किस वक्त में तुझको हिया मलाल

ग़ज़ल कहिना शहज़ादी का वज़ीर ज़ादी से एक एक शेर में

बैठी हूं जिसपे आह में अपना लगाये दिल। वह देखबेन आये मेरे ज़ख़्म हाथ दिल

जब से वह ले गया मेरे दिल्को निकाल कर। छाती पकड़ के रह गई मैं कहके हाय दिल

आजाय इक दम के लिये गर वह मेहलक़ा। कुछ दर्द की कहानी तो अपनी सुनाये दिल

किस्तरह उस्की याद न आठों पहर रहे। जिस्के सबब से प्यारे मज़ा कुछ उठाये दिल

सदमे गमे फिराक़ के जिस्ने उठाये हैं। इन बेमुरोव्वतों से वह अपना फंसाये दिल

दाम बला है नायर दिल्के फंसाने को। गेसुये यार हैं नहीं ये हैं मिलाये दिल।

क्या २ दिखाये दिखिये आगे मदारी लाल। क़ाबू में हो गया है ये अब तो पराये दिल

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का शाहज़ादी को एक एक शेर में ॥

बारी मैं कोई दम तो भला चैन पाये दिल। इस ग़म में कोई और न सदमा उठाये दिल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गर आहोव नाले का हो तेरे दिलै कुछ असर। दामन पकड़ के उसका अभी खींच लाये दिल
मैं वह से कहि थी न दे दिल को हाथ से । देखा न आखिर शकों य तूने बफ़ाये दिल
ये जान चाहे दोस्त कहीं इस ज़माने में । होवे जो अपने दिल से कोई आशनाय दिल
हो दर्द कुछ अगर सहे न अपनी जान पर । दर्दे ग़मे फिराक़ को क्यों कर उठाये दिल
जो कुछ हुआ है तेरे ये क़िस्मत जो लिखा। ज़ुल्फ़ों में फंस्के सैंकड़ों भटके उड़ाये दिल
अब तो मदारी लाल यही क़ौल है मेरा । जिस्को फंसाले चर्ख वह अपना लगाये दिल

मलार गाना शाहज़ादी का

बहं शोर बदरिया छाई + + । बड़े २ बूंदन से घिर आई + ।
बिजुली चमके मेघा बरसे जिया मोरा डरपाई । अब तो मदारी लाल शाहज़ादे बिन कुछ मोहि न सुहा

फाग गाना शाहज़ादी का

मोहि उन बिन कल न पड़े

कहा करूं कुछ बन नहिं आवे + । रैन नहिं धीर धरे + + + ।
प्रान हमारे बस गये उन में + । चितसे नहिं उतरे + + + ।

मोहि उनबिन कल न पड़े

ढूंढ फिरी मैं सगरे नगर में + । नैनन नीर भरे + + + ।
दास मदारी लाल पिया बिन + । जोबन जात ढरे + + + ।

मोहि उन बिन कल न पड़े

गाना शाहज़ादी का बंगले में

मोरा जिया मानेना

बिन पिया के लाख तरह समझाऊं + । समझाऊं सो मोरा जिया मानेना + ।
हमको छोड़ रहे सौतिन घर + । मन में है बिस खाऊं + + ।
बिस खाऊं सो मोरा जिया मानेना । कहो मदारी लाल से जाकर + ।
तुक शाहज़ादे को पाऊं + + । सो मोरा जिया माने ना + + ।

ठुमरी गाना शाहज़ादी का शाहज़ादे के फिराक़ में

ढले जात जोबनवां रे दिन दिन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उनही पर निस दिन ध्यान लगाये + । श्याम सुन्दर पर जियरा गँवाये + ।
दिन है रैन मोहि तलफ़त बीती + । रात गई तारे गिन गिन + + ।

ढले जात जोवन वारे दिन २

जो चाहें तरवर की छैयां + + । गौना लेन आये नहीं सैयां + +
यही सोच मोहि रहत पल २ + । बीती जात वैस छिन २ + +
रूप सरूप के स्वांग उतारे + । बिना बताये गुरू कर हारे + +
मान नहीं काहू के राखे + + । गिरप गये चाहे जिन २ +

ढले जात जोवन वारे दिन २

गाना शहज़ादी का जुदाई की हालत में

आज मोरा जियरा नहीं माने + । ऋतु पावस से बिछुड़े शहज़ादे + ।

आज मोरा जियरा नहिं माने रे

चहूँ ओर से उमंड घुमंड आये + । कारे २ बदरा अधिक डराये + ।
सूनी सेज अँधेरी रतियां + । हमरी बिथा को जाने रे + ।

आज मोरा जियरा नहिं माने रे

ज्यों ज्यों बूंद परत अधिकारी + । त्यों त्यों हिरदे लगत कटारी + ।
बिना मदारी लाल पिया के सुखचैन भुलाये। आज मोरा जियरा नहिं माने रे + ।

रागिनी पर्ज में शहज़ादी का गाना

मन धीर धरत हूँ दिन गिन २ + । रूपा निधान देउ दरसन + ।
इन नहीं जात प्रान हमरे तुम बिन + । मन धीर धरत हूँ दिन गिन २ ।
काहू की मैं एक न मानूं + । लाख कहे कोऊ गिन २ + ।
बिना पिया सुन एरी सखीरी + । कलन पड़त मोहिं घरी पल छिन ।
मन धीर धरत हूँ दिन गिन २ । कहा करूं बिस खाय मरूं + ।
मिल जाये बसो सौतिन गिन २ । कहो मदारी लाल पिया से + ।
बीती वैस शहज़ादे बिन + + । मन धीर धरत हूँ दिन गिन २ + ।

तर्जीय बन्द पढ़ना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी की तरफ़ मुतवज्जेह होकर ॥ + ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आलम पर अपना रंग छिपाया बसन्त ने । जोड़ा बसन्ती सब को पिन्हाया बसन्त ने ।
जोबन नया हर एक का बनाया बसन्त ने । दिलों में उमङ्ग का शोर मचाया बसन्त ने ।
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
है जो अपने यार से इन रोज़ों कामियाब । पीते हैं जे़ग साया वह अंगूर की शराब ।
ऐशो निशात में वह बसर करते हैं शबाब । दुनियां के लुत्फ़ आप उठाते हैं बे हिसाब
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने
मेरी बग़ल में आज जो होता वह खुशख़राम । मैं भी मिटाती आज के दिन हसरतें तमाम
वो से किनार ही में बसर करती सुबह व शाम । पीती व शाल में मये इशरत का भर के जाम
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
जिस सिम्त आंख उठा के नज़र कीजिये ज़रा । दाऊदी गेंदे से है चमन का चमन भरा ।
दिखला रहा है खल्क़ को अपनी वह खुश अदा । फ़स्ले बहार का ये ज़हूरा है जा बजा ।
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।
गुलदस्ता हाथों पर लिये हर जाये गुलउज़ार । दिखलाते फिरते हैं अपने जोबन का वह उभार
जुल्फ़ों में अपने हुस्न के हैं बराकि पर खुमार । नाज़ो अदा से करते हैं आशिक़ को बेक़रार
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग दिखाया बसन्त ने ।
आता है अपने जी में यही ऐ मदारी लाल । सब छोड़ छाड़ कीजिये अब जोगन का ख़्याल
मिलता मुझे भेस में शायद वह नौनिहाल । वर्ना अब इस तलाश में रुगड़ा है इन फ़िसाल
सब गुलशने जहां को खिलाया बसन्त ने । लेकिन मुझे ये दाग़ दिखाया बसन्त ने ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादी को तरजीय बन्द में

बाग़े जहां में रंग मचाया बसन्त ने + । खिलक़त को ज़ाफ़रानी बनाया बसन्त ने ।
जोशे जवानी दिल में छाया बसन्त ने । पज़मुरदह खातिरों को खिलाया बसन्त ने
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
अफ़सोस इन दिनों में जो हिज्रां के ग़म सहे । औरमौसमे निशात में जी मार कर रहे ।
वह हंसना बोलना है न अब है वह चहचहे । और अश्क फूट २ के आंखों से हैं बहे
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने । तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने ।
जो हिज्र में बहाते आंखों से खून नाब । उनको ए कब खुश आती है कैफ़ियत शराब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुलशन को देख २ के होता है दिल कबाब। लाले कि तरह दाग़ वह खाते हैं बेहिसाब।
है २ ग़ज़ब बहार दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
खुशबू से गुलों के मुअत्तर हुये मशाम। बादे बहार का ये जहाँ पर है फ़ैज़ आम।
हर शख्स को खुशी है हरएक को धूम धाम। खिलकत का चार सू है गुलों पर है इज़दहाम।
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने।
सोसन का और लाले का तख़्ता जो है खिला। दिखला रहा है हुस्न का आलम नया २
क्या तुझ से मैं कहूँ कि जो इस वक़्त है समा। लेकिन बग़ैर यार ये है सारा बदमज़ा।
है २ बड़ा ग़ज़ब ये दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने।
आते हैं देखने को तेरे हुस्न की बहार। करती जो तू उमंग से अपना नया सिंगार
होता लिबास तेरा बसन्ती मसाले दार। नरगिस चुराती आँख तुझे देख बार २
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने
आया ए कैसा २ तुझे अबकी माहो साल। दिल की लगी हुई का है मिटना बहुत मुहाल
जी में समाया आह जो अब जोश का ख़याल। जो कुछ कहो वह सब है बजा ए मसीलाल
है २ बड़ा ग़ज़ब ए दिखाया बसन्त ने। तुझ से तेरे सनम को छुड़ाया बसन्त ने

ख़्वाब से जाना शहज़ादी का आलम

जुदाई में

बिन पिया कैसे कलपाये जिया मोरा
लाज की मारी बिरह की बिना कंत रहा नहीं जाय
जिया मोरा पिया बिन कैसे कलपाये मैं जल बिन
नल फ़न जैसे बिकल बिकल रह जाये मोरा मोरा
हास सदारी बिन शहज़ादा घड़ी पल छिन में जाय जिया मोरा

छन्द शहज़ादी

उल्फ़त अब मा बाप की आज के दिन छोड़। चलके सहिरा की तरफ़ घर से मुहको मोड़

जवाब वज़ीरज़ादी

खाक बदन पर सब मलो छोड़ो ये संयोग। रूयें मेता इस हाल पर अपने पराये लोग

छन्द कहिना शहज़ादी का

मिला अगर इस भेस में मेरा वह दिलदार। नहीं होगी इस अम्र पर अपनी जान निसार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जब अपना दोस्त यार से अपने जुदा रहे । फिर जिंदगी लुत्फ भला कहिये क्या रहे
बन का फ़क़ीर खोज में उस्की सदा रहे । इस नाम पर फ़क़त दिलो धूनी रमा रहे ।

कलाम शहज़ादी का

जोगिन का भेस आज मैं अपना बनाती हूं । घर बार सारा छोड़ के धूनी रमाती हूं ।
कपड़े रंगा के गेरुये तन पर जमा के खाक । मिट्टी में अपनी ऐश को देखो मिलाती हूं
जी खोल कर के खूब की दुनिया की सल्तनत । कुछ रोज़ो अब फ़क़ीरी का भी हज़ उठाती हूं
है २ ओ नसीब क्या तूने अब किया । शहज़ादे से मैं शहर में जोगिन कहाती हूं
निज़ा रहा मेरा चश्म फलक को जो था मुहाल । अब दर बदर हो अपने तईं मैं फिराती हूं
छिपता नहीं छिपाये से आलम ये हुस्न का । सौ २ तरह अपने तईं मैं छिपाती हूं ।
जोगिन का भेस करके मैं आई मदारीलाल । तक़दीर अपनी आज के दिन आज़माती हूं

जवाब वज़ीरज़ादी का

तेरे लिये मैं अपने तईं अब मिटाती हूं । सारा सिंगार उतार के जोगिन बनाती हूं
तन पर भभूत मल के परेशां कर अपना हाल । उस बुत के आनो ध्यान पै आसन जमाती हूं
दुनिया की ऐश छोड़ सजा जोग का लिबास । रो २ तेरे हाल पै तन मन जलाती हूं ।
एक दिन वह था जो थी यही पोशाक ज़र निगार । और आज तन पे जोग का सामान सजाती हूं
है दुश्मनों को भी मेरे अहवाल पर ये ग़म । रोने में जब मैं आह के नारे उठाती हूं
होता है और बलन्द सिवा शोलये जमाल । जूं २ मैं उस्को खाक के अन्दर दबाती हूं
हमराह सीम तन को लिये ऐ मदारी लाल । शहज़ादी और मैं ढूंढने उस गुल को जाती हूं

गाना शहज़ादी का

मैं तो बन कर जोगिन जाऊं शहज़ादे को ढूंढ ले आऊं । कानन मुन्द्रे गल बिच सेली अंग भभूत रमाऊं
अपने पिया के कारन सजनी बन २ ढूंढन जाऊं । ओढ़ बघम्बर सिर से अपने घर २ अलख जगाऊं
काहू से कुछ काम नहीं है मैं तो उनके गुन गाऊं । मन मेरो रहि २ तलफ़त है गेरुवा वस्त्र रंगाऊं
देश विदेश में दास मदारी बैरागिन पिया की कहाऊं । शहज़ादे को जाके ढूंढ ले आऊं ।

कलाम शहज़ादी का शिकायत आमेज़ गर-
दिश अफ़लाक से

ऐ फ़लक कैसा ये दिन आह दिखाया हमको । शाही छुड़वा के जो अब जोगी बनाया हमको
मिस्ले गुल चाक गिरेबां है दामन सुर्ज़ए । किसकी उल्फ़त का ये सौदा है समाया हमको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यानो दिल चस्प मकानोंमे रहा करती थी। अब दरख्तोंका भी मिलना नहीं भाया हमको
शाह़ की ड्योढ़ी तक आना भीहमेंजो इकबार। काटना मंज़िलोंका अब ए खुदा आया हमको
खाक पासे लगेबनूर के बर्गे लेउठने । अभी गर्दिश ने असर अब यह दिखाया हमको
किस तरह होगाये तेरे ये मेरे ख्वालिक़ मेरे । पानी में इसलिये हैजो फ़रद छिपाया हमको
जिसजगह बैठ गयेबैठ के उठना है मुहाल। नातवानी ने यहां तकहै सताया हमको ।

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाहज़ादी को

हाय तक़दीर ये क्या तूने दिखाया हमको । बिस्तरे गुल्से तबे खाक बिठाया हमको ।
खाक तन पर मली और सेली गले में डाली। हाय इस हाल से सहिरामे फिराया हमको
फ़र्शे गुल पर भी नज़ाकत से न आतीथीनींद। करके उरियाँ वहीं काटो पे सुलाया हमको
कभी भूले से न रक्खाजो था नोरस्ते पेक़दम। दरबदर भेस मेंजोगिन के फिराया हमको
चैन गुल खानेमें करते थे सोइतबल्क़ तोमें। रेन मेंजलतीहुई लाके सुलाया हम को
गाह इन्सों की कोसोंनहीं आतीहै नज़र। कभी वहशत ने ये भी ध्यान सिखाया हमको
चलके दो एक क़दम खाकमेंगिरपड़तीहूं। अजरहै लुत्फ़ किसीनेजो उठायाहमको

ग़ज़ल गाना शाहज़ादीका भैरवी में

बनके जोगिन ढूंढने शाहज़ादे को अब मैं चली। देखूं अब आगे निकाली क्या है दिलकी बेकली
फाड़कर सिंगार में फिर रेशमा का सारा लिबास। पहिने लेकर तनपे सब कपड़े रंगा कर सन्दली
लोगो बतलाओ मुझे उसगुल के रहिने का निशान। किस तरफ़ जाऊं भला औ कौनसी ढूंढूं गली
वह मदद कोअं करेंगे ताआके चक्के इमत्तिहां है मदारी लालभी तू एक गुंचा मानेस्तली

दोहरा शाहज़ादी

प्यासी हूं मैं देरसे मिलाहै अब तालाब। कहिये तोमैं ठहर के पीलूं थोड़ा आब

जवाब वज़ीरज़ादी

सिद्दत से इस धूपकी हूं मैंभी बेताब । इन्हीं दरख्तों के तलेको ईदमहूं सैराब।

दोहरा शाहज़ादी का कहिना वज़ीरज़ादी से

देखो ए तुमसी मनन् शाहज़ादी का हाल । पानी में से ले गया कोई हाथ निकाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग़ज़ल कहिना शहज़ादी का वज़ीरज़ादी से

आहों से खाक उड़ाते हुये बे शतर चले । मिस्ले बगूले गिर्द में आलूदह पर चले ।
निकले थे एक कमन्द के हम तो तलाश में । गुलफ़ाम शहज़ादे को हम आप कर चले
सब्ज़े की तरह उगते ही पामाल हो गये । इस गुलशने जहां से बे बहरे ह़र चले
उसको भी अपने हाथ से खोया है ऐ नसीब । बनकर फ़कीर जिस्के लिये छोड़ घर चले
जंगल में अपनी उम्र बसर योंहीं कीजिये । क्या जायें मुंह लगाके जो बरसों में घर चले
उस गुल शुरा से जाके यही कहियो ऐ सबा । बीमार बेवतन तेरी फ़ुरक़त में मर चले
जाना है साथ २ मुझे भी मदारी लाल । तस्वीर अपनि अब हमें लेकर किधर चले

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शहज़ादी को

पत्थर एक और छाती पे हम आह धर चले । शीरीं को कोहकन के लिये ज़ाया कर चले
ऐ पीर चर्ख डाला ये क्या तूने तफ़र्रुक़ह । शहज़ादा तो कहीं गया और हम किधर चले
बर आई अपने दिल्की कोई भी न आरज़ू । नाशाद ना मुराद फिरे चश्म तर चले ।
रह २ के अपने दिल्को यही आता है ख्याल । आये थे किसलिये यहां क्या काम कर चले
पहुंचे हमारे बाद कहीं खाक क्यों तलक । बैठे हैं इस तलाश में बादे शजर चले ।
कैसी लगी हवा मेरे नख़्ले मुराद को । शाखे गवज़्न कि तरह हम बे समर चले
जाकर के और भी कहीं देखें मदारीलाल । यहां से उठा के इसलिये दिल कूच कर चले

दोहरा कहिना शाहजिन का वज़ीरज़ादी से

कौन हैं आप बताइये मुझे अपना नाम । जो कुछ होसके करें उसे अन्जाम ॥

जवाब देना वज़ीरज़ादी का शाहजिन को

कहते हैं सबसीमतन इस आसी का नाम । शहज़ादे के वास्ते फिरूं सुबह औ शाम

तर्जीय बन्द शाहजिन का कहिना वज़ीरज़ादी से

किस्पर आई हुई है यार तबियत तेरी । फ़ुर्ते ग़म से जो ये अब पहुंची है नौबत तेरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुःख होता है जिगर देख के रक़्क़त तेरी । हाय देखी नहीं जाती है मुसीबत तेरी ॥
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ये हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
नख़्ले उम्मेद तेरा आह न फूला न फला । चल गया बादे ख़िज़ाँ का अभी आकर झोंका ।
तू जो इस गुलशने हस्ती में न सरसब्ज़ रहा । क्या सबब इसका है तू हमसे बता दे तो ज़रा ।
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
किस न सब्ज़ुर में रहा करता है तू शामो सहर । सूरते माहकुमा जो पैदा है तेरे मुँह से असर ।
कुछ दिनों और रहा हाल तेरा यों ही अगर । ख़ाक हो जायेगा वल्लाह तू अब जल जल कर
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ॥
गर दिशे चर्ख़ से मारा तू पड़ा फिरता है । तेग़ अब्रू का ये घायल है जो दम भरता है
आहो नाले जो शबो रोज़ किया करता है । सच बता दे हमें तू किसपे तू अब मरता है
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
हज़्ज़ दुनिया से न कुछ हाय उठाया तूने । कुछ जवानी का मज़ा भी नहीं पाया तूने
किसी माशूक़ से क्या दिल है लगाया तूने । कैस की तरह जो हाल अपना बनाया तूने
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
दिल बहिलाता नहीं हर चन्द तू बहलाता है । तायरे रंग कदूरत से उड़ा आता है
आज क्या है जो तुझे कुछ भी नहीं भाता है । गुल ख़िज़ाँ दीदा से हर वक़्त तू मुरझाता है
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।
नाले आह से रहता है सरोकार तुझे । सच बता कौन सा अब हो गया आज़ार तुझे
ज़ीस्त से अपनी में अब पाता हूँ बेज़ार तुझे । सर पटकने के सिवा और नहीं कार तुझे ।
किसके ग़म में हुई ऐ शख़्स ए हालत तेरी । रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ।

जवाब देना वज़ीरज़ादे का शाह जिन्को

सदमे पर सदमे उठाती है नहूसत मेरी । मुझसे बरगश्ता है इन रोज़ों जो क़िस्मत मेरी
है बिला शक जो करी रंज से नौबत तेरी । छाती फटती है जो देखे है ए हालत मेरी
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जाबलब हूँ कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
हो गया ख़ुश्क गुलिस्ताने जवानी मेरी । बन गई आह मेरी मुझको ख़िज़ाँ काल का
हर बुने मू से मेरे एक शरर है पैदा + । सूरते सर्द चराग़ों हुआ आलम अपना ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
हर घड़ी चलता है ग़म दीदह बिगिरयां मस्ता । याद आ जाता है जिस वक़्त वह रूये अनवर
सामना रंज का रहिता है मुझे आठ पहर । ऐसे जीने से बस अब मौत है प्यारे बेहतर ।
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी ।
कोई इतना भी तो एहसान नहीं करता है । उस्से जा कहि दे कि वह ग़म में तेरे मरता है
ले ख़बर जल्द कहीं जाके वह दम भरता है । हालते नज़ में भी नाम तेरा भरता है ।
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
सारा दुनिया का मज़ा दिल्से उठाया मैंने । और ज्वानी को भी मिट्टी में मिलाया मैंने ।
लेकिन अब तक न किसी जा को मैं पाया मैंने । वास्ते जिस्के ये हाल अपना बनाया मैंने
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
इस तरह का जो मेरा हाल तू अब पाता है । है तअज्जुब कि तुझे रहिम नहीं आता है ।
ग़म को मैं खाता हूं और ग़म भि मुझे खाता है । नहीं तदबीर कोई तू मुझे बताता है ।
पूछता क्या है ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी
रुख़ दिखा जब से गया वह तो नेस्यार मुझे । चैन आता किसी करवट नहीं जिन्हार मुझे
हर घड़ी आहो फ़ुग़ां से है सरो कार मुझे । कोई नज़र आता नहीं अपना मददगार मुझे
पूछता क्या है तू ऐ शख़्स हक़ीक़त मेरी । जां बलब हूं कोई दम भर में है रुख़सत मेरी

बारह मासा शाहज़ादी का कहिना और वज़ीरज़ादी का कहिना ॥

शाहज़ादी

सावे अषाढ़ कीजिये अब दश्त में शिकार । शायद ख़ुदा मिला दे हमारा वह गुलइज़ार

वज़ीरज़ादी

सावन में हो रही है जो बरसात की बहार । भादों में छाई काली घटायें हैं बेशुमार

शाहज़ादी

रे सखी तो बहार न कर दिल्को बेक़रार । बरसात में मिला न सनम आ गया कुंआर

वज़ीरज़ादी

कातिक में आस ने किया दिल्को बेक़रार । चारों तरफ़ मैं ढूंढ फिरी अपना गुलइज़ार

शाहज़ादी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अगहन दिखा रहा है मुझे मेंह की बहार । और पूस ने किया मुझे इस तौर बेक़रार ।

वज़ीरज़ादी

अब सोस माघ में जो किया जोग का सिंगार । आख़िर बसन्त जल्द तुझे से विसाल यार ।

शाहज़ादी

फागुन में चारों सिम्त से सब खेलते हैं फाग । बजते हैं ढफ़ और झांझ में गाते हैं सब राग

वज़ीरज़ादी

साक़ी न दे शराब न कर दिल को बेक़रार । अच्छा नहीं है चैत तुम्हारे बिदून यार ।

शाहज़ादी

बैसाख की जो गरमी में उठती हूँ जाग २ । हरदम ख़याल आया यहां से दू भाग २

वज़ीरज़ादी

अब कीजिये न लाग लगी तेरी जब से लाग । होगा महीने जेठ में हासिल तुझे सुहाग ।

शाहज़ादी

जिन्के पिया हैं पास है उन्के बड़े ये भाग । ख़ालिक़ दिलादे कब मुझे देखूं मेरा सुहाग

वज़ीरज़ादी

साक़ी पिलादे जल्द शराबे विसाल यार । मत कर तू हिज्र में बस अब इस दिल को बेक़रार

हुक्म शाहजिन का देव से

हाज़िर है कोई देव याँ जल्दी से आये । हो दोनो जिस जगह उन्हें उठा कर लाये ।

अर्ज़ देव की शाहजिन्से

अब मैं तेरे हुक्म से जाता हूँ उस जा । लाता हूँ उन्के तईं जाकर अभी उठा ।

कलाम शाहजिन का शाहज़ादे से वक्त उस्के आने के

कौन परी और कौन देव लाया तुझे उठा । गुज़रा तुझ पर क्या सितम सब तू मुझे को सुना

जवाब देना शाहज़ादे का शाहजिन्से

सोता था कोठे ऊपर साथ थी माहे लक़ा । परी ज़मुर्रद जाय कर लाई मुझे उठा ।

शाहजिन का कहिना छन्द शहज़ादे से

ज़ोर हुआ हो ज़ार तेरी जान पर आया । ऐ हवाल सारा मुझ से तू ऐ यार कर बयाँ

होगी सज़ा बदबूतो तू दिल में न कर गुमान । क्योंकर मुझे है रहम तेरे हाल पर अयाँ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुज़रा तुम्हारी जान पर जो कुछ कि है सितम् । उसके ही सुन्ने से हुआ दिल्को हमारे ग़म् ।
तेरे ऊपर ये हाय मुसीबत थी क्या पड़ी । है देखने से जिस्के तबियत पै कोह ग़म् ।
उस्की सज़ा मैं देता हूं अब तेरे रोबरू । जिसने जुदा किया है ये तुझ से तेरा सनम् ।
तेरे एवज़ सितम् के मैं करता हूं उस्को क़त्ल । जाती है लहज़ में वह फ़ना हो सूये अदम् ।
मुरदार ने खलल किया तेरे विसाल मे । माशूक़ तेरा तुझ से छुटाये किया सितम् ।
है कोई देव लावे गिरफ़्तार कर उसे । जिस्ने किया है इस पै जो इस तौर का सितम् ।
भिज वाके देव जल्द बुला ओ मदारीलाल । होता है हाल जोर का उस्के न कुछ रक़म् ।

छन्द शहज़ादे का कहिना शाह जिन्से

गफ़लत में ख्वाब की मुझे लाई जो ये उठा । मेरे सनम् से इस्ने मुझे अब छुड़ा दिया ।
रक्खा था एक क़ैद मकां में मुझे छिपा । किस्मत ने मेरी आप को अब है दिया बता ।
जो कुछ कि उस्की क़ैद में मुझ पर हुआ सितम् । यह बाल उस्का मुझ से न होता है कुछ रक़म् ।
सूरत से मेरी हाल मुसीबत का है अयां । दिल पर हमारी यार जो गुज़रा किया सितम् ।
खालिक़ ने आप को है किया हाकिमे ज़मान । खिलक़त न वाज़ों मुंसिफ़ों तो कीये जाह हश्म ।
इन्साफ़ कीजिये मेरी फ़रयाद का बग़ौर । क्यों कर कि आप को न मिला वस्ल में सनम् ।
जो आपसा मिले मुझे सर्दार दिल नेवाज़ । शायद कि जल्दी से मिले मुझ से मेरा सनम् ।
वह देव और परी थी छिपी इक मकान में । जिस्ने किया है मुझ पै जो इस तौर का सितम् ।
फ़रयाद की ये दाद दिला ओ मदारीलाल । अजबस कि मेरे हाल पे अब कीजिये करम् ।

सवाल राजा इन्द्र का शाह जिन से

हाज़िर है कोई देव अब लावे उसे बुला । फिर वह मेरे हुक्म से आग में दे जला ।
मुझको हुई ये फ़िक्र जो कि उस्ने है खता । ऐ देव लाद उस्को कि दूं मैं उसे सज़ा ।
ए देखवक्या निकाला है मुरदार ने चलन । बेचारे शाहज़ादे को लाई ए घर उठा ।
देखो दिखाता हूं मैं मज़ा उस्को प्यार का । हम से किया जो इस्ने है ये आशना छिपा ।
आशिक़ को उस गैर के लाकर किया असीर । खट का हमारे दिल्में न इस्ने ज़रा किया ।
आया न खौफ़ इस्को हमारे जलाल का । रक्खा चुराके इस्ने पराया ए दिल रुबा ।
मालूम तुम से हाल मेरा होगया तमाम । कर वादूं अब मैं तेग़ से इस दम इसे फ़ना ।
नातक़ बताओ हुक्म उसे ऐ मदारीलाल । की है गी नाबकार ने देखो तो क्या खता ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जवाब देव का राजा इन्दर शाह जिन् से ॥

हाज़िर हूँ जो हुक्म हो लाऊं उसे बजा । जाकर मैं उस्को अभी लाऊं सोये हुवा
जाता हूँ मैं मिस्ल आबो चूँ सरसरे हवा । लाता हूँ उस्को जिस्का येहै ज़ोर वो जफ़ा
मैंने कहा था उस्से न कर इस्को तू पियार । ना जिन्स आदमी है न इस्पर हो तू फ़िदा
समझाया इस्को मैंने न दे दिल्को हाथ से । हरगिज़ रहेगा इश्क़ न तेरा ये अब छिपा
बे खौफ़ हो गई है ये पाकर के खूबरू । आखिर को अपने हक़ में ये इस्ने बुरा किया
मेरे कहे पै इस्ने न मुतलक़ किया ख़याल । ले आई अपने घर में ये सोता उसे उठा ।
हाज़िर मैं लाया इस्को अभी रोबरू हुज़ूर । मालिक हुज़ूर हैं गे जो चाहो सो हो उठा ।
हाज़िर किया मैं लाके उसे दू मदारी लाल । इन्साफ़ जैसा हो वह अभी दीजिये सज़ा ।

दोहरा कहिना राजा इन्दर का परी से

लाई इस्को क्यों उठा सुन तो ऐ मुदार । गई हमारे खौफ़ को दिल्से भूल एक बार

जवाब देना परी का राजा इन्दर को

तुम जो चाहो सो करो मालिक हो सुरक़ार । लेकिन हूँ सौ जान से उस्की आशिक़ ज़ार

सवाल राजा इन्दर का

हमसे छिप छिप के तू करती है एक यार नया । ये चलन् निकाला है अब तेरा ऐ मुरदार नया
या तहे तेग़ करूं या तुझे गर्दन मारूं । या दिखाऊं तुझे मैं और कोई आज़ार नया
कहाँ इंसाँ भला क़ौम परीज़ाद कहाँ । तूने किस्का ये निकाला है अरी प्यार नया
प्यार करने का मज़ा तुझको मिलेगा उस वक़्त । होगा गर्दन पै ये जब खंजर खूँ ख़्वार नया
क्या है आवारगी ये दिल्में समाई तेरे । ढूंढती फिरती है दिनरात जो दिल्दार नया
हाथ उठा इस्से नहीं अपना तरीक़ा है यही । क़त्ल करते हैं जो हो ऐसा खता वार नया

जवाब परी का

घर में आया जो मेरे ये गुल गुलज़ार नया । दुश्मनों की वही आंखों में चुभा खार नया
पास से मेरे न अलबत्तां इसे कीजिये जुदा । और सितम् चाहिये सो कीजिये हर बार नया
शक्ल इन्सानो परीज़ाद पै क्या है मौक़ूफ़ । किस्को भाता नहीं माशूक़ तरहदार नया
आशक़ी का यही आशिक़ को मज़ा है शेज़िन । आज फूले मेरे हर ज़ख़्म से गुलज़ार नया
जानो दिल बेचे हुये फिरती हूँ उस गुलरू पर । ऐसा होता नहीं दुनियां में ख़रीदार नया
मुद्दतों जिस्के लिये रातों को आवार फिरी । हाथ आया है एसब तू मेरे दिल्दार नया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोहरा कहिना राजाइन्दर का देव से

मानेगी हरगिज़ नहीं अबतो ये गुलज़ार । लेजा इसको आग में डाल दे तू एक बार

कहिना देव का मुख़ातिब होकर परी से

जबसे ईज़ा है इसने दी तूने दिन रात । ऐसी पर अब आग में दूं तुझको बदज़ात

ग़ज़ल राजा इन्दर की

कहिना हमारा इसने न अबतक ज़राकिया । ऐ देव इसको हमने अभी तेरे बला किया ।
आख़िर कि दह में डाल दो लेजा ओ खींच कर । दोज़ख़ कि आग से जो वह है पुरहवा किया
दिखला ओ जाके इसको मज़े ईश्क़ याक़ के । हर पर दह हमसे खूब नया आशना किया
देने में कुछ सज़ा के जो कि तूने रगुज़र । मैंने तुझे भी गोरि दे ज़ोरो जफ़ा किया ।
नामो निशान इसका ज़माने से दो मिटा । इस फ़ित्ना रोज़गार ने देखो तो क्या किया
संगे गरां पै जाके पटक दे इसे अभी । मुरदार बदचलन ने एग़ मज़ा नया किया ।
इस बदचलन से है यही खटका मदारी लाल । आज एक किया है जाने कल दूसरा किया

ग़ज़ल देव की

मैं भी तो मुद्दतों से हूं इसलिये जला किया । पंजे में अब ख़ुदा ने मेरे मुबतिला किया
चलती है साथ मेरे या गर्दन में डालूं हाथ । खाजाऊंगा मैं गर कहीं नख़रह ज़रा किया ।
आ मेरे साथ तू कोई दम और जान है । फिर क्या जो मैंने काम तेरा ख़ातमा किया ।
पंजे से मेरे छूट के जा सक्ती है कहां । बस मैंने इसको पीस के अब सुरमे सा किया
पीजाऊंगा लगा के मैं इस वक्त तेरा खून । फिर मुझसे चो चला जो किसी तौर का किया
खाजाऊं तेरा तोड़ के सर भेजा मग़ज़ का । गोया कि आज लुक़्मा शीरीं ग़िज़ा किया
सरपर अजल सवार है इसके मदारी लाल । कोई दम्में अब इसे तहे तेग़ फ़ना किया ।

ग़ज़ल परी की

अफ़ज़र तेरे लिये किस शर्ते वफ़ा किया । लेकिन जुदा न दिल से तुझे मेहरलक़ा किया
कुछ जलने मरने का नहीं खटका मुझको ग़म । गम है कि तुझको आंख से मेरी जुदा किया
आरज़ू थी कि मैं तेरी राह पर निसार । ख़ालिक ने आज फ़र्ज़ से तेरी अदा किया
ऐसा भी कोई करता है आशिक़ का अपने हाल । तुमने हमारा हाल जो ये दिखवा किया
चारों तरफ़ अदू है लिये तेग़ कीबकफ़ । तुझबे गुनह पे देखो ये बलवा है क्या किया

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुनियां में क्या हमीने नहीं की है आशिक़ी । किस्ने न इन्द्र तो पै दिल अपना फ़िदा किया
इस्को भी अपने हाथ से खोया मदारी लाल । जलना गवारा जिस्के लिये मैं सदा किया

ग़ज़ल शाहज़ादे की

लाकर जो तूने क़ैद मुझे बेखता किया । बस मेरे सब्र ने यही बदला अदा किया ।
मैं तुझ से कहिता था मेरे दरपै न हूजना हो । आख़िर न अपने हक़ में ये तूने भला किया
आख़िर को मेरे वास्ते दी तूने अपनी जान । परवाने मिल्के शमा से कब तक जिया किया
शामत ने तेरी तुझ को दिखलाया ये रोज़े बद । अब तू कहां से लाके मेरा मुबतिला किया
क्यों होता हाल ये जो न करती तू मुझको प्यार । मैंने तो मना तुझको परी बारहा किया ।
मारा है जिस्ने भूलके इस राह में क़दम । आंखों से उस्के खून का दरिया बहा किया
क्या २ कहूं मैं शुक्र ख़ुदा का मदारी लाल । एक बद बला के हाथ से मुझ को रिहा किया

दोहरा कहिना राजा इन्दर का वज़ीर ज़ादी से ॥ ॥

जोगी जी ये हाज़िर है हाज़िर इस्को लो । और जो लायक़ काम हो सो मेरे से कहो

जवाब देना वज़ीर ज़ादी का राजा इन्दर को

और नहीं कोई काम है बड़ा किया ये काम । मुद्दत तक अब आपका रहे जहां में नाम

दोहरा वज़ीर ज़ादी का शहज़ादी से

ले हाज़िर है हिज्र का ये तेरा बीमार । गले लगाओ खूब सा करलो इस्को प्यार

दोहरा कहिना शहज़ादी का शहज़ादे से

आओ प्यारे ये कहो गले मेरे लग जाउ । मुद्दत से बीमार हूं शरबत वस्ल पिलाउ

जवाब देना शहज़ादे का शहज़ादी को

मेरी भी दिन रात थी आफ़त में पड़ी जान । जिस्पर भी तो था मुझे जानी तेरा ध्यान ।

छन्द कहिना शहज़ादी का शहज़ादे से

प्यारे तुम्हारे हिज्र में अपना हुआ ये हाल । तुमको हमारे तरफ़ से कुछ था ज़रा ख़याल
किसतरह से हुआ था तेरे बिन मुझे मलाल । पर अब ख़ुदा ने है दिया ये शरबते विसाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जवाब देना शाहज़ादी का शाहज़ादे से

फ़ुरक़त तुम्हारी से मुझे हासिल हुआ मलाल। अल्लाह ने मिलाया मगर शर्बते विसाल
रक्खो न दिल्में रंजो मुसीबत का कुछ ख़याल। होवेगा दूर वस्ल में सारा ये अब मलाल

ग़ज़ल शाहज़ादह

आँख हमसे न अगर तुम्से लड़ाई होती। तो मुसीबत न ये बल्ला उठाई होती ॥
हिज्र में तेरे मैं तड़पा किया बिस्मिल कि तरह। तेग़ अबरू की दिखाई तो सफ़ाई होती
जाने जाँ तुम को जो इस बात का कुछ होता ख़याल। तो मेरे वास्ते काहे को जुदाई होती
ख़ुशनुमा तेरी कलाई का जो आता है ख़याल। दिले बेचैन को यक दम न कल आई होती
क़ज़ा अफ़सोस न रहते जो तुम्हें ग़ैर ने गुल। अभी तक अपनी सब उम्मेद बर आई होती
कुछ ख़ता आपकी हरगिज़ नहीं तक़दीर अपनी। वर्ना ये हाल भी कुछ दिल में समाई होती
सख़्तियाँ क़ैद की काहे को उठाता मैं ग़रीब। तुझ सिवा उस पे तबियत जो ये आई होती

ग़ज़ल शाहज़ादी

तुमने सूरत जो किसी रोज़ दिखाई होती। दिले मुज़्तर पे न यों ग़म कि चढ़ाई होती
ख़ूब रोऊं गले लग कर यही थी दिल्की हवस। लेके तुम तक जो भला अपनी रसाई होती
हाल पर मेरे जो कुछ रहम तू करता ज़ालिम। तो मैं इस तरह से क्यों ग़म की सताई होती
बर्क़ की तरह से आंखों में चमक जाती है। याद जिस दम तेरी नाज़ुक ये कलाई होती
तुम करो चैन परी साथ रहूं मैं बेचैन। दिल से लाचार हूं वर्ना ये सफ़ाई होती ।
तेरा हरजाई पना पहिले जो होता साबित। तूने फ़िरक़त मेरे दिल्को न ख़ुश आई होती
शमा सौं काहे को जलती मैं न सच्चा मैंने। गर मुहब्बत न तेरे दिल में समाई होती ।

ज़बानी शाहज़ादह

तेरे ग़म फ़िराक़ का अफ़साने था रहा। हर लहज़ा हर घड़ी में असीरे बला रहा

ग़ज़ल शाहज़ादा

शुक्र सद शुक्र किया आज नज़ारा तुझको। कब ये उम्मेद थी देखूं गा दुबारा तुझको
मरदुम आसा तेरी तस्वीर थी आंखों से खिंची। ख़्वाब ने ये चश्म में भी मैंने उतारा तुझको
हिज्र में था मेरी सूरत आँखों में तारीक जहाँ। जानता दिल से जो था आँख का तारा तुझको
जान भी आवे अगर काम तो हुये क्या उज़्र। जान से कुछ ज्यादा समझता हूं मैं प्यारा तुझको
एक पल भी तेरी फ़ुरक़त में न पाया आराम। बारहा ख़्वाब से चौंका तो पुकारा तुझको

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मैंने कहा २ वह तेरे पीछे उठाई आफ़त । बेवफ़ा पर न हुआ रंज हमारा तुझ को
हम बिछाते हैं तेरी राह में हरदम आँखें । पर रहा हम से सदा आह किनारा तुझ को

ग़ज़ल शहज़ादी

थी जुदाई न तेरी जान गवारा मुझ को । पर करूं क्या तेरा तक़दीर से चारा मुझको
तासे फ़ीलख रही आँखों को हसरत बाक़ी । कभी फिर आके दिखा जाओ नज़ारा मुझको
बिन तेरे चाँदनी आँखों में नथी धूप से कम । मह अनवर नज़र आता था शरारा मुझ को
कहीं दो चार भी दिन और न आते जो सनम । बिन दिये जां के होता न गुज़ारा मुझ को
हिज्र में तेरे न एक पल भी मुझे नींद आई । याद था जो तेरे पहिलू का सहारा मुझ को
चैन आता था न दिल्को न तबियत को क़रार । वह तसव्वर में बंधा है जान तुम्हारा मुझको
सीधी बातों से हुये जाते हो टेढ़े नाहक़ । कज़ अदाई ने तेरी जान से मारा मुझ को ।

खम्से कहिना शहज़ादी का

तुझसे और उस से था जो रोज़ बहम प्यार रहे । जाने जो जान से उस गुल को ख़रीदार रहे
नहीं चाहत नहीं ख़ूबी को तलबगार रहे । तुम परी साथ मेरे वस्ल से सरशार रहे ।
हम यहां हिज्र में दिन रात गिरफ़्तार रहे

क्या कहें हम जो मुसीबत में गिरफ़्तार रहे । वस्ल के तेरे दिलो जान से ख़रीदार रहे
हर घड़ी तेरे तसव्वर ही में दिल्दार रहे । किस तरह रंजो मुसीबत के गिरफ़्तार रहे
हर घड़ी हिज्र में तेरे ही तो बीमार रहे

उसको चाहत तेरी और तुझको रही उसकी चाह । कुछ दिनों ख़ूब किया जान ने हम अक़्ल का निबाह
हम बग़ल और हम आग़ोश रहे क्या वल्लाह । वस्ल में ख़ूब मज़े लूटे परी के हमराह ॥
हमसे कहिते हो कि तुम बिन हमें आज़ार रहे

अपने जामे तमन्ना में पिया शरबते वस्ल । उसने सो नाज़ से तुम को जो दिया रस भरे वस्ल
सोके आग़ोश में मंज़ूर किया शरबते वस्ल । ख़ूब जी खोल के तुम ने तो पिया शरबते वस्ल
तुमसे क्या काम कोई हिज्र में बीमार रहे

अपनी चाहत को वह करती रही तुमसे इन्कार । हम तसव्वुर को वयों करती है लैलो निहार
चाहने का भी मज़ा है यही अब ऐ दिल्दार । तुम मरो उसपे परी तुमपे करे जान निसार
सब तरह से तो हमीं पीछे तेरे ख़्वार रहे

फेर ली देख के गुल दूसरा तुमने जो निगाह । मुझको मालूम हुआ रखते हो तुम रक़ीसी वाह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहिले से चित न हुआ आह कि तुम्हें बदराह । भूल कर भी न जो तुम्से लगाये वल्लाह
जान्ते हम कि दुनियां में यही
प्यार रहे

जवाब शाहज़ादे का

ख़िदमतों के लिये मामूल तरहदार रहे । नये खाने नये जोड़े नये हथियार रहे ।
फ़र्श फूलों का शबे माह में तय्यार रहे । सब तरह के वहाँ सामान नमूदार रहे
पर तेरे बिन मेरी नज़रों में वह सब ख़ार रहे
हम दिलो जान से तेरे ही ख़रीदार रहे । नशे इश्क़ से तेरे ही तो सरशार रहे ।
किस तरह दाम मुसीबत में गिरफ़्तार रहे । हर घड़ी याद में तेरे ही तो दिल्दार रहे ।
तेरे ही वस्ल की हर रोज़ तलबगार रहे
खा के कहिता हूं तेरे मुखड़े की रहानी की क़सम । और है मुझको इसी साबित बानी की क़सम
झूठ कहिता नहीं तुम यूसफ़े सानी की क़सम । प्यारी वल्लाह मुझे अपनी जवानी की क़सम
उस तरफ़ देखा हो तो तेरे गुनहगार रहे
मुझको वल्लाह हमेशा रही नफ़रत उस्से । वह थी क्या माल जो होती मुझे रग़बत उस्से
क्यों लगी होने मेरे दिल को मुहब्बत उस्से । जब कि बरगश्ता रही अपनी तबियत उस्से
रूबरू हूर भी आजाये तो इन्कार रहे
साफ़ तबियत से जो ये बातें ज़बां पर आये । आपही शिकवे के दफ़्तर मेरे आगे लाये
यही दुनिया का तरीक़ा है यही है आई । है तअज्जुब कि तेरे सामने क़समें खाईं ।
उस्से भी शुभा तेरा तुझको ऐ दिल्दार रहे
इश्क़ गुलरू में सदा दीदये हसरत धोता । तेरी फ़ुरक़त में ये था हाल हमारा होता ।
शाम से ताब सहर बैठ के हम को रोता । याद कर कर के तेरे साथ लपट कर सोता
इसी हसरत में तो हम रात को बेदार रहे

मुख़म्मस कहिना
शाहज़ादी का

आह मैं जब से तेरी तालिबे दीदार रही । तब से मैं लाख बलाओं में गिरफ़्तार रही
रंजो तकलीफ़ो मुसीबत की सज़ावार रही । ज़िन्दगी अपनी भी तो ताबमुझे दुश्वार रही
मैं न समझी थी मज़ा इश्क़ ये दिखलावेगा । जान पर मेरे ये कंबख़्त बला लावेगा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हाल दिल किससे कहूँ जाके मैं अपना नाचार। कर दिया मुझको तो इस इश्क़ ने है २ बरबाद
करूँ इस ग़म से कहाँ तक न मैं ख़िरा फ़स्याद। इस सितम गर ने किये मुझपे हज़ारों बेदाद
बे अजल आन्के इस इश्क़ ने मारा है २ । ख़ून नाहक़ किया काफ़िर ने हमारा है है
इस जफ़ा कार ने मुझको दिये लाखों आज़ार। इसके अन्दोह व ग़मों रंज से बेहद्दो शुमार
इसके हाथों से मिला हाथ न इक जा पे क़रार। कभी सहरा को गई और कभी सूये कुहिसार
इसने इस तरह की आफ़त में है डाला मुझको। पड़ी ज़हमत में हूँ अब तक न निकाला मुझको
ये न समझी थी करेगी ये जफ़ा आफ़ते इश्क़। जान पर लायेगी मेरी ये बला आफ़ते इश्क़
रंजो ग़म बेगाने से कर देगी जुदा आफ़ते इश्क़। सैंकड़ों आफ़तों से ये है सिवा आफ़ते इश्क़
वस्ल से उसने न इक रोज़ कभी शाद किया। और किया भी तो मुझे जान से बरबाद किया
आह इस मूज़ी से बेतरह पड़ा है पाला। है २ इसने मुझे हर एक बला में डाला।
मैंने कुछ आह इस आफ़त में न देखा भाला। अब तो है जान का अल्लाह मेरे रखवाला
करूँ अब इसकी शिकायत मैं कहाँ तक अरक़ा। है हर एक किस्से से ये तूल हिकायत अख़फ़ा

जवाब देना शाहज़ादे का

मर्ज़े इश्क़ का सच है कोई बीमार न हो। और आज़ार हो पर आह ये आज़ार न हो
कोई आशिक़ किसी माशूक़ का ज़िन्हार न हो। ता मुक़दूर कोई मायले दिल्दार न हो।
ये बला इश्क़ वह है जिससे हर एक बेहतर है। इससे करता रहे परहेज़ बशर बेहतर है २ ।
जान से कर दिया मजनूँ को इसी ने बरबाद। और इसने किया बद्ला है ख़ूने फ़रहाद
वस्ल से रक्खा है दामन को इसी ने नाशाद। ये वह ज़ालिम है कि है ज़ुल्म कि जिस्से बुनियाद
चैन इसमें कहाँ इन्सां को आराम कहाँ। याँ सिवा रंज के राहत का सरंजाम कहाँ
अहले क़ज़ा है इससे बशर माँगे ये वह है आज़ार। मर गये आज तक इस मर्ज़ के लाखों बीमार
और रुसवाई है इसमें हुई बेहद्दो शुमार। फिर के आये न कभी जो गये सूये कोहिसार
उनको क्या जाने कहाँ जाके डुबोया इसने। फिर पता तक न लगा ऐसा है खोया इसने
सच तो यों है कि बलाख़ेज़ वह आफ़त है इश्क़। जान के लेने को हर तरह क़यामत है ये इश्क़
बाइसे सख़्ती व निशाना व मलामत है ये इश्क़। व ख़ुदा इस मर्ज़े दिल की अलामत है ये इश्क़
राह उल्फ़त में जो देखा तो यही रहज़न है। दोस्त ज़िन्हार किसी का नहीं ये दुश्मन है।
इस सितमगार से अल्लाह न डाले पाला। इसने लाखों के तईं आह बला में डाला।
नहीं जाता है ये कमबख़्त किसी से टाला। इस बला का करे अल्लाह कहीं मुँह काला

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुमसे अख्तर दहूं क्या आके मैं दगाबाजी की। इस दगाबाज़ी ने लाखों से दगाबाज़ी की

होली गाना सिन्ध मुल्तानी में

खेल रही मैं होली सखैं मैं ॥ ✣ ॥ नन्दलाला बनवारी रे ॥ ✣ ॥
काहू की सारी रंग में भिजोई ॥ ✣ ॥ काहू को देत हैं गारी रे ॥ ✣ ॥

खेल रही मैं

छीन लई मोरी चूनर सरसों । ✣ । और सारी पिचकारी रे ॥ ✣ ॥
जो भाजत है लाज की मारी ✣ । सब मिल देत हैं तारी रे ॥ ✣ ॥

खेल रही मैं

मान गुमान राखने हारी ✣ । हम हैं तुम्हरे भिखारी रे ॥ ✣ ॥
अख्तर को मोहि आन मिलाओ । मैं तोरे बलिहारी रे ॥ ✣ ॥

खेल रही मैं

होली बीच धुन धनाश्री के

मोहि देत दरस नहिं एक बार ✣ । मेरो मन नहिं मानत करत रार ✣ ।

मोहि देत दरस नहिं एक बार

औरन के संग रंग उड़ावत ✣ । फाग खेलत हो बार २ । ✣ ।
हमतो जरत बरत होरी से ✣ । बिरहा की है मार २ । ✣ ।

मोहि देत दरस नहिं एक बार

कोऊ गुलाल मलत गालन में ✣ । कोऊ चलत गल बहियां डार । ✣ ।
हम पर सब रूप रंग बरसत है ✣ । पिचकारिन की भरी फुहार । ✣ ।

मोहि देत दरस नहिं एक बार

इस मदारी साहब की बलिहारी ✣ । सुन लिये सब की पुकार ✣
अख्तर को कोऊ आन मिलाओ ✣ । तन मन धन सब डारूं बार ✣

मोहि देत दरस नहिं एक बार

इन्दर सभा समाप्तम्

सम्बत् १९३७

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दूसरी पुस्तक रामायण माला	देवी भागवत नागरी	जनक पच्चीसी
तीसरी रामायण गीताष्टक	कल्प सूत्र भाषा	शृंगार प्रकाश
चौथी ज्ञान दोहावली	राम ब्याहोत्सव	दोहावली रत्नावली
पांचवीं रस सारिणी	बिहारी सतसई सटीक	स्त्री दर्पण
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	समर विहार बिन्द्रावन
सातवीं पुस्तक मालदस्तकृत	रामलगन	रमल सार
सत्य नारायण की कथा सटीक	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कथा चित्रगुप्त
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी सन्ध्या	कायस्थ दर्पण
रामकलेवा	याज्ञवल्क्य भाषाटीका स०	कृष्ण बाल लीला
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	गीत गोविन्द सटीक
कविकुल कल्पतरु भाषा	आनन्दाम्बु वर्षिणी	रामाभिषेक नाटक
प्रेमरत्न	निर्णयसिन्धु	सिंहासन बत्तीसी
बनयात्रा	ज्ञानमाला	शुक बहत्तरी
भजनावली	दैवज्ञाभरण	अपूर्व कथा अर्त्थात् गु-
बारह मासा फ़क़ीर अल्लाबख़्श	ज्ञान चालीसी	लबकावली
बारहमासा बलदेवप्रसादकृ०	ठाकुर दिग्विजय भाषा	गुलसनोबर नागरी
कृष्णसागर	योग वाशिष्ठ देवनागरी में	चित्रचन्द्रिका
मनोरञ्जन	मार्कण्डेयपुराण	छन्दोर्णव पिङ्गल
हारीत स्मृति नागरी	बैताल पच्चीसी	अवतार कथामृत
भगवद्गीता सटीक नागरी	दानलीला नागलीला	हिदायत नामा मालगुज़ारी
रामायण राम बिलास	सभा बिलास	हिदायत नामा बन्दोबस्त
यमुना लहरी	विक्रम बिलास	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
षट्पञ्चाशिका	इन्द्रजाल नागरी	बाला बोध
विनयपत्रिका सटीक	कायस्थ कुल भास्कर	गरुड़ पुराण प्रेत कल्प
किताब पटवारी ४ भाग	क़िस्सह गोपी चन्द भरतरी	सांख्य तत्त्व कौमुदी
रसराज	बहार बिन्द्रावन	मनोहर कहानी
कृष्णप्रिया	पद्मावती खण्ड आल्हखंड	
भगवद्गीता विष्णुसहस्रनाम	लावनी बशीर बनारसी	**क़ानून**
प्रसहित	युगल बिलास	
ज्ञानस्वरोदय	भाषा महाभारत विजय	ताज़ीरात हिन्द अर्त्थात्
भरतरी गीत	मुक्तावली	ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई०	विद्याङ्कुर	किष्किन्धाकाण्ड
ज़ाबिते फ़ौजदारी	बालबोध	सुन्दरकाण्ड
मजमूआ ऐक्ट लगान अव-	भाषा [illegible]दय	लङ्काकाण्ड
ध जिसके साथ नीचे लिखे	इंगलिस्तान का इतिहास	उत्तरकाण्ड
हुये ऐक्ट सयुक्त हैं॥	गणित लता १ भाग	अक्षरारम्भ
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई० जरीद	तथा २	भाषातत्त्व दीपिका
ऐक्ट १९ सन् १८६३ ई०	तथा ३	बालाभूषण
ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०	गणित प्रकाश १ भाग	हिदायत नामा मुदर्रिसान्
ऐक्ट १६ सन् १८६२ ई०	तथा २	हल्कह बन्दी
ऐक्ट नं० [illegible] सन् १८६६ ई०	तथा ३	शिक्षावली
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा ४	भोज प्रबन्ध सार
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	शिशुबोध	राजनीति
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	पशुचिकित्सा	स्त्रियों की हित पत्रिका
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग	अवध भूगोल
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा २	कवित्त रत्नाकर
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	रेखागणित १ भाग	भूगोल वर्णन
ऐक्ट ३६ सन् १८६७ ई०	तथा २	बीजगणित १ भाग
ऐक्ट नं० २९ सन् १८६० ई०	सूरजपुर की कहानी	तथा २
क़वायद रेलवे और उसके	विद्याचक्र	कैथी वर्णमाला
साथ क़ानून भी हैं॥	भूगोलतत्त्व	महाभारत भाषा छन्दप्रबन्ध
ऐक्ट १९ सन् १८७३ ईसवी	पदार्थविद्यासार	में जो श्री मन्महाराजाधिराज
अर्थात् क़ानून लगान मु-	वर्णप्रकाशिका १ भाग	उदितनारायणसिंहजी काशी
मालिक मग़रबी व शिमाली	मङ्गलकोष	नरेश ने गोकुलनाथादि कवी-
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	पत्रदीपिका	श्वरों से रचना कराय कलकत्ते
ऐक्ट २० सन् १८७२ ई०	भारत खण्डिका	में छपवाया था वही श्रीयुत
सरिश्ते तालीम की पुस्तकें	क्षेत्रप्रकाश	माधवसिंह गढ़ अमेठी नरेश
भाषा लघु व्याकरण १ भाग	पत्रहितैषिणी	की सहायता और अनुराग
तथा २	रामायण सातों काण्ड	से इस यन्त्रालय में अत्युत्तम
धात्वर्णव	बालकाण्ड	टैप के पुष्ट अक्षरों में १९ पर्व
अक्षरावली	अयोध्याकाण्ड	बड़ी शुद्धता से छपा है॥
अक्षरदीपिका	आरण्यकाण्ड	

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri